Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वदेव-हवनपद्धति

सभी देवी–देवताओं की पूजा सहित हवन करने की वैदिक व सनातन सरल पद्धति

श्रीदुर्गा सप्तशती की सम्पूर्ण हवन पद्धति व पूजा–विधि सहित

विष्णु के. आचार्य डी.लिट्.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। क्लीं ।।

विष्णु-विमल पब्लिकेशन्स-ग्रन्थमाला 008

सर्वदेव-हवनपद्धति

[सभी देवी-देवताओं की पूजा सहित हवन करने की
वैदिक व सनातन सरल पद्धति]

ीदुर्गा सप्तशती की सम्पूर्ण हवन पद्धति व पूजा-विधि सहित)

महर्षि गर्गाचार्य विधि सम्मत-गार्गीय हवन पद्धति]

प्रस्तुतीकरण :
विष्णु के० आचार्य, डी०लिट्०
'गुरुदेवश्री'
वृन्दावन

प्रकाशक :
विष्णु-विमल पब्लिकेशन्स
मा मार्ग, आनंद वाटिका मोड़ पर, रमणरेती, वृन्दावन (मथुरा)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक - विष्णु-विमल पब्लिकेशन्स
(भारतीय धर्म, संस्कृति, दर्शन और सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के प्रकाशक एवं वितरक)
19/354 ए, गांधी नगर, अलीगढ़।

सर्वाधिकार - प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण - सन् 2015 (संवत् 2072)

शाखा - विष्णु-विमल पब्लिकेशन्स
रमणरेती, परिक्रमा मार्ग
(आनंद वाटिका मोड़ पर), वृन्दावन
(मथुरा)
(सभी प्रकार का पत्र व्यवहार इसी पते पर करें)

फोन - 09412509825, 09457108997, 09458512100

ई-मेल - harshitsharmastar@rediffmail.com

ISBN - 978-81-924507-4-2

₹220 - ईश्वर बुक हाउस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

इस ग्रंथ में वैदिक-सनातन दोनों ही पद्धतियों पर सभी देवी-देवताओं के हवनों (यज्ञों) का शास्त्रीय कर्मकाण्ड प्रस्तुत है। यज्ञकर्म प्रणाली कर्मकाण्ड पर आधारित मानी गयी है; इसलिए यहाँ शुद्धता के साथ-साथ कर्मकाण्ड की सरलता भी निर्देशित कर दी गयी है। इस ग्रंथ का प्रथम अध्याय-क्रम यज्ञकर्म के क्रियायोग (कर्मकाण्ड विधान) को स्पष्ट करता है।

इसका प्रथम अध्याय 'यज्ञकर्म में पूजाविधान व शुद्धीकरण' नाम से है। द्वितीय अध्याय में वैदिक परंपरा के अनुसार 'यज्ञवेदी निर्माण और हवन हेतु होने वाले प्रारम्भिक कर्मों' का विवेचन है। फिर अन्यान्य अध्यायों में पहले देवताओं की तथा बाद में विविध देवियों की हवन-पद्धतियाँ हैं। यथा- गौरी-गणेश, देवराज इन्द्र, नवग्रह, सर्वतोभद्र, (ब्रह्मापीठ), भगवान् श्रीविष्णु, भगवान् शिव, श्री लक्ष्मी, षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका, चतुषष्ठियोगिनी, स्थलमातृकादि के हवन विधानों का शास्त्रीय विवेचन है।

भगवान् शिव का हवन रुद्राष्टाध्यायी पर आधारित है। सम्पूर्ण रुद्रयाग है।

इस ग्रंथ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें श्री दुर्गादेवी के सम्पूर्ण हवन को श्रीदुर्गासप्तशती के तेरह अध्यायों के आधार पर दिया गया है। इसकी हवन प्रक्रिया में श्लोकों (मंत्रों) के नीचे विशिष्ट-विशिष्ट आहुति द्रव्यों को भी लिख दिया गया है; ताकि पंडितजनों को अलग से यह जानने की आवश्यकता न पड़े कि देवी माँ के लिए किस श्लोक या मंत्र पर किस वस्तु (पदार्थ) की आहुति लगेगी। यह आहुति-विधान 'श्रीदुर्गोपनिषद्कल्पद्रुम' सम्मत है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह हवन पद्धति भगवान् श्रीकृष्ण के गुरु परम ज्योतिर्विद् गर्गाचार्य द्वारा विधि-विधान-सम्मत है। अतः इसका विशेष महत्त्व है। इस गर्ग संहिता सम्मत हवन पद्धति का विशेष रूप से उद्धार किया गया है। अतः यह गार्गीय हवन-पद्धति है।

इस प्रकार यह 'सर्वदेव हवन पद्धति नामक ग्रंथ-रचना एकादश अध्यायों में विभक्त करके लिखी गयी है। अंतिम एकादशवें अध्याय में हवनोपरान्त किये जाने वाले यज्ञकर्मों का विवेचन है। आशा है कि यह पुस्तक विद्वान् आचार्यों और पंडितजनों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

यह सरल हवन पद्धति की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है।

भवदीय

प्रकाशक

डा० विमलेश शर्मा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

अध्याय एवं विषय	पृष्ठ-क्रम
प्रथम-अध्याय	**१३-२०**
यज्ञकर्म में पूजाविधान व शुद्धीकरण	१३
१. यज्ञ मण्डप में प्रवेश	१३
२. अक्षतादि-विकरण	१३
३. आसन-स्थापना-शोधन	१३
४. वास्तु-पूजा	१४
५. कर्मपात्र स्थापना	१४
६. देहादि का शुद्धीकरण	१६
(१) आचमन	१६
(२) यजमानादि का शुद्धीकरण	१७
(३) पवित्री-धारण	१७
(४) शिखाबंधन	१७
(५) यज्ञोपवीतधारण	१७
(६) यजमान तिलकधारण	१८
(७) यजमान कलाबा बंधन	१८
(८) आचार्यवरण (तिलकादि कर्म)	१८
(९) आचार्य कलावा बंधन	१८
(१०) सूर्यार्घ्य	१८
(११) गायत्री जप (सूक्ष्म)	१९
७. दीपस्थापना	१९
८. संकल्प	२०
द्वितीय-अध्याय	**२१-२८**
हवन हेतु प्रारम्भिक कर्म	२१
१. यज्ञवेदी चित्र	२१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय एवं विषय	पृष्ठ-क्रम
२. यज्ञ हेतु भूमि-पूजन	२२
३. यज्ञवेदी-निर्माण	२२
४. पञ्चभू संस्कार	२२
५. ब्रह्मादि स्थान चयन, संक्षिप्त कुश कण्डिका, यज्ञपात्रस्थापना, यज्ञपदार्थ पवित्रीकरण-विधान	२३
६. यज्ञकुण्ड-मेखलापूजन	२६
७. यज्ञाङ्ग पूजन	२६
(१) योनि-पूजन, (२) कण्ठपूजन (३) नाभि-पूजन	
८. विश्वकर्मा पूजन	२७
९. यज्ञकुण्ड में अग्निस्थापन	२७
१०. प्रारम्भिक आहुति विधान	२७
तृतीय-अध्याय	**२९-३६**
गौरी-गणेश स्थापनादि व हवन	२९
१. पीठ रचना-चित्र	२९
२. संकल्प	२९
३. गौरीगणेश-आवाहन-स्थापन	३०
४. प्राण-प्रतिष्ठा	३०
५. षोडशोपचार पूजा	३०
(आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, पंचामृत स्नान, शुद्धोदक स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र, यज्ञोपवीत, गंध, अक्षत्, पुष्पमाला, दूर्वाङ्कुर, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूलवीटक, फल, दक्षिणा, पुष्पांजलि, प्रदक्षिणा, विशेषार्घ्य, प्रार्थना)	
६. श्री गौरी-गणेश हवन मंत्र	३५
७. षड्विनायक हवन मंत्र	३६
८. इन्द्रदेव-स्थापन	३६
९. इन्द्रध्वज पूजन	३६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय एवं विषय	पृष्ठ-क्रम
चतुर्थ-अध्याय	**३७-५०**
नवग्रह स्थापनादि व हवन	३७
१. पीठ - रचनाचित्र	३७
२. संकल्प (पूर्ववत करें)	३७
३. नवग्रह स्थापनादि	३७
४. प्राण-प्रतिष्ठा	३९
५. समवेतपूजा मंत्र	४०
६. षोडशोपचार पूजा (आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, पंचामृत स्नान, शुद्धोदक स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र, यज्ञोपवीत, गंध, अक्षत्, पुष्पमाला, दूर्वाङ्कुर, धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, दक्षिणा, प्रदक्षिणादि, प्रार्थना)	४०
७. नवग्रहों हेतु समिधा	४०
८. नवग्रह हवन मंत्र	४०
९. नक्षत्र अनुष्ठान विधि	४२
(१) सूर्यग्रह-अनुष्ठान विधि	४२
(२) चंद्रग्रह-अनुष्ठान विधि	४३
(३) मंगलग्रह-अनुष्ठान विधि	४४
(४) बुधग्रह-अनुष्ठान विधि	४५
(5) गुरुग्रह-अनुष्ठान विधि	४६
(६) शुक्रग्रंह-अनुष्ठान विधि	४७
(७) शनिग्रह-अनुष्ठान विधि	४८
(८) राहुग्रह-अनुष्ठान विधि	४९
(९) केतुग्रह-अनुष्ठान विधि	५०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय एवं विषय पृष्ठ-क्रम

पञ्चम्-अध्याय **५१-६०**

सर्वतोभद्र स्थापनादि व हवन ५१

१. सर्वतोभद्र पीठ - रचना चित्र ५१

२. सर्वतोभद्रपीठ रचना विधि ५१

३. संकल्प ५२

४. आवाहन-स्थापनादि (नामानुक्रमेणविधि द्वारा) ५२

५. प्राण-प्रतिष्ठा ५६

६. पूजा का मूल मंत्र ५६

७. षोडशोपचार पूजा ५६

(आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, पंचामृत स्नान शुद्धोदक स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत्, पुष्प, पुष्पमाला, दूर्वाङ्कुर, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, फल, दक्षिणा, प्रदक्षिणादि, प्रार्थना)

८. सर्वतोभद्र-हवन मंत्र ६०

षष्ठ -अध्याय **६१-७५**

भगवान् विष्णु स्थापनादि व हवन ६१

१. पीठ रचना-चित्र ६१

२. संकल्प (पूर्ववत करें) ६१

३. भगवान् विष्णु की मूर्तिपूजाविधि ६१

४. मूर्ति में देव-आवाहन ६१

५. प्राणप्रतिष्ठा (प्राण सूक्त सहित) ६२

६. नेत्रोन्मीलन ६२

७. षोडशोपचार पूजा ६३

२. भगवान् विष्णु की पीठ-पूजाविधि ६५

१. श्रीविष्णु पीठ रचना-चित्र ६५

२. भगवान् विष्णु का योगपद्मपीठ ६५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय एवं विषय | पृष्ठ-क्रम

३. पीठस्थ श्रीविष्णु-परिवार और आवरण (आवाहन-स्थापन) ६५
४. प्राण-प्रतिष्ठा ६९
५. षोडशोपचार पूजा (मूल मंत्र द्वारा) ७०
(पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत्, पुष्पमाला, दूर्वांङ्कुर, नानापरिमल द्रव्य, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, जल ताम्बूल, द्रव्य-दक्षिणा, प्रदक्षिणादि)
६. प्रार्थना ७०
७. श्री विष्णुपीठ-परिवार हवन मंत्र ७१
८. वैदिक पुरुष सूक्त से श्री विष्णु-हवन ७२
९. श्री विष्णु अवतार-मंत्र हवन ७४
१०. श्री विष्णु हवन के श्रेष्ठ मंत्र द्वादशाक्षर या अष्टदशाक्षर ७४

सप्तम्-अध्याय ७५-८८

भगवान् शिव स्थापनादि एवं हवन ७५

१. भगवान् शिव विग्रह चित्र ७५
२. भगवान् शिव स्थापनादि ७५
३. रुद्राभिषेक (सूक्ष्म या विस्तृत) ७५
४. षोडशोपचार पूजा ७५
५. भगवान् शिव की वैदिक आरती ७७
६. क्षमा-प्रार्थना ७८
७. भगवान् शिव (रुद्र) हवन मंत्र
(रुद्राष्टाध्यायी द्वारा सम्पूर्णहवन) ७८
८. श्री रुद्र के सूक्ष्म हवन कर्म हेतु मंत्र ८७
(१) ॐ नमः शिवाय
(२) महामृत्युञ्जय मंत्र
९. लिङ्गतोभद्र स्थापना पूजन ८७
१०. लिङ्गतोभद्र हवन मंत्र ८८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय एवं विषय पृष्ठ-क्रम

अष्टम्-अध्याय ८९-१००

श्री महालक्ष्मी स्थापनादि व हवन ८९

१. श्री महालक्ष्मी पीठ-चित्र ८९

२. महालक्ष्मी स्थापनादि ८९

३. ध्यान ८९

४. षोडशोपचार पूजा (श्रीसूक्त द्वारा) ९०

(आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान पञ्चामृत स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र, आभूषण, विलेपन रक्तचन्दन, सिन्दूर, सुगन्धित द्रव्य, आक्षत्, पुष्प, पुष्पमाला, विल्वपत्र।)

४.१. श्री लक्ष्मी नामाङ्ग पूजा ९३

४.२. श्री लक्ष्मी-विग्रहे अष्टसिद्धि पूजा ९४

४.३. नवनिधि पूजन ९४

४.४. अष्टलक्ष्मी पूजा (श्रीलक्ष्मी विग्रहे अष्ट्दल कमले -पूर्वादि क्रमेण) ९४

(पुनः अवशिष्ट शोडशोपचार पूजा धूप, दीप, नैवेद्य, जल, फल, ताम्बूल, दक्षिणा, नीराजन, प्रदक्षिणा) ९५

५. प्रार्थना ९६

६. आरती ९७

७. क्षमाप्रार्थना ९८

८. श्रीमहालक्ष्मी हवन मंत्र (श्रीसूक्त) ९९

९. द्वादश महालक्ष्मी हवन मंत्र १००

१०. अष्टसिद्ध हवन मंत्र १००

११. नवनिधि हवन मंत्र १००

१२. अष्टलक्ष्मी हवन मंत्र १००

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय एवं विषय | पृष्ठ-क्रम

नवम्-अध्याय १०१-११५

षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका, चतुषष्टियोगिनी स्थापनादि व हवन १०१

१. षोडशमातृका पीठ-चित्र १०१

२. सप्तमृत मातृका पीठ-चित्र १०१

३. चतुषष्ठि योगिनी पीठ-चित्र १०२

४. षोडशमातृका स्थापनादि १०३

५. आवाहन-स्थापन १०३

६. प्राण-प्रतिष्ठा १०६

७. षोडशोपचार पूजा (श्रीसूक्त से) १०६

८. षोडशमातृका हवन मंत्र १०६

९. सप्तघृत मातृका स्थापनादि १०७

१०. आवाहन-स्थापन १०७

११. प्राण-प्रतिष्ठा १०८

१२. षोडशोपचारपूजा १०८

१३. सप्तघृत मातृका हवन-मंत्र १११

१४. चतुषष्ठि योगिनी-स्थापनादि १११

१५. प्राण-प्रतिष्ठा ११३

१६. षोडशोपचार-पूजा ११३

१७. चतुषष्ठि योगिनी हवन-मंत्र ११३

१८. स्थलमातृका स्थापनादि ११५

१९. प्राण-प्रतिष्ठा ११५

२०. षोडशोपचार-पूजा ११५

२१. स्थलमातृका हवन-मंत्र ११५

दशम्-अध्याय ११६-१९०

श्रीदुर्गासप्तशती-द्वारा श्रीदुर्गा की सम्पूर्ण हवन पद्धति ११६

१. श्रीदुर्गादेवी पीठ-चित्र ११६

२. श्रीदुर्गादेवी ध्यान ११६

३. श्रीदुर्गा देवी स्थापनादि ११७

४. प्राण-प्रतिष्ठा ११७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय एवं विषय | पृष्ठ-क्रम

५. षोडशोपचार-पूजा (विशिष्ट पूजा) ११७
(आवाहन, आसन-समर्पण, पाद्य, अर्घ्य, मधुपर्क, आचमन, स्नान, पुनराचमनीय, सुगन्धित तेल स्नान, दुग्ध स्नान, दधिस्नान, घृत स्नान, मधु स्नान, शर्करा स्नान, पंञ्चामृत स्नान, उदवर्तन-विलेपन, शुद्धोदक स्नान, युग्म वस्त्र, यज्ञोपवीत, गंध-अर्पण, अक्षत, सिंदूर, कज्जल, विल्वपत्र, पुष्पमाला, पुष्प, अङ्गपूजा, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल, ताम्बूल, दक्षिणाद्रव्य, मंत्रपुष्पांजलि, प्रदक्षिणा।)
६. आरती-कर्म (वैदिक) १२२
७. प्रदक्षिणा १२२
८. क्षमा-प्रार्थना १२४
९. श्रीदुर्गा सप्तशती हवन-मंत्र १२५
(श्री दुर्गोपनिषद् कल्पद्रुमसम्मत आहुति विधान)
[श्रीदुर्गासप्तशती के त्रयोदश अध्यायों द्वारा हवन]
१०. श्री दुर्गा की आरती १९०

एकादश-अध्याय **१९१-२००**

हवनोपरान्त अनिवार्य यज्ञ-कर्म-विधान १९१
१. दशदिक्पाल-बलिदानम् १९१
२. नवग्रह बलिदानम् १९१
३. क्षेत्रपाल बलिदानम् १९२
४. पूर्णाहुति १९४
५. वसोर्धाराहोम १९५
६. यज्ञदेवता प्रदक्षिणा १९६
७. त्र्यायुष्करणम् १९७
८. पूर्णपात्रदानम् १९७
९. बर्हिहोम १९७
१०. यजमानस्य अवभृतस्नान १९८
११. ब्राह्मणभोजन संकल्प १९९
१२. पीठदेवता विसर्जन कर्म १९९

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम-अध्याय

यज्ञ-कर्म में पूजाविधान व शुद्धीकरण

१-यज्ञमण्डप-प्रवेश -

(आचार्यगण यजमानों के साथ पूजागृह (यज्ञमण्डप) में प्रवेश करें)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं द्वाराधिष्ठित देवताभ्यो नमः। ॐ मं महोदराय नमः ॐ भं भैरवाय नमः। ॐ वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभः। गणेशाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञादातुं अर्हसि।।

(यज्ञ मण्डप के पूजाघर में प्रवेश करते समय आचार्य और यजमानगण पहले दायाँ चरण रखें)

२-अक्षतादिविकरण

यदत्र सस्थितं भूतं स्थानामाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।
ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषां अविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

(ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा। मंत्र से सभी दिशाओं में दिग्बंध लगाएँ)

(ऐसा कहकर पूजाघर में अक्षत् या पीली सरसों बिखेर दें)

३-आसन-स्थापन-शोधन

(आचार्य और यजमान दोनों के लिए आसन-स्थापना व शोधन)

विनियोग-पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलछंदः कूर्मोदेवता आसन पवीत्रीकरणे विनियोगः (विनियोग का जल विनियोगपात्र में छोड़ दें)

मंत्र - ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

(इस मंत्र से तीन बार आसनों पर जल छिड़कें और आचार्य व यजमान उन पर बैठें।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४-वास्तु पूजा

(इस पूजा को प्रथम पीठ (गणेशादिपीठ) के नीचे दाहिनी ओर पृथ्वी पर वास्तुमण्डल बनाकर करें।)

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्तरस्वावेशो अनमीवो भवान मत्वेमहे प्रतितन्नो जषस्व शन्नो भण द्विपदेशं चतुष्पदे। ॐ वास्तुपुरुषाय नमः आवाहयामि स्थापयामि कहकर आवाहन करें। पुनः इसी मंत्र से वास्तुदेव की पंचोपचार पूजा करें

[(१) पाद्य, (२) अर्घ्य, (३) गंध, (४) अक्षत, (५) नैवेद्य, (६) जलादि अर्पित करें]

वास्तु-प्रार्थना

ॐ नागपृष्ठं समारूढं हलहस्तं महाबलम्।
पातालं नायकं देवं वास्तुपुरुषं नमाम्यहम्।।
ॐ वास्तुदेवाय नमः ॐ वास्तुदेवाय नमः ॐ वास्तुदेवाय नमः

५-कर्मपात्र स्थापना (कलशस्थापना की पौराणिक विधि)

प्रथम पीठ के नीचे मध्य में **विन्दुत्रिकोण-षटकोण-वृत्तचतुष्ट्यात्मक मण्डल बनाकर मध्य में पंचप्रणव ॐ ऐं ह्रीं श्री क्लीं में से एक प्रणव लिखें। इसके ऊपर जल से पूरित कलश स्थापित करें।**

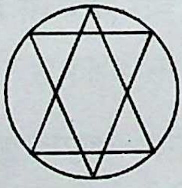

(१) ॐ अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती। कावेरी कृष्णवेणा च गंगा चैव महानदी। ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा- आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितः क्षयकारिका।।
ॐ गंगादि सर्वेषां नदीनां अस्मिन् कलशे आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

(उपरोक्त मंत्र से ही सभी नदियों की पंचोपचार पूजा करें)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ गंगादि सर्वेषां नदीनां अस्मिन कलशे-पाद्यं, अर्घ्यं, गंधं, धूपं, नैवेद्यादि समर्पयामि।

(२) कलशे सर्वोषधि प्रक्षिपेत् - ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यः त्रियुगं पुरा मनै नु बभ्रूणाम् अर्हठ0 शतं धामानि सप्त च।।

(३) कलशे दूर्वादल प्रक्षिपेत् - ॐ कांडात कांडात् प्ररोहन्ति परुष परुषस्परि। एवान्नो दूर्वेप्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

(४) ॐ अपांपतये वं वरुणाय नमः अस्मिन कलशे वरुणं सांगाय सपरिवाराय ससायुधाय सशक्तिकाय आ0 स्था0 नमस्करोमि।

(५) वरुणादि की प्राण-प्रतिष्ठा- ॐ मनोजूतिः जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिः यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ठं यज्ञः समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयान्तामो प्रतिष्ठः।।

(**ॐ अपांपतये वं वरुणाय नमः** मूल मंत्र से वरुण देव की कलश में पंचोपचार पूजा करें)

(पाद्य, अर्घ्य, गंध, अक्षत, नैवैद्यादि अर्पित करें)

प्रार्थना -

नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय सुश्वेत हाराय सुमंगलाय।
सुपाश हस्ताय झषासनाय जलाधि नाथाय नमो नमस्ते।

(६) सभी तीर्थों का कलश में आवाहन करें -

ॐ पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै। सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदा।। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरतिक्षय कारका ॐ सर्व तीर्थानि अस्मिनकलशे आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि (स्थापना के बाद सभी तीर्थों की पंचोपचार पूजा करें)

(७) द्रव्य दक्षिणा-समर्पण -

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत। सदधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(कलश में पैसे डाल दें)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(८) कलश के ऊपर मुद्रा समर्पण -

अंकुश, धनु, मत्स्य, संरक्षण, कुंभ, गालिनी मुद्रा लगाएँ और अंत में कनिष्ठिका से स्पर्श करके ॐ अस्त्राय फट् मंत्र से तीन बार रक्षण करें।

कलश प्रार्थना -

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः।
संगह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्थिताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुंधरा।
ऋगवेदोऽथ यजुर्वेदो सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च संहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थ दुरितः क्षय कारकाः।।

इति कर्मपात्र स्थापना

६- देह आदि का शुद्धीकरण

(कर्मपात्र के जल से शुद्धीकरण प्रारंभ करें)

(१) आचमन

विनियोग - ऋतं चेतित्र्यृचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण- ऋषिरनुष्टुपृछन्दो भाववृत्तं दैवतम् आचमने विनियोगः।।

यजमान को निम्न मंत्र से एक बार आचमन कराएँ

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततोरात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।। समुद्रादर्णवादधि सवत्सरोऽजायत्। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतो वशी। सूर्यचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथोः स्वः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) यजमानादि शुद्धीकरण

विनियोग- द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुपृछन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः।।

अवभृथ-मंत्र

ॐ द्रुपदादिव मुमचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रे णेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।

(३) पवित्रीधारण

(कुशा का छल्ला (रिंग) बनाकर यजमान की अनामिका उँगली में पहनाने की क्रिया पवित्रीधारण कहलाती है।) (कुशा के अभाव में सोने की अँगूठी पहना दें)

मंत्र-

ॐ पवित्रस्थो वैष्णव्यो सवितुः वः प्रसन्नऽउत्पुनाम्यत् छिद्रेण सूर्यस्य रश्मिमिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतत् छकेयम्।।

(पवित्री को ११ बार मूलमंत्र से अभिमंत्रित करें और यजमान की अनामिका में पहना दें)

(४) शिखाबंधन

विनयोग- ॐ अस्य श्रीकुत्सऋषि जगती छंदः श्री रुद्रोदेवता शिखाबन्धने विनियोगः

मंत्र- ॐ मणिधारिणी बज्रिणी महाप्रतिसरे रक्ष-रक्ष हुं फट् स्वाहा।

प्रार्थना-

चिद्‌रूपेण महामायै दिव्य तेज समन्विते। तिष्टदेवि शिखा मध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।। (३ बार मूल मंत्र से शिखा अभिमंत्रित करें)

(५) यज्ञोपवीत-धारण

विनियोग - ॐ यज्ञोपवीतमिति परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुपछंदः लिंगोक्ता देवता श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठान अधिकार सिद्धये यज्ञोपवीत परिधाने विनियोगः।

मंत्र- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेः यत् सहजं पुरुस्तात। आयुष्मग्र्यं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिमुंज शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीते नोपनह्यामि।

(११ बार गायत्री मंत्र से यज्ञोपवीत अभिमंत्रित करें और यजमान को धारण कराएँ)

(६) यजमान- तिलक-धारण

मंत्र- ॐ शतमानं भवति शतायुर्वै पुरुषः।
शतेन्द्रियं आयुरेव इन्द्रियं वीर्यमात्मन वृत्ते।।

(७) यजमान-वरण-सूत्र (कलावा-बंधन)

मंत्र- ॐ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रति बध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

(८) आचार्य-वरण- (तिलक-धारणादि)

मंत्र- ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

(९) आचार्य-कलावा बंधन-

मंत्र- ॐ वृत्तेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति।
दक्षिणाम् दक्षिणाः श्रद्धां आप्नोतिः श्रद्धाया सत्यमाप्यते।।

(उक्त कर्मों के बाद सूक्ष्म में यजमान को वैदिक संध्या कराएँ)

(१०) सूर्यार्घ्य

विनियोग-ॐ कारस्य ब्रह्मात्रऋषि गायत्री छन्दः परमात्मा देवता तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दां- स्याग्नि- वायुसूर्याः देवताः तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविताः देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।

अर्घ्यविधि-

जल पुष्पादि लेकर निम्न मंत्र को तीन बार पढ़कर दाहिने पैर से खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें। (संध्याकाल में बैठकर भी अर्घ्य दे सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्घ्य मंत्र- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृह्यार्घ्यं दिवाकर। ॐ ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय इदमर्घ्यं यद् दत्त न मम।

विलम्ब होने पर पश्चाताप अर्घ्य- सूर्योदय से और सायं सूर्यास्त से तीन घड़ी के बाद संध्या करें, तो इसके प्रायश्चित के लिए नीचे लिखे मन्त्र से एक बार अर्घ्य और दें।

मंत्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानिः पश्यन।।

(११) गायत्री जप

(गायत्री मंत्र का ११ बार जप कराएँ)

७- दीप स्थापना -

मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं रक्तवर्ण द्वादशशक्ति सहिताय दीपनाथाय नमः

उक्त मंत्र से आवाहन आदि करके दीप की पंचोपचार पूजा करें।

प्रार्थना-

भो दीप! अमुक इष्ट (जिस देव/देवी की पूजा या यज्ञ हो उसका नाम ले) स्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षी अविघ्नकृत। यावत्कर्म समाप्ति स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

(निम्न मंत्रों से दीपमुद्रा द्वारा प्रणाम करें)

ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्नि स्वाहा। सूर्योज्योति ज्योतिः सूर्य स्वाहा। अग्निवर्चो ज्योतिवर्चः स्वाहा। सूर्योवर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योति स्वाहा।

भक्त्यादीप प्रवक्ष्यामि देवायपरमात्मने।
त्राहि मां निर्यात् घोरात दीपज्योति नमोस्तु ते।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९-संकल्प - संकल्प के लिए जल-अक्षत्-पुष्प, मुद्रादि हाथ में रख लें। (यह संकल्प विस्तृत भी किया जा सकता है।)

ॐ विष्णुः विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे विष्णुपदे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे-कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशे अमुकजनपदे, अमुक नगरे अमुक नाम विक्रम संवत्सरे.... बौद्धावतारे अमुक ऋतौ अमुक उत्तमेमासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक गोत्रोत्पन्नः (अमुक शर्मा) अहं भगवान् गोविन्द प्रीत्यर्थं- सर्वपापक्षयपूर्वकं - दीर्घ आयुः विपुललक्ष्मी-धन-धान्य-पुत्र - पौत्रादि- कीर्तिलाभ शत्रुपराजयसिद्ध्यर्थं अमुख देव वा देवता स्थापना-पूजनादि पूर्वकं यज्ञादि कर्म करिष्ये।

(यजमान से जल-अक्षतादि-किसी पात्र में रखवा लें)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वितीय-अध्याय

हवन हेतु प्रारम्भिक कर्म

१- यज्ञवेदी-चित्र

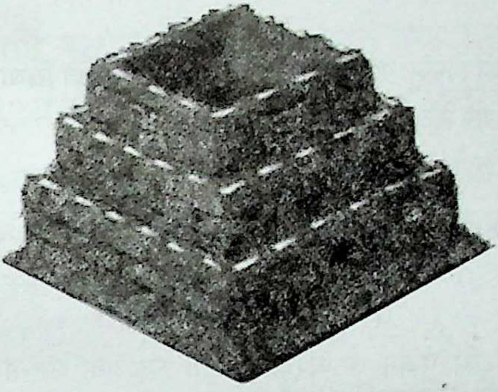

२- यज्ञ हेतु भूमिपूजन

भूमिपूजन मंत्र

(१) आवाहन-स्थापन

ॐ चतुर्भुजां हरितवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
शंखपद्मचक्रशूलयुक्तां वसुधरां सदा भजे।।
आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणिम्।
श्रीविष्णुपत्नीं नमस्तुभ्यं नमुस्तुभ्यं नमो नमः।।

होता यजमान के दायें हाथ में अक्षत देकर निम्न मन्त्र द्वारा पृथ्वी का आवाहन करे-

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। ॐ भूम्यै नमः भूमिमावाहयामि स्थापयामि।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) प्राण-प्रतिष्ठा - **ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ठं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँप्रतिष्ठ।। अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।**

(३) पंञ्चोपचार पूजा - तदुपरान्त गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य के द्वारा यजमान से पृथ्वी का पञ्चोपचार पूजन कराएँ। पूजनोपरान्त -

प्रार्थना -

सशैलसागरां पृथ्वीं शेषमूर्धासंस्थिता। मां धारय कल्याणि विष्णुलोक फलप्रदा।।
पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुनाधृता। त्वंच धारय मां देवि पवित्रं कुरु च जीवनम्।।

यज्ञकर्ता दक्षिणहस्ते पुनर्जलमादाय- 'अनया पूजया पृथिवी प्रीयतां न मम'। यह कहकर भूमि पर यजमान जल छोड़ दे।

३- यज्ञवेदी निर्माण

यज्ञ हेतु भूमि पूजन के पश्चात् होता सहायक आचार्यों के सहयोग से यज्ञकुण्ड (यज्ञवेदी) का निर्माण करे। यज्ञवेदी के आकार और माप के विषय में होता स्वयं यह देखकर निर्णय ले कि यज्ञकर्ता और यज्ञ-सामग्री की मात्रा कितनी है। यज्ञ कितने दिन चलेगा। यज्ञकर्ता अधिक हों और यज्ञसामग्री (साकल्य) अधिक हो तो यज्ञवेदी विशाल होनी चाहिए। सामान्यतया अन्दर-अन्दर यज्ञवेदी सवा हाथ की लम्बाई-चौड़ाई में निर्माण की जानी चहिए। सवा हाथ गहरी भी होनी चाहिए। वेदी को आवश्यकतानुसार सजा कर उसके अन्दर स्वास्तिकादि बनाकर होता को यज्ञ-वेदी की आंतरिक भूमि पर **पंचभू-संस्कार** करने चाहिए। तत्पश्चात् कुशकण्डिका विधान करें।

४- पञ्चभूसंस्कार

(१) मुट्ठीभर कुशा लेकर यज्ञवेदी का परिसमूहन करे। यानि कि तीन बार **ॐ परिसमूह्य-परिसमूह्य-परिसमूह्य** बोलकर यज्ञवेदी को तीन बार झाड़ें और कुशा को ईशान में रख दें।

(२) गाय के गोबर से तीन बार **उपलिप्य-उपलिप्य-उपलिप्य** कहकर वेदी की आधार भूमि को लीपने का उपक्रम करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(३) स्रुवा के मूल भाग से नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे तीन रेखाएँ खींचकर यज्ञ-भूमि के मस्तक पर त्रिपुण्ड स्थापित करें।

(४) अनामिका से अँगुठे का संयोग देकर उन तीन रेखाओं से मिट्टी उठाये और वाम हाथ में रखकर ईशान में फेंक दे।

(५) उन रेखाओं पर **ॐ जले नाभ्युक्ष्य** कहकर तीन-बार जल छिड़के। यह अति संक्षिप्त पञ्चभू संस्कार विधि है।

५- ब्रह्मादि स्थान चयन, संक्षिप्त कुशकण्डिका, यज्ञपात्र-स्थापना तथा यज्ञपदार्थ पवित्रीकरण-विधान

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव 'भवामि' इति। पठित्वा तत्रोपवेशनम्। 'भवामि' इति ब्रह्मणः प्रत्युक्तिः। ब्रह्मा वाग्यतश्च भवेत्।

ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तगृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशैषु दक्षिणहस्तेन निधाय, कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रह्मणाऽनुज्ञातः उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात्। ततो द्वादशानां परिस्तरण कुशानं चतुरो भागान् वामहस्ते कृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथा वृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषु द्विः पात्राणि यथासम्भवं न्युब्जानि उद्कसंस्थानि प्राक्संस्थानि वा आसादयेत्। पवित्रे छेदनकुशाः, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशाः पञ्च, उपयमनकुशाः सप्त, समिध स्तिस्त्रः, स्रुवः, आज्यम्, तण्डुलाः, पूर्णपात्रम्, उपल्पनीयानिद्रव्याणि निधाय तत्तद्ग्रहवस्त्राणि, अधिदेवताद्यर्थं श्वेतानि, तत्तद्ग्रहवर्णाः तत्तद्ग्रह पुष्पाणि, तत्तद्ग्रहधूपाः तत्तद्ग्रहनैवेद्यानि, फलानि, दक्षिणाः वितानम्। अर्कादिसमिधिः, सयवतिलाः पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेलवस्त्रादि; ततः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पवित्रकरणम्। आसादितकुशपत्रद्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्यरहितं वामहस्ते कृत्त्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परिमाय मूले तयोरुपरि कुशत्रयमुदग्रं निधाय। तत्कुशत्रय तयोर्मूलभागेन प्रादक्षिण्येन परिवेष्ट्य तयोः प्रादेशपरिमाणमग्रभागं वामहस्ते कृत्वा अविशिष्टं मूलभागं कुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं पवित्रम्। तस्मिन्पत्रद्वयेऽविश्लेषाय ग्रथिं कुर्यात्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकं त्रिरासिच्य प्रोक्षणीपात्रं सव्ये कृत्वा दक्षिणेन वामहस्तधृतमेव कर्णसमुत्थाय नीचः कृत्वा प्रणीतोदकेनं पवित्रानीतेनोत्तानहस्तेन प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत्। ततः प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थालीं प्रोक्षणम्। चरुस्थालीं प्रोक्षणम्। समार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणमं। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्।

कुशकण्डिका-विधान

(होता आचार्य) अग्निदेवता के दक्षिण दिशा की ओर ब्रह्मा के लिए कुश का आसन रखे। अग्नि की उत्तर दिशा में 'प्रणीता पात्र' के लिए कुश के दो आसन रखे। ब्रह्मा के आसन पर ब्रह्मा को बैठा दे और कहे- **हे ब्रह्मन्! यावत् कर्म समाप्ति स्यात् तावत त्वं सुस्थिरो भव।**

मैं ब्रह्मा हूँ- यह कह कर ब्रह्मा पूर्व में स्थापित आसन पर बैठे। तदनन्तर ब्रह्मा मौन हो जाये। फिर होता स्वयं प्रणीता पात्र को बायें हाथ में धारण कर दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए जलपात्र से उस प्रणीता पात्र में जल को भरकर पहले से बिछी हुई कुशाओं पर दाहिने हाथ से रखकर कुशों द्वारा आच्छादन कर उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देखकर ईक्षण मात्र से ब्रह्मा की आज्ञा लेकर उत्तर दिशा की ओर बिछी कुशाओं पर रख दे। तत्पश्चात् बाहर परिस्तरण कुशाओं के चार भागों को बायें हाथ में रखे। उसमें से एक-एक भाग से परिस्तरण अग्निकोण से ईशानादि में ही करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यज्ञ-सामग्री की स्व-स्व स्थान पर स्थापना

पश्चिमदिशा से उत्तर दिशा की ओर बिछी कुशाओं पर दो-दो पात्रों में यथासम्भव जल भरकर रखें तथा प्राक्संस्थ आसादन करें। दो पवित्र छेदन करने के लिए कुशा, प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशा पाँच, उपयमनकुशा सात, तीन समीधा, स्रुवा-घृत-चावल पूर्णपात्र आदि यज्ञस्थल पर यथास्थान रखें। सूर्यादि ग्रहों के अनेक वर्ण के वस्त्र, अधिदेवता, देवता आदि के लिए सफेद वस्त्र, सूर्यादि ग्रहों के लिए अनेक प्रकार के चन्दन, तत्-तत् वर्ण के ग्रहों की धूप, ग्रहों के नैवेद्य-फल-दक्षिणा, वितान, सूर्यादि की समिधा, यव और तिल, पूर्णाहुत्यर्थ नारिकेल और वस्त्र को यथास्थान रखें। तदुपरान्त पवित्री बनाएँ जैसे-स्थापित मध्य (बीच कुशा से रहित) कुशाग्र रहित दो कुशपत्रद्वय को आगे से बराबर नापकर बायें हाथ में लेकर कुशा के अग्रभाग से अंगुलि के प्रदेशमात्र नापकर उसके मूल पर उन दोनों कुशा के ऊपर तीन कुशाओं को आगे रखकर पवित्री बनाएँ। पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका में पहने जाने वाली 'कुशा की अँगूठी' कही जाती है।

यज्ञ-पदार्थों का पवीत्रीकरण

तदनन्तर प्रागग्र प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता के पास रख दे; वहाँ से सपवित्र पात्रान्तर हाथ से प्रणीता पात्र से जल को तीन बार आसेचन कर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में कर दाहिने हाथ से धारण किये हुए ही कान की तरफ उठाकर नीचे की तरफ कर प्रणीतापात्र के जल से पवित्री उत्तानहाथ से प्रोक्षणीपात्र का प्रोक्षण करें। प्रोक्षणी के जल से आज्यस्थाली का प्रोक्षण करें। चरुस्थाली का प्रोक्षण करें। समार्जन कुशाओं का प्रोक्षण करें। उपयमन कुशाओं का, समिधा का, स्रुवा का, आज्य का, पूर्णपात्र का प्रोक्षण करें। यह संक्षेप में कुशकण्डका विधान, यज्ञपात्रों की स्व-स्व स्थान पर स्थापना और समग्र यज्ञ पदार्थों का पवीत्रीकरणादि है।

।। इति कुशकण्डिका-यज्ञपात्र स्थापना-यज्ञपदार्थ पवित्रीकरण विधानम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६- यज्ञकुण्ड-मेखलापूजन

होता को यजमान द्वारा- यज्ञकुण्ड की तीनों मेखलाओं का पूजन कराना चाहिए-

(१) सर्वप्रथमोपरि मेखलायां श्रीविष्णु पूजयेत् ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा।।ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

(२) ततो मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां ब्रह्माणं पूजयेत्-ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिम सतश्च विवः।। ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

(३) तत अधोमैखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां रुद्रं पूजयेत्- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवः उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

७- यज्ञाङ्ग पूजन

(१) योनिपूजन- ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।।ॐ क्लीं योन्यै नमः योन्यै आ० स्था० नमस्करोमि।

(२) कण्ठ पूजन- नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ठ० रुद्रा उपश्रिताः। तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव धान्वनि तन्मसि।। ॐ कण्ठे नमः कण्ठमावाहयामि स्थापयामि।।

(३) नाभिपूजन- ॐ नार्भिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।। ॐ नाभ्यै नमः नाभिमावाहयामि स्थापयामि।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८- विश्वकर्मा पूजन

(१) ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन् त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

९- यज्ञकुण्ड में अग्निस्थापन

ॐ अग्नेनय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानिदेव वयुनानि विद्वान्। युयोध्वस्तज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां तेनमः उक्तिविधेम।।

ॐ अग्नये नमः- अग्निं आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

अग्नि प्रार्थना- ॐ रक्त माल्याम्बरधरं देवं रक्तपद्मासनस्थितम्। स्वाहा स्वधा वषट्कारैरङ्कितं मेष वाहनम्।। त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तर्चिर मिद्युते। आगच्छ भगवन् अग्ने वेद्यामस्मिन् सन्निधो भव।। छागपृष्ठसमारूढं शक्तिहस्तं महाबलम्। आश्रितं दिशि चाग्नेयां अग्निदेवं प्राणाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा-स्वधायुताय मृडाग्नये वैश्वानराय नमः।

१०- प्रारम्भिक आहुति-विधान (अनिवार्य आहुतियाँ)

नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा यजमान अग्नि में घी की आहुति दे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम ।।१

ॐ इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय न मम।।२

ॐ अग्नये स्वाहा - इदं अग्नये न मम।।३

ॐ सोमाय स्वाहा - इदं सोमाय न मम।।४

ॐ भूः स्वाहा - इदं अग्नये न मम ।।५

ॐ भूवः स्वाहा- इदं वायवे न मम ।।६

ॐ स्वः स्वाहा - इदं सूर्याय न मम।।७

ॐ त्वन्नोऽ अग्नेव्वरुणस्य विद्वन्देवस्यहेडीऽअवया सिसीष्ठाः। यजिष्ठोव्वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेवा ॱ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदं अग्नीवरुणाभ्यां न मम।।८।।

ॐ स त्वन्नोऽग्नेवमोभवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ अवयक्ष्वनो वरुण ॱ रराणो ब्रीहिर्मृडीक ॱ सुहवो नऽएधि स्वाहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।९।।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्य यानोधेहिभेषज ं स्वाहा।। इदमग्नये अयसे न मम्।।१०।।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोतविष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तु मरुतःस्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे, विष्णवे, विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः सर्वोभ्यश्च न मम।।११।।

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमं ं श्रथाप। अथावयमादिव्यव्रते तवानागसोऽअदितयेस्साम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायऽदितये च न मम।।१२।।

।।एताः सर्वाः प्रायश्चित्त संज्ञकाः आहुतयः।।

गौरी-गणेश आहुति मन्त्र - ॐ गणनांत्वा गणपति ं हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपति ं हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ं हवामहे वसोमम। आहमजानिगर्भ धमा त्वमजासिगर्भधम स्वाहा-इदं गणपतये न मम।।१

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा।।२।।

ब्रह्मा आहुति मन्त्र - ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः ॐ ब्रह्मणे स्वाहा - इदम्ब्रह्मणे न मम।।३।।

विष्णु अहुति मन्त्र- ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्यपा ं सुरे स्वाहा ॐ विष्णवे स्वाहा - इदं विष्णवे न मम।।४।।

शिव आहुति मन्त्र- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा ॐ नमः शिवाय स्वाहा - इदं शिवाय न मम।।५।।

रुद्र मंत्र - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव वंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात स्वाहा।।६।।

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तृतीय -अध्याय

श्रीगौरी-गणेश स्थापनादि व हवन

प्रथम पीठ

१-पीठ रचना चित्र

गौरा चित्र

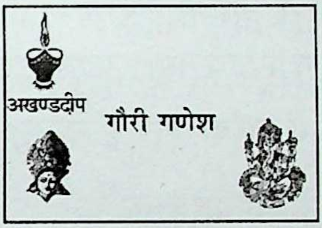

गणेश चित्र

हस्ते जलऽक्षत-पूगीफलद्रव्यं चऽऽदाय, सङ्कल्पं कुर्यात्।

२-सङ्कल्पः- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याऽद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयप्रहरार्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे ("सिद्धप्रदव्रजक्षेत्रे वृन्दावने राधासर्वेश्वरी सम्मुखे" इति वृन्दावनधामे सकल्प विशेषः) भागीरथ्या वा यमुनादि अमुकभागे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे श्रीसूर्ये अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा-राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषण- विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्र अमुकशर्माऽहं ममाऽऽत्मनः (यजमानस्य नाम वा) श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं धर्म-अर्थ-काम- मोक्षसिद्धि-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वव्याधि-निर्यासपूर्वकं सर्वाऽभीष्ट-सिद्ध्यर्थं ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति आदि देवता स्थापनार्थं यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः ऽऽवाहनादि-षोडशोपचारैः प्रञ्चोपचारैर्वा तत्राऽऽदो पूजा-मण्डपान्तर्गत निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

३- गौरी गणेश आवाहन-स्थापन

पूजा मंत्र- ॐ गणनां त्वा गणपतिः ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः ँ हमवामहे निधीनां त्वां निधिपतिः ँ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधामा त्त्वमजासि गर्ब्भ धाम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि-बुद्धि-सहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मां नयति कश्चचन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ भूर्भुवःस्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

४- प्राण-प्रतिष्ठा

ॐ मनोजुतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञः। समिमं दधातु विश्श्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३ँ प्रतिष्ठ।। अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।

५- षोडशोपचार पूजा

आसन - विचित्र-रत्न-खचितं दिव्यास्तरण-संयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृहणीश्व सुरपूजित!।

ॐ पुरुषः एवेदः सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्त्व स्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि। आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि वा पुष्पं समर्पियामि।

पाद्य - ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य - ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत् पुरुषः पादोऽस्यैहा भवत् पुनः ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनं - ॐ ततो विराड्जायत विराजो अधि पूरुषः सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरुः।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान - ॐ पञ्चनद्य सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे अभवत् सरित्।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

स्नान - ॐ आपोहिष्टा मयोभवः तान ऊर्जेदधातन। महेरणायचक्षसे योवः शिवतमोरसः। तस्य भाजयते नः उशतीरिव मातरः तस्माऽअरंग मामवः यस्यक्षयाय जिन्वथ आपोजनयथा च नः।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि।

वस्त्रं - ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगत्स उश्रेयान भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽउन्नयति स्वाध्यो मनसा देवयन्त।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपवस्त्रं - ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत् स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपः संव्ययस्व विभावसो।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रान्ते पुनराचमनीयं समर्पयामि। रक्तसूत्रं समर्पयामि-अलंकरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं - ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेः यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्जशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्धं - ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वां इन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः। त्वांमोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद् अमुच्यत।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षत् - ॐ अक्षन्न मीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामती योजान् विन्द्र ते हरी।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला - ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवती प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्त्वरीवीरुधः पारयिष्णवः।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

दुर्वांकुर - ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दुर्वाङ्कुरं समर्पयामि।

धूप - ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धर्वतं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमः सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतम्।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपं आघ्रापयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीप - ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा।। सूर्योज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा।। सूर्योवर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा।। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो, ज्योति स्वाहा।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं समर्पयामि।

नैवेद्य - ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षः शीष्णोः द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यांभूमिः दिशः श्रोत्रान्तथा लोकाँऽकल्पयन्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा (नैवेद्योपरि धेनुमुद्राप्रदश्य वं वं उच्चार्य)

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि-मध्येमध्ये पानीयम्, उत्तरापोशनं समर्पयामि।

ताम्बूलवीटक - ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञं अतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइघ्म शरद्धविः।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ताम्बूलवीटकं समर्पयामि।

फल - ॐ याः फलनीर्या ऽअफला अपुष्पा याश्च पुष्पणीः वृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चंत्वः हसः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुफलानि समर्पयामि।

दक्षिणाः - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्। सदधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पांजलि - ॐ नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिः मया दत्ता गृहाण परमेश्वर।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा - यानिकानि च पापानि ज्ञात्वा-अज्ञात्वा कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमं प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्य - जल-गन्धाऽक्षत-फल-पुष्प-दूर्वा-दक्षिणाः ताम्रपात्रे प्रक्षिप्य, हस्तद्वयजानुमण्डलं कृत्वा, अर्घपात्रमञ्जलिना गृहीत्वा निम्न श्लोकान् पठेत्।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।१।।
द्वैमातुर ! कृपासिन्धो ! षण्मातुराग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद!।
अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम।।२।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।।

प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ ! नमो नमस्ते ।।१।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ।।२।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।३।।
विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक! ।।४।।
लम्बोदर ! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय! ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ।।५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति,
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति,
तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव।।६।।
गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।।७।।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयतां न मम।

६- श्रीगौरी-गणेश हवन मंत्र

यज्ञकर्त्ता निम्न तीन मन्त्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए हवनकुण्ड में यजमान से गणपति और अम्बा के लिये घृत की एक-एक आहुति स्रुवाद्वारा प्रदान कराएँ-

(१) ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा।।

(२) ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा।।

(३) ॐ जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गाक्षमाशिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते स्वाहा। ६ ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ इदं दुर्गायै न मम्।।

श्रीगणेश परिवार हवन मंत्र

श्री गणेशपत्नी- **(१) ॐ श्रीं सिद्ध्यै नमः स्वाहा (२) ॐ श्रीं बुद्ध्यै नमः स्वाहा**

श्री गणेशपुत्र- **(१) ॐ क्षेमः नमः स्वाहा (२) ॐ लाभः नमः स्वाहा**

श्री गणेशवाहनादि- **(१) ॐ मूषकायः नमः स्वाहा (२) ॐ सिंहाय नमः स्वाहा (३) ॐ मयूराय नमः स्वाहा (४) ॐ नील-अश्वाय नमः स्वाहा**

(श्री गणेश पुराण के क्रीड़ाखण्ड में उपरोक्त चारौ श्रीगणेश जी के वाहन हैं)

श्री गणेशपार्षद - **(१) ॐ अविघ्नाय नमः स्वाहा (२) ॐ विघ्नराजाय नमः स्वाहा (३) ॐ सुवक्त्राय नमः स्वाहा (४) ॐ बलवन्ताय नमः स्वाहा (५) ॐ गजकर्णाय नमः स्वाहा (६) ॐ गोकर्णाय नमः स्वाहा (७) ॐ सुसौम्याय नमः स्वाहा (८) ॐ शुभ-लाभ प्रदाय नमः स्वाहा।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गणेश सेवक -(१) **ॐ गणपाय नमः स्वाहा (२) ॐ गालवाय नमः स्वाहा (३) ॐ गार्ग्याय नमः स्वाहा (४) ॐ मुद्गलाय नमः स्वाहा (५) ॐ मंगलकर्तारः नमः स्वाहा (६) ॐ सुधाकराय नमः स्वाहा (७) ॐ अंकुशाय नमः स्वाहा (८) ॐ गदाधराय नमः स्वाहा।**

७- षड् विनायक मंत्र

ॐ मौदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा।
अविघ्नो विघ्नहर्ता च षडते विघ्ननायकाः।।

(१) ॐ मोदाय नमः स्वाहा (२) ॐ प्रमोदाय नमः स्वाहा (३) ॐ सुमुखाय नमः स्वाहा (४) ॐ दुर्मुखाय नमः स्वाहा (५) ॐ अविघ्नाय नमः स्वाहा (६) ॐ विघ्नहर्त्रे नमः स्वाहा (७) ॐ अंकुशाय नमः स्वाहा (८) ॐ गदाधराय नमः स्वाहा।

८- इंद्रस्थापन-पूजन

(कतिपय पुत्रेष्टि आदि यज्ञों को छोड़कर प्रत्येक देवी-देवता के यज्ञ में देवराज इंद्र की पूजा होती है। इंद्रदेव की पूजा पीठ पर ईशान या पूर्व में की जाती है। पूर्व दिशा में ही इंद्रध्वज स्थापित होता है। गौरी-गणेश पूजनोपरान्त इंद्र पूजन होता है।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवेहवे सुहवर्ठ० शरमिन्द्रम। ह्वयामि शक्रं परुहतमिन्दर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः आवाह्यामि स्थापयामि नमस्कारोमि।। कहकर स्थापना करें।

पुनः ॐ लं इन्द्राय नमः कहकर पंचोपचार या षोडशोपचार पूजा करें।

९- इंद्रध्वजस्थापन

ॐ इन्द्र ध्वजाय नमः कहकर (यज्ञ वेदी के) पूर्व अथवा ईशान में एक लम्बे बाँस के आदि में लाला रंग की सुंदर ध्वजा लगाकर स्थापित कराएँ। फिर इस ध्वजा की उक्त मंत्र से पंचोपचार पूजा करें।

ॐ त्रातारमिन्द्र आदि मंत्रों से इंद्रदेव को आहुति दें।

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ अध्याय

नवग्रह स्थापनादि व हवन

१- पीठ रचना चित्र

नवग्रह

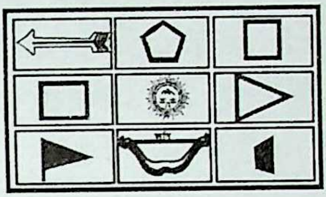

२- संकल्प (पूर्ववत करें)

३- नवग्रह स्थापनादि

आवाहन-स्थापन

सूर्य-मंत्र - ॐ जपा कुसुम सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्न सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

ॐ भगवान् आदित्य ! ॐ भूर्भुवः स्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ, ॐ सूर्याय नमः सूर्यं अवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि। (पीठस्थ सूर्य ग्रह की ओर अक्षत छोड़ दें)

चन्द्र-मंत्र - ॐ दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
ज्योत्सनापतिनिशानाथं सोमं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ इमं देवाऽसपत्नः सुतध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमं अमुष्य पुत्रम्मुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वो मी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना राजा।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्रे यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोमं आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि। (पीठस्थ चन्द्रग्रह की ओर अक्षत अर्पण करें)

भौम-मंत्र - धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत तेजः समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौमं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः कुकुत्पति पृथिव्या अयम्। अपार्ठ0 रेतासि जिन्वति।। ॐ भूर्भूवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो मौम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः भौमं आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि। (पीठस्थ मंगल ग्रह पर अक्षत छोड़ दें)

बुध-मंत्र - प्रियंगु कलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्।।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्ठापूर्ते सर्ठ0 सृजेथामयं च। अस्मिन् त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भूत आत्रेय सगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ बुधाय नमः बुधं आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।। (पीठस्थ बुध ग्रह पर अक्षत छोड़ दें)

गुरु-मंत्र - ॐ देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चन सन्निभम्।
वद्यभूतं चतुष्कोणं गुरुं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ वृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण भो वृहस्पते! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ वृहस्पतये नमः वृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि। (पीठस्थ गुरु ग्रह पर अक्षत छोड़ दें)

शुक्र-मंत्र - हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्र आवाहयाम्यहम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबात् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यं इन्द्रियं विपानः शुक्रं अन्धस इन्द्रस्य इन्द्रियं इदं पयोअमृतं मधु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रं आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि। (पीठस्थ शुक्र ग्रह पर अक्षत छोड़ दें)

शनि-मंत्र - निलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनि आवाहयाम्यहं।।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्टदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः शनैश्चरं आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि। (पीठस्थ शनि ग्रह पर अक्षत छोड़ दें)

राहु -मंत्र - अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भ सम्भूतं राहु आवाहयाम्यहम्।।

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ट्ठया वृता।

ॐ भूर्भुवः स्वः राहिनापुरोद्भूत पैठिनऋषिगोत्र कृष्णवर्ण भो राहु! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुं आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि। (पीठस्थ राहु ग्रह पर अक्षत छोड़ दें)

केतु मंत्र - पलाशधूम्रसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्र रौद्रात्मकं घोरं केतुं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अर्न्तवेद्समुद्भूत जैमिनिगोत्र कृष्णवर्ण भोकेतु! इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ केतवे नमः केतुं आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि। (पीठस्थ केतु ग्रह पर अक्षत छोड़ दें)

४- प्राण-प्रतिष्ठा

(सामूहिक) ॐ मनोजूतिं जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञः समिमं दधातु। विश्वेदेवा सइह मादयन्तामो प्रतिष्ठ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५- समवेत पूजामन्त्र

ॐ भानुशशिभूमिसुतोबुधश्चगुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः नमः

६- षोडशोपचार-पूजा

उपरोक्त समवेत मंत्र से - (१) पाद्य (२) अर्घ्य (३) आचमन (४) स्नान (५) वस्त्र (६) उपवस्त्र (७) गंन्ध (८) धूप (९) दीप (१०) नैवेद्य (११) पुष्प-पुष्पमाला (१२) पानार्थ जल (१३) द्रव्य-दक्षिणा (१४) प्रदक्षिणा क्रम से पूजा करें।

प्रार्थना

ॐ ब्रह्मामुरारीत्रिपुरान्तकारी भानुशशीभूमिसुतोबुधश्च।
गुरुश्चशुक्र शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाशान्तकराभवन्तु।।

७- नवग्रहों हेतु समिधा

अर्कः पलाशः खदिरो ह्यपामार्गश्च पिप्पलः।
औदुम्बरं शमी दूर्वा कुशाश्च समिधो नव।।

[अर्क (मदार), पलाश, खदिर (खैर), अपामार्ग (उलटा चिरचटा), पीपल, औदुम्बर (गूलर), शमी, दूर्वा और कुशा- ये ग्रहों की नव समिधाएँ कही गयी हैं]

इन नौ समिधाओं को एक-एक करके अपने-अपने ग्रह के मंत्र से त्रिमधु (घी-शहद और शर्करा) में भिगोकर आहुति दें।

८- नवग्रह-हवन- मंत्र

सूर्य मन्त्र - ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं चं हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन - ॐ सूर्याय नमः स्वाहा।।१।।

(अर्क की समिधा घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

चन्द्र मन्त्र- ॐ इमन्देवाऽअसपत्न सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रिस्येन्द्रयाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना राजा - ॐ सोमाय नमः स्वाहा।।२।।

(पलाश की समिधा घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भौम मन्त्र - **ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्।
अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति ॐ भौमाय नमः स्वाहा।।३।।**
(खदिर की लकड़ी या कत्था लेकर घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

बुध मन्त्र - **ॐ उद्‌बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्ठापूर्तेस ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत् ॐ बुधाय नमः स्वाहा।।४।।**
(अपामार्ग की समिधा घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

गुरु मन्त्र- **ॐ वृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मात् सुद्रविणं धेहि चित्रम् ॐ वृहस्पतये स्वाहा।।५।।**
(पीपल की समिधा को लेकर घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

शुक्र मन्त्र - **ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु ॐ शुक्राय नमः स्वाहा।।६।।**
(गूलर की समिधा घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

शनि मन्त्र - **ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।। ॐ शनैश्चराय नमः स्वाहा।।७।।**
(शमी वृक्ष की समिधा घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

राहु मन्त्र - **ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता।। ॐ राहवे नमः स्वाहा।।८।।**
(दूर्वा की समिधा घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

केतु मन्त्र - **ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्त्याऽअपेशसे। समुषद्‌भिरजायथाः।। ॐ केतवे नमः स्वाहा ।।९।।**
(कुश की समिधा घृतादि में भिगोकर आहुति दें।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९- नक्षत्र-अनुष्ठान विधि

१- सूर्यग्रह-अनुष्ठान विधि

सूर्यवैदिक मंत्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यंञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

सूर्य गायत्री- ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीज युक्त मन्त्र- ॐ घृणिः सूर्याय नमः।

तान्त्रिकसूर्यमन्त्र- ॐ ह्राँ, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

जप संख्या- ७००० सप्तसहस्राणि

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः।।

सूर्य-मंत्र की अनुष्ठान-विधि में तद्दशांश पद्धति लागू होती है- यथा, सात हजार मंत्र जप, सात सौ मंत्रों से हवन, सत्तर मंत्रों से तर्पण, सात मंत्रों से मार्जन (सात का दशांश न बनने पर) सात ब्राह्मणों के भोजन का विधान है।

सूर्य नक्षत्र (ग्रह) की शान्ति के लिए तांत्रिक सूर्य मंत्र से ही अनुष्ठान श्रेय होता है।

तर्पण मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रों सः सूर्याय नमः तर्पयामि।

मार्जन मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रों सः सूर्याय नमः मार्जयामि। इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड में प्रज्ज्वलित अग्नि में करें। गुड़ोदक से मार्जन करना उचित है। कुश की कूची से मार्जन करें।

तर्पण देवतीर्थ से करें। तर्पण सामग्री - **कुशा, तिल-चावल, जल।**

हवन सामग्री- त्रिमधुसिक्त ताजे अर्क की चार-चार अंगुल की समिधा या तिल, चावल, जौ, शहद तथा घृत मिश्रित शाकल्य

जपमाला- लाल चंदन की माला।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसन- गेरुआ रंग का लाल कंबल या कुशासन

२- चन्द्रग्रह अनुष्ठान-विधि

चन्द्रवैदिक मंत्र- **ॐ इमन्देवाऽअसपत्नं सुवध्वंमहते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोऽमोस्माकं ब्राह्मणानां राजा।**

सोमगायत्री- ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरी बीजमंत्रः - ॐ सों सोमाय नमः।

तान्त्रिक चन्द्र मंत्र- ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

जपसंख्या- ११000 एकादशसहस्राणि।

जपमाला- श्वेत मोती की।

आसन- श्वेत कम्बल का आसन

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे विधुः।।

२- चंद्र मंत्र की अनुष्ठान विधि में तद्दशांश पद्धति लागू होती है। यथा- ग्यारह हजार मंत्रों का जप, ग्यारह सौ मंत्रों का हवन, एक सौ एक मंत्रों का तर्पण, ग्यारह मंत्रों से मार्जन, एक ब्राह्मण के भोजन का नियम है।

चंद्र की शान्ति के लिए तांत्रिक मंत्र से अनुष्ठान करें। **तर्पणमंत्र- ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः तर्पयामि।** तर्पण देवतीर्थ से करें। तर्पणसामग्री-**कुशा, तिल-चावल- जल।**

मार्जन मंत्र- ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः मार्जयामि। इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड की अग्नि में करें। मिश्री मिले हुए गोदुग्ध से मार्जन करें। मार्जन कुशा या दूब की कूची से करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३- मंगल ग्रह अनुष्ठान-विधि

मंगलवैदिक मंत्र : ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपां रेतां सि जिन्वति।।

भौमगायत्री- ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमंत्रः ॐ अं अंगारकाय नमः।

तान्त्रिक मन्त्रः ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

जपसंख्या- १0000 दशसहस्राणि।

भूमिपुत्रो महातेजा जगतो भयकृत्सदा।
वृष्टिकृद-वृष्टिहर्ता च पीड़ां दहतु मे कुजः।।

हवन सामग्री- त्रिमधु सिक्त ताजे पलास की चार-चार अंगुल की समिधा या त्रिमधु सिक्त चावलों का शाकल्य।

जपमाला- लाल मोतियों की माला या लाल चंदन की बनी माला।

आसन - लाल कंबल का आसन या कुशासन

मंगल मंत्र की अनुष्ठान विधि में तद्दशांश पद्धति निहित रहती है। यथा- दस हजार मंत्रों का जप। एक हजार मंत्रों से हवन, सौ मंत्रों से तर्पण, दस मंत्रों से मार्जन, एक ब्राह्मण का भोजन यही नियम है।

मंगल ग्रह की शान्ति के लिए तांत्रिक मंत्र से अनुष्ठान करें।

तर्पण मंत्र- ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नम तर्पयामि। तर्पण देव तीर्थ से करें। तर्पण **सामग्री**- कुश, तिल, चावल, जल।

मार्जन मंत्र- ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः मार्जयामि। इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड में करें। गेरु मिश्रित गोघृत से मार्जन करें। कुशा की कूची से मार्जन करें। **हवन सामग्री- त्रिमधु सिक्त खदिर की ताजी चार-चार अंगुल की समिधाएँ। या तिल, चावल, जौ, मधु, घृत से युक्त शाक्ल्य।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४- बुधग्रह - अनुष्ठान विधि

बुधवैदिक मंत्रः - ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सठं सृजेथामयं च अस्मिन्त्सधस्थेऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

बुधगायत्री- ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नौ सौम्यः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमंत्र- ॐ बुं बुधाय नमः।

तान्त्रिकबुधमंत्र - ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

जपसंख्या- ९००० नवसहस्राणि।

माला- रुद्राक्ष की, आसन- हरे कंबल का

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीड़ा दहतु मे बुधः।।

बुध मंत्र की अनुष्ठान विधि में तद्दशांश पद्धति लागू होती है। यथा- नौ हजार मंत्रों से जप। नौ सौ मंत्रों से हवन। नब्बे मंत्रों से तर्पण। नौ मंत्रों से मार्जन। एक ब्राह्मण का भोजन। बुध ग्रह की शान्ति के लिए तांत्रिक बुध मंत्र से अनुष्ठान करें।

तर्पण मंत्र- ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः तर्पयामि। तर्पण देवतीर्थ से करें। **तर्पण सामग्री**- कुशा, तिल-चावल, जल।

मार्जन मंत्र- ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः मार्जयामि। इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड की अग्नि में करें। गोघृत से मार्जन करें। मार्जन कुशा की कूची से करें।

हवन-सामग्री- **त्रिमधुसिक्त अपामार्ग की चार-चार अंगुल की ताजी समिधाएँ या तिल, चावल, जौ, घृत, मधु युक्त शाकल्य**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५- गुरुग्रह अनुष्ठान विधि

गुरुवैदिकमन्त्रः - ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छ वसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

गुरुगायत्री- ॐआंङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नौः जीवः प्रचोदयात्।

एकाक्षरीबीजमंत्र- ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

तान्त्रिकगुरुमन्त्रः - ॐ ग्रां ग्रीं गौं सः गुरवे नमः।

जपसंख्या- १९००० एकोनविंशति सहस्राणि।

माला- हल्दी की माला।

आसन- कुशा, मूँज या पीले कंबल का

देवमंत्री विशालाक्षः सदा लोकहितेरतः।
अनेकशिष्यैः सम्पूर्णः पीड़ां दहतु मे गुरुः।।

गुरुमंत्र की अनुष्ठान-विधि में तद्दशांश पद्धति प्रयोग की जाती है। यथा उन्नीस हजार मंत्रों से जप। उन्नीस सौ मंत्रों से हवन। एक सौ नब्बे मंत्रों से तर्पण। उन्नीस मंत्रों से मार्जन तथा दो ब्राह्मणों का भोजन कराना चाहिए। गुरु मंत्र की शान्ति के लिए तांत्रिक गुरुमंत्र से अनुष्ठान करें।

तर्पण मंत्र- ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवै नमः तर्पयामि। तर्पण ऋणीतीर्थ से करें।

तपर्ण सामग्री- कुशा, तिल, चावल, जल।

मार्जन मंत्र- ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः मार्जयामि। इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड की अग्नि में करें। शुद्ध गोघृत से मार्जन करें। मार्जन कुशा की कूची से करें।

हवन सामग्री- त्रिमधुसिक्त पीपल की ताजी चार-चार अंगुल की समिधाएँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६- शुक्रग्रह अनुष्ठान विधि

शुक्रवैदिकमंत्रः - ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ठँ शुक्रमंधसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतम्मधु।।

शुक्रगायत्री- ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमंत्रः - ॐ शुं शुक्राय नमः।

तान्त्रिकशुक्रमन्त्रः - ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

जपसंख्या- १६000 षोड़शसहस्राणि।

माला- स्फटिक की माला।

आसन- श्वेत कंबल।

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्व महाद्युतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणं च पीड़ा दहतु मे भृगुः।।

शुक्रमंत्र की अनुष्ठान विधि में तद्दशांश पद्धति लागू होती है। यथा- सोलह हजार मंत्रों का जप। सोलह सौ मंत्रों का हवन। एक सौ साठ मंत्रों का तर्पण। सोलह मंत्रों से मार्जन। दो ब्राह्मणों का भोजन।

शुक्र ग्रह की शान्ति के लिए तांत्रिक मंत्र से अनुष्ठान करें।

तर्पण मंत्र- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः तर्पयामि। तर्पण देवतीर्थ से करें।

तर्पण सामग्री-कुशा-तिल-चावल, जल।

मार्जन मंत्र- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः मार्जयामि। इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड की अग्नि में करें।

मार्जन- गो दुग्ध से करें। मार्जन दूबघास की कूची से करें।

हवन सामग्री- त्रिमधु सिक्त ताजे गूलर की चार-चार अंगुल की समिधाएँ या तिल, चावल, जौ, घृत, मधु युक्त शाकल्य।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७- शनिग्रह अनुष्ठान विधि

शनिवैदिक मंत्रः - ॐ शन्नो देवीरभिष्टऽआपो भवन्तु पीतये। शय्योरभिस्रवन्तु नः।।

शनिगायत्री- ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युपुरुषाय धीमहि तन्नौ शनिः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरीबीजमंत्रः - ॐ शं शनैश्चराय नमः।

तांत्रिक शनिमंत्रः - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

जपसंख्या - २३000, त्रयोविंशतिः सहस्राणि।

माला- नीलम की माला या रुद्राक्ष की माला

आसन- काला कंबल

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दाचरः प्रसन्नात्मा पीड़ां दहतु मे शनिः।।

शनि ग्रह की अनुष्ठान-विधि में तद्दशांश-पद्धति लागू होती है। यथा-तेइस हजार मंत्रों का जप। दो हजार तीन सौ मंत्रों सें हवन। दो सौ तीस मंत्रों से तर्पण। तेईस मंत्रों से मार्जन। तीन ब्राह्मणों का भोजन।

बुध ग्रह की शांति के लिए तांत्रिक-मंत्र से अनुष्ठान करें।

तर्पण मंत्र- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः तर्पयामि। तर्पण देवतीर्थ से करें।

तर्पण सामग्री-कुशा-तिल- चावल-जल।

मार्जन मंत्र- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः मार्जयामि।

इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड की अग्नि में करें। मार्जन-शहद मिश्रित तिल-तेल या सरसों के तेल से करें। मार्जन कुशा की कूची से करें।

हवन सामग्री- त्रिमधुसिक्त शमी वृक्ष की चार-चार अंगुल की ताजी समिधाएँ या तिल, चावल, जौ, घृत, मधु युक्त शाकल्य।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८- राहुग्रह अनुष्ठान विधि

राहुमन्त्र - ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

राहुगायत्री - ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

एकाक्षरी बीज मन्त्र- ॐ रां राहवे नमः।।

तान्त्रिकमन्त्र - ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।।

जप संख्या- १८000, अष्टदशसहस्राणि

माला- गोमेद की माला या रुद्राक्ष की माला

आसन- काला कंबल या कुशासन

महाशीर्षो महावक्त्रो महाद्रंष्टो महायशाः।
अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीड़ां दहतु मे तमः।।

राहु ग्रह की अनुष्ठान विधि में तद्दशांश पद्धति लागू होती है। यथा- अठारह हजार मंत्रों से जप। अठारह सौ मंत्रों से हवन। एक सौ अस्सी मंत्रों से तर्पण। अठारह मंत्रों से मार्जन। दो ब्राह्मणों का भोजन।

राहु ग्रह की शान्ति के लिए तांत्रिक मंत्र से अनुष्ठान करें।

तर्पण मंत्र- ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः तर्पयामि। तर्पण पितृतीर्थ से करें।

तर्पण सामग्री-कुशा-तिल -जौ-चावल- जल।

मार्जन मंत्र- ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः मार्जयामि। इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड की अग्नि में करें

भैंस या काली बकरी के दुग्ध से मार्जन करें। दूबघास की कूची से मार्जन करें।

हवन सामग्री- त्रिमधुसिक्त दूबघास की आहुतियाँ या केवल तिल (त्रिमधुसिक्त) का शाकल्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९- केतुग्रह अनुष्ठान विधि

केतुमन्त्रः - ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याअपेशसे समुषद्भिरजायथाः।

केतुगायत्री - ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नोः केतुः प्रचोदयात्।।

एकाक्षरी बीजमन्त्र - ॐ कें केतवे नमः।

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

जपसंख्या- १७000, सप्तदशसहस्राणि।

माला- लहसुनिया रत्न की या रुद्राक्ष की।

आसन- काला कंबल।

अनेकरूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्रशः।।
उत्पात रूपी घोरश्च पीड़ा दहतु में शिखी।।

केतु ग्रह की अनुष्ठान विधि में तद्दशांश पद्धति लागू होती है। यथा- सत्तरह हजार मंत्रों का जप। सत्तरह सौ मंत्रों से हवन। एक सौ सत्तर मंत्रों द्वारा तर्पण। सत्तर मंत्रों से मार्जन। दो ब्राह्मणों का भोजन।

राहुग्रह की शांति के लिए तांत्रिक मंत्र से अनुष्ठान करें। तर्पण मंत्र- **ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः तर्पयामि।** तर्पण पितृतीर्थ से करें। तर्पण सामग्री- **कुशा, तिल-जौ-चावल- जल।**

मार्जन मंत्र- ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः मार्जयामि। इस मंत्र से मार्जन हवन कुण्ड की अग्नि में करें और भेंस या बकरी के दुग्ध से करें। दूबघास की कूची से मार्जन करें।

हवन सामग्री- त्रिमधु सिक्त, ताजी कुशा की आहुतियाँ या तिलादि मिश्रित शाकल्य की आहुतियाँ

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पञ्चम्-अध्याय

सर्वतोभद्र स्थापनादि व हवन

[सर्वतोभद्र सृष्टि के रचयिता आदि देव ब्रह्माजी का पीठ है। कुछ पंडितजन इसे विष्णु-पीठ या शिवपीठ मान कर पूजा करा देते हैं। मूलतः सर्वतोभद्र मण्डल ब्रह्ममण्डल है। अतः इस पीठ के केन्द्रस्थ देता ब्रह्माजी हैं। वे अपनी संतान परम्परा, देवगणों, देवर्षि, ऋषिकुल तथा अन्य ब्रह्माण्ड मण्डल के साथ इसमें विराजते हैं।

यह सभी यज्ञों एवं सभी पूजाओं में पूजनीय है और ब्रह्माजी का यह पीठ सभी यज्ञों में हवनीय है।]

१- सर्वतोभद्र-पीठ रचना चित्र

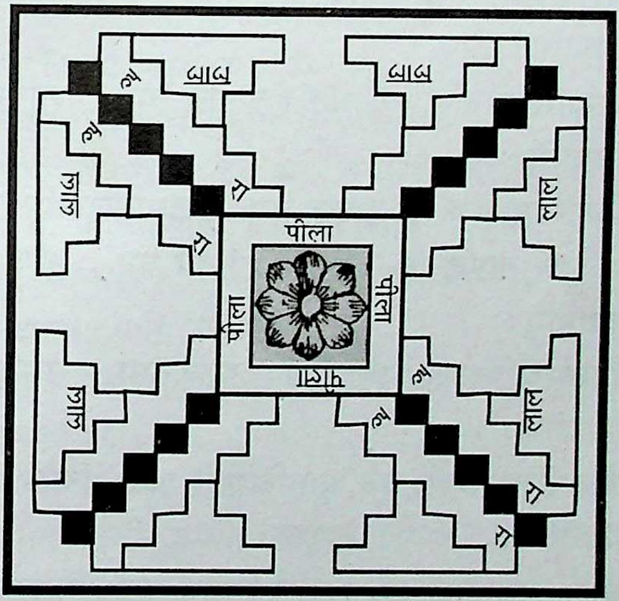

२- सर्वतोभद्र-पीठ रचनाविधि

प्रागुदीच्यं गता रेखाः कुर्यादेकोन-विंशतिः।
खण्डेन्दुस्त्रिपदः श्वेतः पञ्चभिः कृष्णशृङ्खलाः।।1।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीलैकादश वल्ली तु भद्रं रक्तं पदैर्नव।
चतुर्विंशत् सिता वापी परिधिः पीतविंशतिः।।2।।
मध्ये षोडशभिः कोष्ठेः रक्तं पद्मं सकर्णिकम्।
परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्त्वं रजस्तमः।।3।।
तन्मध्ये स्थापयेद् देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान्।।4।।

३- संकल्प (पूर्ववत करें)

४- आवाहन-स्थापनादि (नामाऽनुक्रमेण)

१. (कर्णिका बिन्दुमध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

२. (उत्तरेवाप्याम्) ॐ भू0 सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।

३. (ईशान्यांखण्डेन्दौ) ॐ भू0 ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

४. (पूर्वेवाप्याम्) ॐ भू0 इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि

५. (आग्नेय्यां खण्डेन्दौ) ॐ भू0 अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

६. (दक्षिणेवाप्याम्) ॐ भू0 यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

७. (नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ) ॐ भू0 निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

८. (पश्चिमे वाप्याम्) ॐ भू0 वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

९. (वायव्यां खण्डेन्दौ) ॐ भू0 वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१०. (वायु-सोमयोर्मध्ये) ॐ भू0 अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि।

११. (सोमेशानयोर्मध्ये) ॐ भू0 एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

१२. (ईशानेन्द्रमध्ये) ॐ भू0 द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।

१३. (इन्द्राग्निमध्ये) ॐ भू0 अश्विन्यां नमः, आश्विनी आवाहयामि स्थापयामि।

१४. (अग्नि-यममध्ये) ॐ भू0 स-पैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, स-पैतृकविश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि।

१५. (यम-निर्ऋतिमध्ये) ॐ भू0 सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।

१६. (निर्ऋति-वरुणमध्ये) ॐ भू0 अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि।

१७. (वरुण-वायुमध्ये) ॐ भू0 गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

१८. (ब्रह्म-सोममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा) ॐ भू0 स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

१९. (तत्रैव स्कन्दोत्तरतः) ॐ भू0 वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

२०. (तदुत्तरे) ॐ भू0 शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि।

२१. (अनेनैव तदुत्तरे) ॐ भू0 महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि।

२२. (ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भू0 दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः, दक्षादि-सप्तगणानावाहयामि स्थापयामि।

२३. (ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्) ॐ भू0 दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२४. (तत्पूर्वे) ॐ भू० विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

२५. (ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भू० स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

२६. (ब्रह्म-यममध्ये वाप्याम्) ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।

२७. (ब्रह्म-निर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भू० गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

२८. (ब्रह्म-वरुणमध्ये वाप्याम्) ॐ भू० अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि।

२९. (ब्रह्म-वायुमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भू० मरुद्भ्यो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि।

३०. (ब्रह्मणः पादमूले) ॐ भू० पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

३१. (तदुत्तरे) ॐ भू० गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि।

३२. (तदुत्तरे) ॐ भू० सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।

३३. (कर्णिकापरिधौ) ॐ भू० सुमेरवे नमः, सुमेरुमावाहयामि स्थापयामि।

३४. (ततः बाह्यपरिधौ सोमादिक्रमेण) ॐ भू० गदाय नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि।

३५. (ईशान्याम्) ॐ भू० त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

३६. (पूर्वे) ॐ भू० वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

३७. (आग्नेय्याम्) ॐ भू० शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३८. (दक्षिणे) ॐ भू0 दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

३९. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भू0 खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

४०. (पश्चिमे) ॐ भू0 पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि।

४१. (वायव्याम्) ॐ भू0 अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।

४२. (तद्बाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण) ॐ भू0 गौतमाय नमः, गौतमावाहयामि स्थापयामि।

४३. (ईशान्याम्) ॐ भू0 भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

४४. (पूर्वे) ॐ भू0 विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

४५. (आग्नेय्याम्) ॐ भू0 कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

४६. (दक्षिणे) ॐ भू0 जमदग्ने नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

४७. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भू0 वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

४८. (पश्चिमे) ॐ भू0 अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

४९. (वायव्ये) ॐ भू0 अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

५०. (तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण) पूर्वे ॐ भू0 ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

५१. (आग्नेय्याम्) ॐ भू0 कौमार्य्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

५२. (दक्षिणे) ॐ भू0 ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

५३. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भू0 वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५४. (पश्चिमे) ॐ भू0 चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

५५. (वायव्ये) ॐ भू0 वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

५६. (उत्तरे) ॐ भू0 माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

५७. (ईशान्याम्) ॐ भू0 वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।

५- प्राण-प्रतिष्ठा

(ब्रह्मास्थान पर कुशाग्र-लगाकर)

ॐ मनोजूतिं जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिः यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञः समिमं दधातु। विश्वेदेवा सऽइह मादयान्तामो प्रतिष्ठ।।

(आवाहन-स्थापन के बाद इन सभी देवताओं की **पूजयामि तर्पयामि** कहकर चन्दन-पुष्पादि से पूजा करनी चाहिए।)

६- पूजा का मूल मंत्र - ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो नमः

७- षोडशोपचार पूजा

आसन- विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरण संयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व परमेश्वर। ॐ पुरुषः एवेदः सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो नमः आसनं समर्पयामि। आसनार्थेऽक्षतान् पुष्पादि समर्पयामि।

पाद्य- ॐ एतावनस्य महमातो ज्यायाँश्च पुरुषः पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य - ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत पुरुषः पादोऽस्यैहा भवत् पुनः ततो विष्वङ् व्यक्रामत् शासनानशने अभि

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचमन- ॐ ततो विराड्जायत विराजोऽधिपूरुषः स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरुः।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः आचमनं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान - ॐ पञ्चनद्य सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे अभवत् सरित्।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान - ॐ आपोहिष्टा मयोभवः तानः ऊर्जेदधातन। महेरणायचक्षसे योवः शिवतमोरसः। तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः तस्माअऽरंग मामवः। यस्यक्षयाया जिन्वथ आपोजनयथा च नः।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः शुद्धोक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र - ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगत्स उश्रेयान भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽउन्नयति स्वाध्यो मनसा देवयन्त।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः दिव्यवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि। वस्त्र अभावे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र - ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत् स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपः संव्ययस्व विभावसो।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः दिव्य उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि। अलंकरणार्थे - अक्षतान् समर्पियामि।

यज्ञोपवीत - ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेः यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्जशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्ध - ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वां इन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः। त्वांमोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद् अमुच्यत।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षत् - ॐ अक्षन्न मीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विप्रा नविष्ठयामती योजान् विन्द्र ते हरी।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो: नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प वा पुष्पमाला - ॐ औषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवती प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्त्वरीवीरुधः पारयिष्ववः।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो: नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

अभावे - पत्रं-पुष्पं समर्पयामि।

दुर्वाङ्कुर - ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो: नमः दुर्वाङ्कुरं समर्पयामि।

धूप - ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धर्वतं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमः सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देव हूतम्।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो: नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीप - ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा।। सूर्योज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।। अर्ग्निवर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा।। सूर्योवर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा।। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योति स्वाहा।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो: नमः दीपं समर्पयामि।

नैवेद्य - ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षः शीष्णोः द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यांभूमिः दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँन् अकल्पयन्।। ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। (धेनुमुद्राप्रदश्य, वं वं वं अमृतबीजमंत्र उच्चार्य)

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो: नमः नैवेद्य निवेदयामि-मध्ये-मध्ये पानीयम् तत्पश्चात् उत्तरापोषणं समर्पयामि।

ताम्बूलवीटक - ॐ यत्पुरुषेण हविषादेवायज्ञं अतन्वत। वसन्तीऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइघ्म शरद्धविः।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्यो: नमः ताम्बूलवीटकं समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फल - ॐ याः फलनीर्याऽफलाऽपुष्पा याश्च पुष्पणीः वृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चंत्वः हसः।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः ऋतुफलं वा नारिकेलफलं समर्पयामि।

दक्षिणाः - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्। सदधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि - ॐ नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिः मयादत्ता गृहाण परमेश्वर।।

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः पुष्पाञ्जलि समर्पयामि।

प्रदक्षिणा - **ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे-पदे।।**

ॐ ब्रह्मादि देवेभ्योः नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थना -

नमो ब्रह्मण्य देवाय भगवतस्त्रिभुवनगुरोः।
अदिपुरुषसृष्टिकर्ता हंसयानेन संयुत।।
नमः आद्याय बीजाय वेदविज्ञानमूर्तये।
प्राणेन्द्रियमनोबुद्धिविकारैः व्यक्तिमीयुषे।।
अनन्ताव्यक्तरूपेण येनेदमखिलं ततम्
चिद्शक्तियुक्ताय तस्मै श्रीब्रह्मणे नमः।।
कल्पान्ते कालसृष्टेन योऽन्धेन तमसाऽऽवृतम्।
अनन्ताव्यक्तरूपेण येनेदमखिलं ततम्।
चिद्शक्तियुक्ताप तस्मै ब्रह्मणे नमः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८- सर्वतोभद्र-हवन मंत्र

यज्ञकर्ता निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से घृत की एक-एक आहुति प्रदान कराएँ और यजमान-पत्नी शाकल्य की आहुति प्रदान करे।

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २. ॐ सोमाय स्वाहा। ३. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्राय स्वाहा। ५. ॐ अग्नये स्वाहा। ६. ॐ यमाय स्वाहा। ७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ८. ॐ वरुणाय स्वाहा। ९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ अष्टवसुभ्यो स्वाहा। ११. ॐ एकादशरुद्रेभ्योः स्वाहा। १२. ॐ द्वादशादित्येभ्योः स्वाहा। १३. ॐ अश्विनीभ्यां स्वाहा। १४. ॐ सपैतृकविश्वैभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। १५. ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। १६. ॐ नागेभ्यः स्वाहा। १७. ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। १८. ॐ स्कन्दाय स्वाहा। १९. ॐ वृषभ नन्दीश्वराय स्वाहा। २०. ॐ शूलाय स्वाहा। २१. ॐ महाकालाय स्वाहा। २२. ॐ दक्षादिभ्यः स्वाहा। २३. ॐ दुर्गायै स्वाहा। २४. ॐ विष्णवे स्वाहा। २५. स्वधायै स्वाहा। २६. ॐ मृत्युरोगेभ्य स्वाहा। २७. ॐ गणपतये स्वाहा। २८. ॐ अद्भ्य स्वाहा। २९. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा। ३०. ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ३१. ॐ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा। ३२. ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ३३. ॐ मेरवे स्वाहा। ३४. ॐ गदायै स्वाहा। ३५. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ३६. ॐ बज्राय स्वाहा। ३७. ॐ शक्तये स्वाहा। ३८. ॐ दण्डाय स्वाहा। ३९. ॐ खड्गाय स्वाहा। ४०. ॐ पाशाय स्वाहा। ४१. ॐ अङ्कुशाय स्वाहा। ४२. ॐ गौतमाय स्वाहा। ४३. ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। ४४. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ४५. ॐ कश्यपाय स्वाहा। ४६. ॐ जमदग्नये स्वाहा। ४७. ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ४८. ॐ अत्रये स्वाहा। ४९. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ५०. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। ५१. ॐ कौमार्यै स्वाहा। ५२. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। ५३. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ५४. ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ५५. वैष्णव्यै स्वाहा। ५६. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ५७. ॐ वैनायक्यै स्वाहा।

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षष्ठ-अध्याय
भगवान् विष्णु-स्थापनादि व हवन

[भवागन् विष्णु सर्वेश्वर हैं। वे ब्रह्म हैं। इनके यज्ञों में मूर्तिपूजा के साथ भी हवन किया जाता है और यंत्र-पीठ रचना के द्वारा भी हवन पूर्ण होते हैं। इस ग्रंथ में दोनों ही विधियों को दिया गया है। यंत्र-पीठ की पूजाविधि सनातन व पौराणिक है।]

१- पीठ-रचना चित्र

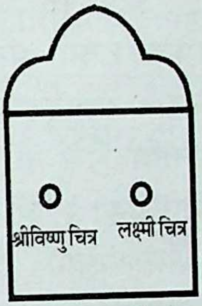

पीठ पर लक्ष्मी नारायण की प्रतिमा स्थापित कर दें।

२- संकल्प पूर्ववत करें

३- भगवान् विष्णु की मूर्ति-पूजा विधि

ध्यान-

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुवन्ति दिव्यैस्तवैः।
वेदैः सांग-पदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः।।
ध्यानावस्थित तद् गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनौ।
यास्यान्तं न विदुः सुरासुर गणाः देवाय तस्मै नमः।।१।।
शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभाङ्गम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्।।२।।

४- मूर्ति में देव-आवाहन

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् स भूमिॅ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म संयोग योगपद्मपीठात्मने नमः, ॐ विष्णवे नमः अस्मिन मूर्ते आवाह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि-

५- प्राण-प्रतिष्ठा

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञं। समिमं दधातु विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो ३ँप्रतिष्ठ।।

प्राणसूक्त

१. ॐ पाणे रक्षति विश्वमेजत्। इर्यो भूत्वा बहुधा बहूनि। स इत्सर्व व्यान शे। यो देवषु विभूरन्तः। आवृदूदात्क्षेत्रियध्वगद्धषा। तमित्प्राणं मनमोपिशिक्षत। अग्रं देवानामिदभत्तु नो हविः। मनसश्चित्तेदम्। भूतं भव्यं च गुप्यते। तद्धि देवेष्वग्रियम्। २. आ न एतु पुरश्चरम्। सह देवैरिमँ हवम्। मनश्श्रेयसि श्रेयसि। कर्मन् यज्ञपतिं दधत्। जुषर्ता मे वागिदहविः। विराड् देवी पुरोजनित्रे। सा नो विराडनपस्फुरन्ती। ३. वाग्देवी जुषतामिद ँहविः। चक्षुर्देवानां ज्योषिरमृते न्यक्तम्। अस्य विज्ञानाय बहुधा निधीयते। तस्य सुम्नमशीमहि। मानो हासीद्विचक्षणम्। आयुरिन्नः प्रतीर्यताम्। अनन्धाश्चक्षुषा वयम्। जीवा ज्योतिरशी महि। सुवज्योंतिरुतामृतम्। श्रोत्रेण भद्रमुत श्रृण्वन्ति सत्यम्। श्रोत्रेण वाचं बहुधोद्यमानाम्। श्रोत्रेण मोदश्च श्रूयते। श्रोत्रेण सर्वा दिश आ शृणोमि। येन प्राच्या उत दक्षिणा। प्रतीच्यै दिशश्रृणवन्त्युत्तरात्। तदिच्छ्रोत्र बहुधोद्यामानम्। आरान्न नेमिः परि सर्व वभूव। अग्रियमनपस्फुरन्ती सत्यर्ठ० सप्त च।। (तै.ब्रा. २।१पृ० २२५-२२९)

उपरोक्त मंत्रों के उपरान्त श्री विष्णुभगवान् की मूर्ति में नेत्रोन्मीलन करें-

६- नैत्रोन्मीलन

देवता की मूर्त के मुख और नेत्र में अनामिका से (शहद एवं घृत) इन दोनों को मिलाकर (चाँदी की कटोरी में मिश्रित कर) निम्न आधे वैदिक मन्त्र का उच्चारण करके नेत्र चिह्नित करें-

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणास्याग्नेः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७-संकल्प यथा - ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः................

७- षोडशोपचार-पूजा

आसनम् - ॐ पुरुष एवेदर्ठ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

पाद्य - एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

अर्घ्य - ॐ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।

आचमनीय - ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।

स्नान - ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभूतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।

पञ्चामृतस्नान-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

शुद्धोदकस्नान- ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः। श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णाया मा अविलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः।।

वस्त्र- ॐ तन्तुसंतान सन्नद्धै शुक्लैः रक्तैस्तु पीतकैः।
प्रतिमाजल विन्दूं स्तान् शोषयामि सुवस्त्रकैः।।

उपवस्त्र- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

यज्ञोपवीतम्- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

चन्दन - ॐ त्वाङ्गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्वृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अक्षत - ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत: अस्तोषतस्व भानवो विप्रान विष्ठ्यामती योजान्विद्रते हरी।

पुष्पमाला - ॐ ओषधीः प्रतिमो दध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पार विष्णवः।।

सिन्दूर - ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुंज्याया हेतिम्परि वाधमान: हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्पुमाठं० सम्परिपातु विश्वतः।

आभूषण - ॐ स्वर्णधर्मः स्वाहा, स्वर्णार्कः स्वाहा, स्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा, स्वर्ण सूर्यः स्वाहा।।

धूपम् - ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान् धूर्व तितं धूर्वयं वयन्धूर्वाम: देवानामसि वह्नितमं ठं० सस्नितमम् पप्रितमंजुष्टतमं देवहूतम्।

दीप - ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

नैवेद्य - ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ठं० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ ३ अकल्पयन्।

ऋतुफल - ॐ याः फलनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।। बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुश्चन्त्व ठं० हसः।

ताम्बूल - ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णत्र वेरनुवाति प्रगर्द्धिन: श्येनस्येवद्ध्रजतो अङ्कसम्परि दधिक्राव्याः सहोर्ज्जा तरित्रतः स्वाहा।

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।

मन्त्रपुष्पांजलि- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धम्माणि प्रथमान्यासन तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

प्रदक्षिणा - ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तचाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्।।卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवान् विष्णु की पीठ पूजा-विधि

१- श्रीविष्णुपीठ - चित्र

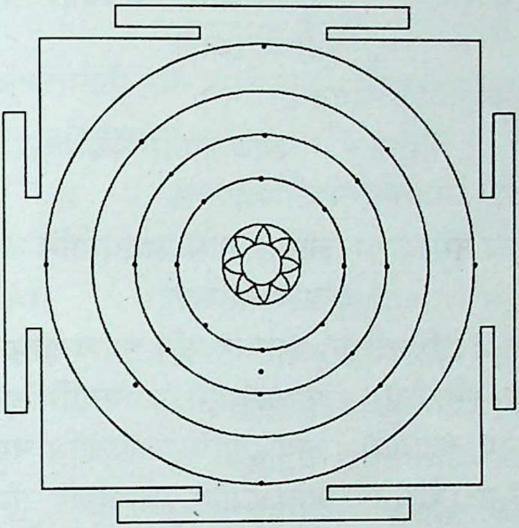

[रोली-चंदन-हल्दी आदि से चौकी पर बिछे हुए वस्त्र पर अनामिका से कर्णिका बनाकर अष्टदल कमल का निर्माण करें, फिर उसके चारों ओर गोलाकार चार रेखाएँ खींचकर चार वृत्त बना दें। तत्पश्चात् चौकोर भूपुर का निर्माण करें।]

२-भगवान् विष्णु का योगपद्मपीठ(श्रीविष्णुपीठ)

इस योगपद्मपीठ पर श्रीविष्णु भगवान् की पूजा करनी चाहिए। यह भगवान् श्रीहरि का दिव्य पीठ (स्थान) माना जाता है। यह पीठ भगवान् श्रीहरि का साक्षात् स्वरूप है। सत्यनारायण की कथा में, एकादशी उद्यापन में, श्रीमद्भागवतादि में भी इसी पीठ की पूजा की जाती है।

३- पीठस्थ श्रीविष्णु परिवार और आवरण (आवाहन-स्थापन)

सिंहासनोपरि

ॐ आधारशक्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ मूलप्रकृत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ क्षीरसिन्धवे नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ श्वेतद्वीपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

श्वेतद्वीपोपरि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ कल्पवृक्षाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ कामधेनवे नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ चिन्तामणये नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

कल्पवृक्षतले

ॐ रत्नोज्ज्वलमहामणि-मण्डपाय नमः
आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

रत्नमण्डपतले

ॐ सुवर्णमंचाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

मंचस्थचतुष्पादे

ॐ धर्माय नमः (अग्निकोणे) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ ज्ञानाय नमः (नैर्ऋत्ये) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ वैराग्याय नमः (वायवे) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ ऐश्वर्याय नमः (ईशाने) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

मंचस्य चतुष्पक्षे

ॐ अधर्माय नमः (पूर्वे) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ अज्ञानाय नमः (दक्षिणे) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ अवैराग्याय नमः (पश्चिमे) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
ॐ अनैश्वर्याय नमः (उत्तरे) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

सुवर्णमयमंचपटले

ॐ ईश्वरतत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

ईश्वरतत्त्वोपरि

ॐ शेषनागाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

शेषनागस्य कुंडलीमध्ये

(ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्व-भूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म-संयोग-योगपद्मपीठाय नमः) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

योगपद्मपीठमूले

ॐ सच्छक्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

योगपद्मदण्डे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ आनन्दाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

योगपद्मकेसरे

ॐ षड्विकाराय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

योगपद्ममकरन्दे

ॐ ज्ञानवैराग्यसहितभक्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

योगपद्म-अष्टदले पूर्वादिक्रमेण

१. ॐ विमलायै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
२. ॐ उत्कर्षिण्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
३. ॐ ज्ञानायै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
४. ॐ क्रियायै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
५. ॐ योगायै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
६. ॐ प्रह्वै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
७. ॐ सत्यायै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
८. ॐ ईशानायै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
९. ॐ अनुग्रहायै नमः (पद्ममध्ये) आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

देवताग्रे

१. ॐ आत्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
२. ॐ अन्तरात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
३. ॐ परमात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
४. ॐ ज्ञानात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

देवपृष्ठे

१. ॐ सताय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
२. ॐ रजसे नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
३. ॐ तमसे नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
४. ॐ महामोहाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

(इस योगपद्मपीठ के बाहर पाँच आवरण होते हैं। उनमें श्रीहरि का परिवार विराजता है। चार आवरण वृत्तों में और पाँचवाँ आवरण भूपुर में निहित हैं।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम आवरण

पूर्वादिक्रमेण प्रथमवृत्ते

१. ॐ सुदर्शनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
२. ॐ पाञ्चजन्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
३. ॐ नन्दकखड्गाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
४. ॐ कौमोदकीगदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
५. ॐ शार्ङ्गधनुषे नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
६. ॐ दिव्यबाणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
७. ॐ हलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
८. ॐ मुशलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

द्वितीय आवरण

पूर्वादिक्रमेण द्वितीयवृत्ते

१. ॐ नंदाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
२. ॐ सुनन्दाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
३. ॐ चण्डाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
४. ॐ प्रचण्डाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
५. ॐ बलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
६. ॐ महाबलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
७. ॐ कुमुदाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
८. ॐ कुमुदेक्षणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
९. ॐविनितानन्दनगरुड़ायनमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

तृतीय आवरण

आग्नेयादि- दिशाक्रमेण

१. ॐ दुं दुर्गायै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
२. ॐ गं गणेशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
३. ॐ विं विश्वक्सेनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि
४. ॐ व्यां व्यासाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ आवरण

पूवादि-दिशाक्रमेण

१. ॐ गुरुभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
२. ॐ परमगुरुभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
३. ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
४. ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

पञ्चम आवरण

पूवदि-दिशा-क्रमेण

१. ॐ इन्द्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
२. ॐ अग्नये नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
३. ॐ यमाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
४. ॐ निर्ऋत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
५. ॐ वरुणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
६. ॐ वायवे नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
७. ॐ कुबेराय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
८. ॐ ईशानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
९. ॐ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
(पूर्व-ईशानमध्ये)
१०. ॐ अनन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।
(नैर्ऋत्य-पश्चिममध्ये)

४- प्राण-प्रतिष्ठा

ॐ मनोजूतिं जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिः यज्ञं इमं तनोत्वरिष्टं यज्ञः समिमं दधातु। विश्वेदेवा सऽइह मादयान्तामो प्रतिष्ठ।।

प्राण प्रतिष्ठोपरान्त - उपरोक्त प्रत्येक के साथ गंधादि से पूजयामि तर्पयामि लगाकर पूजन करें। प्रत्येक आवरण के उपरान्त पुष्पाक्षतादि समर्पित करके निम्नश्लोक बोलें -

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अभीष्टं सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम्।।

(उक्त श्लोक में प्रथम आवरण है, तो प्रथम, द्वितीय है तो द्वितीय "अमुक" की जगह लगा दें।)

५- षोडशोपचार पूजा -

ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग योगपद्मपीठात्मने नमः- मंत्र से या पुरुषसूक्त से करें (१) पाद्य, (२) अर्घ्य, (३) आचमन, (४) स्नान, (५) वस्त्र, (६) उपवस्त्र, (७) यज्ञोपवीत (८) गंध (९) अक्षत, (१०) पुष्पमाला, (११) दुर्वांकुर, (१२) नानापरिमलद्रव्य, (१३) धूप, (१४) नैवेद्य, (१५) फल, (१६) जल, (१७) ताम्बूल, (१८) द्रव्य-दक्षिणा, (१९) प्रदक्षिणादि क्रम से पूजा करें।

६- प्रार्थना-

सच्चिदानन्द रूपाय विश्वोत्पत्त्यादि हेतवे।
तापत्रय विनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नमः।।
यथा हि स्कन्धशाखानां तरोर्मूलावसेचनम्।
एवं आशधनं विष्णोः सर्वेषां आत्मनश्च हि।।
नमस्तुभ्यं अनन्ताय दुर्वितक्र्यात्मकर्मणे।
निर्गुणाय गुणेशाय सत्वस्थाय च साम्प्रतम्।।
तपस्विनो दानपरा यशिस्विनो।
मनस्विनो मन्त्रविदः सुमङ्गलाः।।
क्षेमं न विन्दन्ति विना यदर्पणं।
तस्मै सुभद्र श्रवसे नमो नमः।।
श्रियः पतिः यज्ञपतिः प्रजापतिः
धियां पतिः लोकपतिः धरापतिः।
पतिर्गतिश्चान्धक वृष्णिसात्वतां
प्रसीदतां मे भगवान् सतां पति।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७- श्री विष्णुपीठ

परिवार-हवन-मंत्र

(१) ॐ आधारशक्त्यै नमः स्वाहा। (२) ॐ पृथिव्यै नमः स्वाहा। (३) मूल प्रकृत्यै नमः स्वाहा। (४) ॐ क्षीरसिन्धवे नमः स्वाहा। (४) ॐ श्वेतद्वीपाय नमः स्वाहा। (५) ॐ कल्पवृक्षाय नमः स्वाहा। (७) ॐ कामधेनवे नमः स्वाहा। (८) ॐ चिन्तामणये नमः स्वाहा। (९) ॐ रत्नोज्वल महामणिमण्डपाय नमः स्वाहा। (१०) ॐ सुवर्ण मञ्चाय नमः स्वाहा। (११) ॐ धर्माय नमः स्वाहा। (१२) ॐ ज्ञानाय नमः स्वाहा। (१३) ॐ वैराग्याय नमः स्वाहा। (१४) ॐ ऐश्वर्याय नमः स्वाहा। (१५) ॐ अधर्माय नमः स्वाहा। (१६) ॐ अज्ञानाय नमः स्वाहा। (१७) ॐ अवैराग्याय नमः स्वाहा। (१८) ॐ अनैश्वर्याय नमः स्वाहा। (१९) ॐ ईश्वर तत्त्वाय नमः स्वाहा। (२०) ॐ शेषनागाय नमः स्वाहा। (२१) ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग योगपद्मपीठाय नमः स्वाहा। (२२) ॐ सत् शक्त्यै नमः स्वाहा। (२३) ॐ आनन्दाय नमः स्वाहा। (२४) ॐ षड्विकाराय नमः स्वाहा। (२५) ॐ ज्ञानाय नमः स्वाहा। (२६) ॐ वैराग्याय नमः स्वाहा। (२७) ॐ भक्त्यै नमः स्वाहा। (२८) ॐ विमलायै नमः स्वाहा। (२९) ॐ उत्कर्षिण्यै नमः स्वाहा। (३०) ॐ ज्ञानायै नमः स्वाहा। (३१) ॐ क्रियायै नमः स्वाहा। (३२) ॐ योगायै नमः स्वाहा। (३३) ॐ प्रह्यै नमः स्वाहा। (३४) ॐ सत्यायै नमः स्वाहा। (३५) ॐ ईशानायै नमः स्वाहा। (३६) ॐ अनुग्रहायै नमः स्वाहा। (३७) ॐ आत्मने नमः स्वाहा। (३८) ॐ अन्तरात्मने नमः स्वाहा। (३९) ॐ परमात्मने नमः स्वाहा। (४०) ॐ ज्ञानात्मने नमः स्वाहा। (४१) ॐ सत्वाय नमः स्वाहा। (४२) ॐ रजसे नमः स्वाहा। (४३) ॐ तमसे नमः स्वाहा। (४४) ॐ महामोहाय नमः स्वाहा। (४५) ॐ सुदर्शनाय नमः स्वाहा। (४६) ॐ पाञ्चजन्याय नमः स्वाहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४७) ॐ नन्दक खड्गाय नमः स्वाहा। (४८) ॐ कौमोदकी गदायै नमः स्वाहा। (४९) ॐ शार्ङ्गधनुषे नमः स्वाहा। (५०) ॐ दिव्य वाणाय नमः स्वाहा। (५१) ॐ हलाय नमः स्वाहा। (५२) ॐ मुसलाय नमः स्वाहा। (५३) ॐ नन्दाय नमः स्वाहा। (५४) ॐ सुनन्दाय नमः स्वाहा। (५५) ॐ चण्डाय नमः स्वाहा। (५६) ॐ प्रचण्डाय नमः स्वाहा। (५७) ॐ बलाय नमः स्वाहा। (५८) ॐ महाबलाय नमः स्वाहा। (५९) ॐ कुमुदाय नमः स्वाहा। (६०) ॐ कुमुदेक्षणाय नमः स्वाहा। (६१) ॐ विनितानंदन गरुड़ाय नमः स्वाहा। (६२) ॐ दुं दुर्गायै नमः स्वाहा। (६३) ॐ गं गणेशाय नमः स्वाहा। (६४) ॐ विं विश्वक्सेनाय नमः स्वाहा। (६५) ॐ व्यां व्यासाय नमः स्वाहा। (६६) ॐ गुरुभ्यो नमः स्वाहा। (६७) ॐ परम गुरुभ्यो नमः स्वाहा। (६८) ॐ परात्पर गुरुभ्यो नमः स्वाहा। (६९) ॐ परमेष्ठी गुरुभ्यो नमः स्वाहा। (७०) ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा। (७१) ॐ अग्नये नमः स्वाहा। (७२) ॐ यमाय नमः स्वाहा। (७३) ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा। (७४) ॐ वरुणाय नमः स्वाहा। (७५) ॐ वायवे नमः स्वाहा। (७६) ॐ कुबेराय नमः स्वाहा। (७७) ॐ ईशानाय नमः स्वाहा। (७८) ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा। (७९) ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा। (८०) ॐ नमोभगवतेविष्णवे- सर्वभूतात्मनेवासुदेवाय सर्वात्मसंयोग योगपद्मपीठात्मने नमः स्वाहा।

८- वैदिक पुरुष सूक्त से श्रीविष्णु-हवन

(१) ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिः सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा।।

(२) ॐ पुरुषः एवेदः सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्त्व स्येशानो यदन्नेनातिरोहति स्वाहा।।

(३) ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि स्वाहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४) ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि स्वाहा।।

(५) ॐ ततो विराड्जायत विराजो अधि पूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः स्वाहा।

(६) ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च्च ये स्वाहा।।

(७) ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे। छन्दा · सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत स्वाहा।।

(८) ॐ तस्मादश्वाऽजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽ अजावयः स्वाहा।।

(९) ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन्न्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवाऽअजयन्त साद्धयाऽऋषयश्च्च ये स्वाहा।।

(१०) ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीन्त्किं बाहूकिमूरूपादा ऽ उच्चेते स्वाहा।।

(११) ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या · शूद्रो ऽ अजायत स्वाहा।।

(१२) ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत। श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च्च मुखादग्निरजायत स्वाहा।।

(१३) ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षः शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्पयन् स्वाहा।।

(१४) ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्माऽ३ध्मः शरद्धविः स्वाहा।।

(१५) ॐ सुप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तः समिध÷कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबघ्नन्न्पुषं पशुम् स्वाहा।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१६) ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमान÷ सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः स्वाहा।।

(१७) ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यैरसाच विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्त्यस्य देवत्त्वमाजानमग्रे स्वाहा।।

(१८) ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वातिऽमृत्यमेति नाऽन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय स्वाहा।।

(१९) ॐ प्रजापतिश्चरति गर्ब्भे ऽअन्तरजायमानो बहुधा विजायते। तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्त्युर्ब्भुवनानि विश्वा स्वाहा।।

(२०) ॐ यो देवेभ्य ऽआतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये स्वाहा।।

(२१) ॐ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा ऽअग्रे तदब्रुवन। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे स्वाहा।।

(२२) ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म ऽइषाण स्वाहा।।

९- श्री विष्णुअवतार मंत्र - हवन

(१) ॐ पाराशरपुत्राय श्रीकृष्णद्वैपायनाय नमः स्वाहा। (२) ॐ गन्धर्व पतये नारदाय नमः स्वाहा। (३) ॐ नराय नमः स्वाहा। (४) ॐ नारायणाय नमः स्वाहा। (५) ॐ भगवान् वाराहाय नमः स्वाहा। (६) ॐ भगवान् आदि कच्छपाय नमः स्वाहा। (७) ॐ वैद्यराज भगवान धन्वन्तरये नमः स्वाहा। (८) ॐ नृसिंहाय नमः स्वाहा। (९) ॐ वामनाय नमः स्वाहा। (१०) ॐ परशुरामाय नमः स्वाहा। (११) ॐ श्रीरामाय नमः स्वाहा। (१२) ॐ श्रीकृष्णाय नमः स्वाहा। (१३) ॐ भगवान बुद्धाय नमः स्वाहा। (१४) ॐ भगवान् कल्कये नमः स्वाहा।

१०- श्री विष्णु हवन के श्रेष्ठ मंत्र-द्वादशाक्षर या अष्टदशाक्षर

(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय और क्लीं कृष्णाय गोविद्वाय गोपीजन बल्ल्भाय स्वाहा मंत्रों से प्रायः विष्णु यज्ञ होते हैं। बड़े-बड़े विष्णु-शतनामस्त्रोत्र व विष्णु सहस्रनाम स्त्रोत्र से भी हवन किये जाते हैं।) 卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सप्तम्-अध्याय

भगवान् शिव स्थापनादि व हवन

१- शिवलिंग - विग्रह चित्र

२- भगवान् श्रीशिव स्थापनादि

श्रीभवानीशंकर या रुद्र उपसना में दो प्रकार की प्रतिमाएँ पूजित होती हैं।
(१) स्वगृहदेवालय में स्थापित प्रतिमा (शिवलिंग, या विग्रह आदि)
(२) मंदिर या देवालय में स्थापित प्राण प्रतिष्ठित शिव प्रतिमा (शिव लिंग आदि)

प्रथम प्रकार की शिवप्रतिमाएँ प्राणप्रतिष्ठित नहीं होती हैं। यह स्वगृह में स्थापित होती हैं। इस प्रकार के शिवलिंग की पूजा करते समय- इस प्रतिमा में आवाहन विधि से भगवान् रुद्र की स्थापना, प्राण-प्रतिष्ठा आदि कर लेना अनिवार्य होता है। ऐसी सामान्य प्रतिमा में- (१) शिव का आवाहन (२) आसन-अर्पण (३) प्राण-प्रतिष्ठा करने के बाद रुद्राष्टध्यायी के मंत्रों से विधिपूर्वक अभिषेक करना अनिवार्य है। तत् पश्चात् भगवान् रुद्र की षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए; लेकिन देवालय में स्थापित शिवलिंग-विग्रह में सीधे अभिषेक करके पूजा प्रारम्भ की जाती है। जैसा कि इस ग्रंथ में दिया गया है।

३- रुद्राभिषेक (रुद्राष्टाध्यायी द्वारा)

४- षोडशोपचार पूजा -

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीभवानीशङ्करदेवताभ्यो नमः, आचमनं हस्तप्रक्षालनं च समर्पयामि।

वस्त्र-अर्पण - ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्ठ०सिं जज्ञिरे तस्माद्यजस्तस्मादजायत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत अर्पण - ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽआजावयः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्ध-अर्पण - ॐ तं य्यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्नपुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षत् अर्पण - ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, आक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प अर्पण - ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्प्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्च्येते।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

बिल्व पत्र-अर्पण - ॐ शिवो भव प्प्रजाब्भ्यो मानुषीब्भ्यस्त्वमङ्गिरः। मा द्यावां पृथिवी ऽअभिशोचीर्मान्तरिक्षं मा व्वनस्पतीन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्य-अर्पण- ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्यायां हेतिं परिबाध मानः हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्प्रमान्यमार्ठ० सं परिपातु विश्वतः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपअर्पण - ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रो ऽअजायत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपअर्पण - ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, घृतपूरितनीराजनदीपं समर्पयामि।

नैवेद्य-अर्पण - धेनुमुद्रां प्रदश्य- ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष · शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिदशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२।। ऽअकल्पयन्।। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ भूर्भूवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, मध्ये मध्ये पानीयम् उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनम् आचमनीयं करोद्वर्तनार्थे चन्दनं च समर्पयामि।

मुखवासार्थे ताम्बूल अर्पण - ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

ऋतुफल अर्पण - याः फलिनीर्या ऽअफला ऽपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व्ठ० हसः।।

ॐ भूर्भूवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः ऋतुफलं समप्रियामि।

द्रव्य-समर्पण - हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि।

५- भगवान् शिव की वैदिक आरती

मन्त्रपुष्पाञ्जलि समर्पण - ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन्। हं नाकं माहिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्यः सन्ति देवाः। ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय। महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्व्वायुष आन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं पूजनोपरान्त समर्पयामि।

पूजनोपरान्त, विशेषाऽर्घ्यः -

रक्ष रक्ष महादेव! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरद! त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद!।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, विशेषाऽर्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना - भूत्यालेपनभूषितः प्रावलसन्नत्राग्नदापांकुरः।
कण्ठे पन्नग-पुष्पदाम-सुभगो गङ्गाजलैः पूरितः।।
ईषत्ताम्र-जटाऽग्र-पल्लवयुतो न्यस्तो जगन्मण्डपे।
शम्भुर्मङ्गलकुम्भतामुपगतो भूयात् सतां श्रेयसे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः, प्रार्थनां निवेदयामि।

६- क्षमा प्रार्थना -

आवाहनं न जानामि न जानामि तवाऽर्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर!।।

पूजाकर्म अर्पण - **अनेनाऽऽवाहनादि-षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन च यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पूजनाख्येन कर्मणा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीभवानीशङ्करदेवताः प्रीयन्तां न मम।**

७- भगवान् शिव (श्रीरुद्र) हवन - मंत्र

(रुद्राष्टाध्यायी द्वारा सम्पूर्ण हवन)

श्रीरुद्र यज्ञ के लिए लघु और विस्तृत दोनों ही प्रकार के विधान हैं। सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी के मंत्रों से भी रुद्रयज्ञ होता है। केवल पुरुष सूक्त से या मृत्युंजय मंत्र से लघुस्तरीय रुद्रयज्ञ मान्य है; लेकिन इस ग्रंथ में रुद्राष्टाध्यायी के मंत्रों के द्वारा रुद्रयज्ञ का विधान किया गया है।

ॐ गणनत्वा०......... स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके............. स्वाहा।
ॐ यञ्जाग्रतः (६मंत्र) स्वाहा। ॐ सहर्षशीर्षा०...... (१६ मंत्र) स्वाहा।
ॐ अद्भ्य सम्भृतः० (६ मंत्र) स्वाहा।
ॐ आशुः शिशानो० (१२ मंत्र) स्वाहा।
ॐ विब्भ्राड् वृहत्पिबतु० (१७ मंत्र) स्वाहा।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा।।१।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा।।२।।

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते व्विभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिर्ठ० सीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा।।३।।

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ. सुमना ऽअमन स्वाहा ।।४।।

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक्। अहींश्च्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वांश्च्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव स्वाहा।।५।।

ॐ असौ यस्ताम्म्रो ऽअरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्द्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषा ँ हेड ऽईमहे स्वाहा।।६।।

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपा ऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सः दृष्ट्टो मृडयाति नः स्वाहा।।७।।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये ऽअस्य सत्त्वानो हन्तेब्भ्यो ऽकरन्नमः स्वाहा।।८।।

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योर्ज्ज्याम्। याश्च्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा।।९।।

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ ऽउत। अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा।।१०।।

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा।।११।।

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्म्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः। अथो य ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहि तम् स्वाहा।।१२।।

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा।।१३।।

ॐ नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्ण्णवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा।।१४।।

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकम्मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिष स्वाहा।।१५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्श्वेषु रीरिषः।
मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा।।१६।।

ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा।।१७।।

ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा।।१८।।

ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा।।१९।।

ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्ट्टानाम्पतये नमः स्वाहा।।२०।।

ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमः स्वाहा।।२१।।

ॐ नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा।।२२।।

ॐ नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ।।२३।।

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा।।२४।।

ॐ नमो रोहिताय स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा।।२५।।

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा।।२६।।

ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा।।२७।।

ॐ नमः ऽउच्चैर्ग्घोषायक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा।।२८।।

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा।।२९।।

ॐ नमः सहमानाय निव्वयाधिन ऽआव्व्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा।।३०।।

ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा।।३१।।

ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्ण्यानाम्पतये नमः स्वाहा।।३२।।

ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा।।३३।।

ॐ नमो निषङ्गिण ऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा।।३४।।

ॐ नमः सृकायिब्भ्यो जिघा सद्ब्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा।।३५।।

ॐ नमो ऽसिमद्ब्भ्यो नक्तञ्चरद्ब्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा।।३६।।

ॐ नमः ऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा।।३७।।

ॐ नमः ऽइषुमद्ब्भ्यो धन्वायिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।३८।।

ॐ नमः ॐ आतन्वानेब्भ्यः प्रतिदधानेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।३९।।

ॐ नमः ऽआयच्छद्ब्भ्योऽस्यद्ब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४०।।

ॐ नमो व्विसृजद्ब्भ्यो व्विद्ध्यद्ब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमः स्वपद्‌भ्यो जाग्रद्‌भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४२।।
ॐ नमः शयानेभ्य ऽआसीनेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४३।।
ॐ नमस्तिष्ठद्‌भ्यो धावद्‌भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४४।।
ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४५।।
ॐ नमो ऽश्श्वेभ्योऽश्श्वपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४६।।
ॐ नमः ऽआव्याधिनीभ्यो व्विविद्ध्यन्तीभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४७।।
ॐ नमः ऽउगणाभ्यस्तृंठ. हतीभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४८।।
ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४९।।
ॐ नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५०।।
ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५१।।
ॐ नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्श्वरूपेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५२।।
ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५३।।
ॐ नमो रथिभ्यो ऽअरथेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५४।।
ॐ नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५५।।
ॐ नमो महद्‌भ्यां ऽअर्ब्भकेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५६।।
ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५७।।
ॐ नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५८।।
ॐ नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५९।।
ॐ नमः श्श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।६०।।
ॐ नमः श्श्वभ्यः श्श्वपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।६१।।
ॐ नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा।।६२।।
ॐ नमः शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा।।६३।।
ॐ नमा नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा।।६४।।
ॐ नमः कपर्द्दिने च व्व्युप्प्तकेशाय च स्वाहा।।६५।।
ॐ नमः सहस्राक्क्षाय च शतधन्न्वने च स्वाहा।।६६।।
ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्ट्टाय च स्वाहा।।६७।।
ॐ नमो मीढुष्ट्टमाय चेषुमते च स्वाहा।।६८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा।।६९।।
ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा।।७०।।
ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा।।७१।।
ॐ नमोऽग्ग्र्याय च प्प्रथमाय च स्वाहा।।७२।।
ॐ नमः ऽआशवे चाजिराय च स्वाहा।।७३।।
ॐ नमः शीग्घ्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा।।७४।।
ॐ नम ऽऊर्म्भ्याय चावस्वन्न्याय च स्वाहा।।७५।।
ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्प्याय च स्वाहा।।७६।।
ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा।।७७।।
ॐ नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा।।७८।।
ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा।।७९।।
ॐ नमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा।।८०।।
ॐ नमः सोब्भ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा।।८१।।
ॐ नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा।।८२।।
ॐ नमः श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च स्वाहा।।८३।।
ॐ नमः ऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा।।८४।।
ॐ नमो व्वन्न्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा।।८५।।
ॐ नमः श्श्रवाय च प्प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा।।८६।।
ॐ नम ऽआशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा।।८७।।
ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा।।८८।।
ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा।।८९।।
ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा।।९०।।
ॐ नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा।।९१।।
ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा।।९२।।
ॐ नमो धृश्णवे व प्प्रमृशाय च स्वाहा।।९३।।
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा।।९४।।
ॐ नमस्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा।।९५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा।।९६।।
ॐ नमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा।।९७।।
ॐ नमः काट्याय च नीप्प्याय च स्वाहा।।९८।।
ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा।।९९।।
ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा।।१००।।
ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च स्वाहा।।१०१।।
ॐ नमो व्वीद्ध्याय चातप्प्याय च स्वाहा।।१०२।।
ॐ नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्त्याय च स्वाहा।।१०३।।
ॐ नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा।।१०४।।
ॐ नमो व्वात्त्याय च रेष्म्याय च स्वाहा।।१०५।।
ॐ नमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा।।१०६।।
ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा।।१०७।।
ॐ नमस्ताम्प्राय चारुणाय च स्वाहा।।१०८।।
ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा।।१०९।।
ॐ नम ऽउग्ग्राय च भीमाय च स्वाहा।।११०।।
ॐ नमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा।।१११।।
ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा।।११२।।
ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः स्वाहा।।११३।।
ॐ नमस्ताराय स्वाहा ।।११४।।
ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा।।११५।।
ॐ नमः शङ्कराय च मयस्क्कराय च स्वाहा।।११६।।
ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा।।११७।।
ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा।।११८।।
ॐ नमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा।।११९।।
ॐ नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा।।१२०।।
ॐ नमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा।।१२१।।
ॐ नमः शिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च स्वाहा।।१२२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमः शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा।।१२३।।

ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तेय च स्वाहा।।१२४।।

ॐ नम ऽइरिण्ण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा।।१२५।।

ॐ नमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा।।१२६।।

ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा।।१२७।।

ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा।।१२८।।

ॐ नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च स्वाहा।।१२९।।

ॐ नमः शुष्क्क्याय च हरित्त्याय च स्वाहा।।१३०।।

ॐ नमः पा ँसव्व्याय च रजस्याय च स्वाहा।।१३१।।

ॐ नमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा।।१३२।।

ॐ नमः ऽऊर्व्व्याय च सूर्व्व्याय च स्वाहा।।१३३।।

ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा।।१३४।।

ॐ नम ऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा।।१३५।।

ॐ नम ऽआखिदते च प्प्रखिदते च स्वाहा।।१३६।।

ॐ नम ऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।१३७।।

ॐ नमो वः किरिकेब्भ्यो देवाना ँ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१३८।।

ॐ नमो व्विचिन्वत्त्केब्भ्यो देवाना ँ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१३९।।

ॐ नमो व्विक्षिणत्त्केब्भ्यो देवाना ँ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१४०।।

ॐ नम ऽआनिर्हतेब्भ्यो देवाना ँ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१४१।।

ॐ द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसाम्प्रजाना-
मेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ् मो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा।।१४२।।

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्प्रभरामहे मतीः।
यथा शमसद्द्विपदे चतुष्प्पदे व्विश्श्वम्पुष्टंग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् स्वाहा।।१४३।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा व्विश्श्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा।।१४४।।

ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्ष्व मीड्ढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा।।१४५।।

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे व्वृक्ष ऽआयुधान्निधाय
कृतिं व्वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि स्वाहा।।१४६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्ते ऽस्तु भगवः।
यास्ते सहस्रर्ठ. हेतयोऽन्न्वमस्म्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा।।१४७।।
ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा।।१४८।।
ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽधि भूम्म्याम्।
तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१४९।।
ॐ अस्म्मिन्न्महत्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवा ऽअधि।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५०।।
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवर्ठ. रुद्रा ऽउपश्रि्श्रताः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५१।।
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वा ऽअधः क्षमाचराः।
तेषार्ठ. सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५२।।
ॐ वे व्वृक्षेषु शिष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः।
तेषाꣳ सहस्रायोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५३।।
ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५४।।
ॐ ये पथाम्पथिरक्षय ऽऐलवृदा ऽआयुर्य्युधः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५५।।
ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५६।।
ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५७।।
ॐ य ऽएतावन्तश्च भूयाꣳसश्च्च दिशो रुद्रा व्वितस्त्थिरे।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५८।।
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः।
तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः।
तेब्भ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो।
वश्च्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा।।१५९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमोऽस्तु रुद्रब्भ्यो वेऽन्तरिक्षे येषां व्वात ऽइषवः। तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रातीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा।।१६०।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये पृथिव्व्यां येषामन्नमिषवः। तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा।।१६१।। (यहाँ तक रुद्राष्टाध्यायी पाँचवाँ अध्याय)

१- ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः। ॐ व्वयर्ठ० सोम० (८ मन्त्राः) (छठाअध्याय) [पाठमात्रम्] ॐ उग्रश्च० (७मन्त्राः) [पाठमात्रम्]। ॐ व्वाजश्च०।।१।। प्प्राणश्च०।।२।। ओजश्च०।।३।। ज्यैष्ठ्यं च०।।४।। स्वाहा

२- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)। ॐ सत्यञ्च०।।१।। ऋतञ्च०।।२।। यन्ता च०।।३।। शञ्च०।।४।। स्वाहा

३- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)। ॐ ऊर्क् च०।।१।। रयिश्च।।२।। वित्तञ्च०।।३।। व्व्रीहयश्च०।।४।। स्वाहा।

४- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)। ॐ अश्मा च०।।१।। अग्निश्च।।२।। व्वसु च० ।।३।। स्वाहा।

५- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)। ॐ अग्निश्च म ऽइन्द्रश्च०।।१।। मित्रश्च०।।२।। पृथिवी च० ।।३।। स्वाहा।

६- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ अर्ठ. शुश्च०।।१।। आग्ग्रयणश्च०।।२।। स्रुचश्च० ।।३।। स्वाहा

७- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ अग्निश्च०।।१।। व्व्रतञ्च०।।२।। स्वाहा।

८- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ एका च०।।१।। स्वाहा।

९- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ चतस्रश्च०।।१।। स्वाहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१०- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ त्र्यविश्च०।।१।। पष्ठुवाट् च०।।२।। स्वाहा।
(पुनः) ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्रा) स्वाहा
ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।
ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।
ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा।
ॐ विब्भ्राड् वृहत् पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा।

११- ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ व्वाजाय स्वाहा०।।१।। आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम्०।।२।। स्वाहा।
ॐ ऋचं वाचम् स्वाहा। ॐ यन्मे छिद्रम्० स्वाहा।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः० स्वाहा। ॐ कयानश्चित्रः० स्वाहा।
ॐ कस्त्वा सत्यो मदानाम्० स्वाहा। ॐ अभी षु णः० स्वाहा।
ॐ कया त्वन्न ऽऊत्याभि० स्वाहा। ॐ इन्द्रो विश्वस्य० स्वाहा।
ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः० स्वाहा। ॐ शं नो व्वातः पवता शं नः० स्वाहा।
ॐ अहानि शं भवन्तु नः० स्वाहा। ॐ शन्नो देवीः० स्वाहा।
ॐ स्योना पृथिवि० स्वाहा। ॐ आपो हि ष्ठा० स्वाहा।
ॐ यो वः शिवतमो रसः स्वाहा। ॐ तस्मा ऽ अरं गमाम वः स्वाहा।
ॐ द्यौः शान्तिः० स्वाहा। ॐ दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा० स्वाहा।
ॐ दृते दृंह मा ज्योक्ते० स्वाहा। ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे० स्वाहा।
ॐ नमस्ते ऽअस्तु व्विद्युते० स्वाहा। ॐ वतो यतः समीहसे० स्वाहा।
ॐ सुमित्रिया न ऽआपः० स्वाहा। ॐ तच्चक्षुर्द्देवहितम्० स्वाहा।
ॐ सद्योजातम्० (५ मन्त्राः) [पाठमात्रम्]
[इस कर्म के पश्चात् षडङ्गन्यास करें]

८- श्रीरुद्र-सूक्ष्म हवन कर्म हेतु मंत्र

(१) ॐ नमः शिवाय (२) मृत्युञ्जय या महामृत्युञ्जय

९- लिङ्गतोभद्र स्थापना-पूजन

पीठ- पूर्वे ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।
ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीठ- अग्निगोणे-ॐ श्वित्रआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्या अरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः।। ॐ रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवमावाहयामि स्थापयामि।।२।।
पीठ-दक्षिणे- ॐ नमः शांभवाय च मयोभवाय च नमः, शङ्कराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिवतराय च।। ॐ संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवमावाहयामि स्थापयामि।।३।।
पीठ-नैर्ऋत्ये- ॐ या ते रुद्र शिवा तनूर- घोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्तभिचाकशीहि।। ॐ क्रोधभैरवाय नमः। क्रोधभैरवमावाहयामि स्थापयामि।।४।।
पीठ-पश्चिमे- ॐ उन्नतऋषभो वामनस्तऐन्द्रावैष्णवाउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्तऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषाआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः।। ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः। उन्मत्तभैरवमावाहयामि स्थापयामि।।५।।
पीठ-वायव्ये- ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापोअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। ॐ कपालभैरवाय नमः। कपालभैरवमावाहयामि स्थापयामि।।६।।
पीठ-उत्तरे- ॐ चण्डभैरवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।।
पीठ-ईशाने- ॐ भीषण भैरवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।।

उपरोक्त विधि से आवाहन करके लिङ्गतोभ्रदमण्डल के देवताओं की षोडशोपचार या पंचोपचार पूजन करें।

१०- लिङ्गतोभद्र हवन-मंत्र

अचार्यगण निम्न आठ नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यज्ञ-कर्ता से घृत की एक-एक आहुति कुण्ड में प्रदान कराएँ- **१. ॐ असिताङ्गभैरवाय स्वाहा। २. ॐ रुरुभैरवाय स्वाहा। ३. ॐ संहार भैरवाय स्वाहा। ४. क्रोधभैरवाय स्वाहा। ५. ॐ उन्मत्तभैरवाय स्वाहा। ६. ॐ कपालभैरवाय स्वाहा। ७. ॐ चण्डभैरवाय स्वाहा। ८. ॐ भीषणभैरवाय स्वाहा।**

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टम्-अध्याय
श्रीमहालक्ष्मी स्थापनादि व हवन

१- श्री महालक्ष्मी पीठ-चित्र

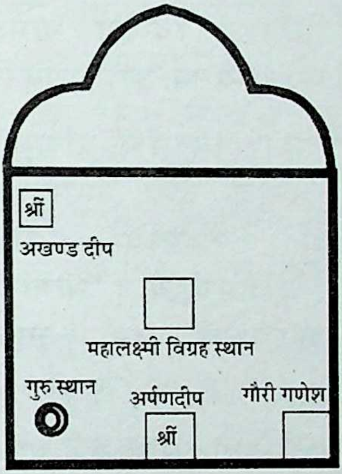

२- श्री महालक्ष्मी स्थापनादि

३- ध्यान

या सा पद्मासनस्था विपुल कटितटी पद्मपत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्त नाभि स्तनभारनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैः गजेन्द्रैः मणिगण रुचितौः स्नापिता हेमकुम्भै।
नित्त्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्य युक्ता।।
पद्मानने पद्मिनी पद्मपत्रे पद्मदलायताक्षी।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वद् पादपद्मं मयि सन्निधत्सां।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४- षोडशोपचार पूजा

आवाहन- सर्वलोकस्य जननी सर्वसौख्यप्रदायिनीम्।
सर्वदेवमयीमीशां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्।।
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मी जातवेदो मऽआवह।।
ॐ ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्व पुरुषानहम्।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

आसन- ॐ तप्तकाञ्चनवर्णाभं मणिमण्डप विराजिताम्।
दिव्यं पंकजं देवि आसनार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः आसनं सर्मपियामि।
(आसनार्थ पुष्प अर्पण करें।)

पाद्य - ॐ गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणपरमेश्वरी।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।
(चरणप्रक्षालन के लिए जल अर्पित करें।)

अर्घ्य- दिव्यजलसमायुक्तं पात्रे सम्पादितं मया।
अर्घ्यं गृहाण मद्दतं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदारम्।
तां पद्मनेमी शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं समर्पियामि।
(अरघा से जल समर्पित करें।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचमन- ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः आचमनं समर्पियामि।

स्नान- आकाश गंगोद्भूतं ऐरावद शुण्ड संस्थितम्।
हेमकुम्भपरिपूर्णं गृहाणं जलं उत्तमम्।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः जलंस्नानं समर्पियामि।
दिव्य जल से स्नान कराएँ।

पञ्चामृतस्नान- ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधासोदेशेभवत् सरित्।।
कामधेनुः समुद्भूतं पञ्चामृतमहोदधौ।
तस्य सागरे तीरे स्नात्वा महेश्वरी।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पियामि।
महालक्ष्मी को पञ्चामृत से स्नान कराएँ।

वस्त्र- पट्टकूलयुगं देविकञ्चुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा गृहाण परमेश्वरी।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पियामि।।
(लक्ष्मी जी को वस्त्र या मौली चढ़ाएँ)

उपवस्त्र- कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मया दत्तं महालक्ष्म्यै नमोस्तु ते।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः, उपवस्त्रं समर्पियामि।
(लक्ष्मी जी के लिए उपवस्त्र या मोली चढ़ाएँ।)

आभूषण- नानारत्नखचिंत केयूरहारकुण्डलम्।
बहुविध आभूषणं देवि गृहाण परमेश्वरी।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः, आभूषणानि समर्पियामि।
(लक्ष्मी जी को आभूषण चढ़ाएँ)

विलेपन- मृगमदगंध संयुक्तं केसरकांति संयुतम्।
विलेपनं गृहाणाशु महादेव्यै नमोस्तुते।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः, गन्धं समर्पियामि
(अष्टांग दिव्यविलेपन अर्पित करें)

रक्तचन्दन- ॐ रक्तचन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं विष्णुप्रिये।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः भाले रक्तचन्दनं समर्पियामि।
(लक्ष्मी जी के मस्तक पर चंदन अर्पित करें)

सिन्दूर- ॐ सिन्दूरं नागचूर्णश्च परम सौभाग्यदायकः।
भक्त्या दत्तं मया देवि, गृहाण परमेश्वरी।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः, सिन्दूरं समर्पियामि।
(लक्ष्मी जी को सिन्दूर चढ़ाएँ)

सुगन्धितद्रव्य- ॐ तेलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।
मया दत्तानि सुगन्धार्थं गृहाण परमेश्वरि।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः, सुगन्धित तेलादि समर्पियामि
(इत्र आदि चढ़ाएँ)

अक्षत- अक्षतान निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्वितान।
मया निवेदिता भक्त्या पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः, अक्षतान् समर्पियामि
(चावल अर्पण करें)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुष्प- ॐ मन्दारपारिजाताद्या पाटली केतकी तथा।
बकुलचम्पापुष्पश्च गृहाणाशु नमो नमः।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।।

पुष्पमाला- नानापुष्प विचित्र्याढ्यां पुष्पमालां सुशोभनाम्।
अर्पणं क्रियतेदेवि गृहाणं त्वं परमेश्वरी।।
मनसः काममाकूति वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। पुष्पमालां समर्पियामि
(लक्ष्मी जी को पुष्पमाला चढ़ाएँ)

विल्वपत्र- ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथविल्व
तस्यफलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽलक्ष्मी।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः विल्वपत्रं समर्पयामि।

४.१- श्री लक्ष्मी का नामाङ्गपूजन

(नामाङ्गपूजन के निमित्त चावल, पुष्प एवं चन्दन लेकर प्रत्येक मन्त्र बोलते हुए दाहिने हाथ से श्री महालक्ष्मी जी की प्रतिमा के अंगों पर छोड़ें)

ॐ श्रीं चपलायै नमः पादौ पूजयामि।।१।।
ॐ श्रीं चञ्चलायै नमः जानुनद्वय पूजयामि।।२।।
ॐ श्रीं कमलायै नमः कटिं पूजयामि।।३।।
ॐ श्रीं कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि।।४।।
ॐ श्रीं जगन्मात्रै नमः जठरं पूजयामि।।५।।
ॐ श्रीं विश्ववल्लभायै नमः वक्षःस्थलं पूजयामि।।६।।
ॐ श्रीं कमलवासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि।।७।।
ॐ श्रीं पद्माननायै नमः मुखं पूजयामि।।८।।
ॐ श्रीं कमलपत्राक्ष्यै नमः नेत्रत्रयं पूजयामि।।९।।
ॐ श्रीं श्रियै नमः शिरः पूजयामि।।१०।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः सर्वाङ्ग पूजयामि।।११।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४.२- श्री लक्ष्मी विगृहे अष्टसिद्धि पूजन (पूर्वादि क्रमेण)

१. ॐ श्रीं अणिम्ने नमः पूजयामि (पूर्वे)
२. ॐ श्रीं महिम्नेनमः पूजयामि (अग्निकोणे)
३. ॐ श्रीं गरिम्णे नमः पूजयामि (दक्षिणे)
४. ॐ श्रीं लघिम्ने नमः पूजयामि (नैऋत्यै)
५. ॐ श्रीं प्राप्त्यै नमः पूजयामि (पश्चिमै)
६. ॐ श्रीं प्राकाम्यै नमः पूजयामि (वायव्ये)
७. ॐ श्रीं ईशितायै नमः पूजयामि (उत्तरे)
८. ॐ श्रीं वशितायै नमः पूजयामि (ईशाने)

४.३- नव-निधि पूजन

श्री लक्ष्मीजी के पास नव-निधियों की पूजा पूजयामि लगाकर करें- (गंधादि से पूजन करें)

१. ॐ श्रीं इन्द्रनिध्यै नमः (पूर्वे), २. ॐ श्रीं नंदनिध्यै नमः(अग्निकोणे)
३. ॐ श्रीं नीलनिध्यै नमः (दक्षिणे), ४. ॐ श्रीं मकर निध्यै नमः (नैऋत्यै)
५. ॐ श्रीं कच्छप निध्यै नमः(पश्चिमे), ६. ॐ श्रीं पद्मनिध्यै नमः (वायव्ये)
७. ॐ श्रीं महापद्म निध्यै नमः (उत्तरे), ८. ॐ श्रीं ज्ञान निध्यै नमः (ईशाने)
९. ॐ श्रीं शंख निध्यै नमः (पृष्ठे)

४.४- अष्टलक्ष्मी पूजा

श्री लक्ष्मी विगृहे अष्टदल कमले (पूर्वादि क्रमेण) (गंधादि से पूजन करें)

ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः पूजयामि ।।१।। ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः पूजयामि ।।२।।
ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः पूजयामि ।।३।। ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः पूजयामि ।।४।।
ॐ वैभवलक्ष्म्यै नमः पूजयामि ।।५।। ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः पूजयामि ।।६।।
ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः पूजयामि ।।७।। ॐ योगलक्ष्म्यै नमः पूजयामि ।।८।।

धूप- वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यो सुमनोहरम्।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। धूपमाघ्रापयामि।

दीप- कर्पूरवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि।।
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः दीपं समर्पियामि।

नैवेद्य- ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

प्रसाद अर्पण करते समय धेनुमुद्रा लगाकर उसे अमृतीकृत करें और अधोलिखित मन्त्र पढ़ते रहें।

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा,
ॐ उदानायस्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।

पानार्थ जल- शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।
पानार्थं जलं ह्येतत् प्रसीद परमेश्वरी।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः पानार्थ जलं समर्पियामि। (जल अर्पण करें।)

फलः - प्रकृति रस सम्पन्नं सुस्वादु सु मनोहरम्।
फलं गृहाण देवेशि पूजां सफलां कुरु।।
ॐ याःफलनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व · हसः।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः फलं समर्पियामि।

ताम्बूलपूंगीफल- एलालवंगकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम्।
पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
आर्द्रां पुस्करिणी यस्टि सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्या हिरण्मयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। ताम्बूलं समर्पियामि।

(ताम्बूल अर्पण करें)

दक्षिणा- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमखण्डं विभावसोः।
द्रव्य-दक्षिणा समर्पियामि गृहाण परमेश्वरी।।
ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणां समर्पियामि।

(लक्ष्मी जी को द्रव्य (धन) चढ़ाएँ)

नीराजन- चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम्।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

(लक्ष्मी जी की आरती वैदिक या लौकिक विधि से करें)

प्रदक्षिणा- ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि विनश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे।।

५- प्रार्थना

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंख चक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।
नमस्ते गरुड़ारूढ़े कोलासुर भयङ्करि।
सर्वपाप हरे देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुखहरे देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनि।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।
आद्यन्तरहिते देवि आद्याशक्ति महेश्वरि।
योगनी योगसम्भूते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।
स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापाप हरे देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणिं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
रक्ताम्बर धरे देवि नानालङ्कार भूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेत्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमाप्नोति राज्यमाप्नोति सर्वदा।।
एककालं पठेन्नित्य महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धन-धान्यसमन्वितः।।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्य प्रसन्ना वरदा शुभा।।

६- महालक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर-विष्णु-विधाता।।
ॐ जय लक्ष्मी ....

उमा-रमा-ब्रह्माणी, तुम हो जगमाता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।
ॐ जय लक्ष्मी ....

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी ....

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता।।
ॐ जय लक्ष्मी ....

जिस घर तुम रहती तहँ, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता।।
ॐ जय लक्ष्मी ....

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र नहीं पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता।।
ॐ जय लक्ष्मी ....

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधिजाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी ....

लक्ष्मी माँ की आरती जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।
ॐ जय लक्ष्मी ....

७- क्षमा प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।१।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।२।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।३।।

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।४।।

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु।।५।।

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८-श्री महालक्ष्मी हवन-मंत्र (वैदिक श्रीसूक्त द्वारा)

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआ वह स्वाहा।।१।।
ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् स्वाहा।।२।।
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमपु ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् स्वाहा।।३।।
ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् स्वाहा।।४।।
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीं मे नश्यतां त्वां वृणोमि स्वाहा।।५।।
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्त्व वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा या बाह्या अलक्ष्मीः स्वाहा।।६।।
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मिन् राष्ट्रे कीर्तिमृद्धिं ददातु मे स्वाहा।।७।।
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् स्वाहा।।८।।
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् स्वाहा।।९।।
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः स्वाहा।।१०।।
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् स्वाहा।।११।।
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातर श्रियं वासय मे कुले स्वाहा।।१२।।
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह स्वाहा।।१३।।
ॐ आर्द्रां य करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह स्वाहा।।१४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् स्वाहा।।१५।।
ॐ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् स्वाहा।।१६।।

९-श्री द्वादश महालक्ष्मी हवन-मंत्र

(१) ॐ श्रीं चपलायै नमः स्वाहा (२) ॐ श्रीं चञ्चलायै नमः स्वाहा
(३) ॐ श्रीं कमलायै नमः स्वाहा (४) ॐ श्रीं कात्यायिन्यै नमः स्वाहा
(5) ॐ श्रीं जगन्मात्रे नमः स्वाहा (६) ॐ श्रीं विष्णुबल्लभायै नमः स्वाहा
(७) ॐ श्रीं कमलवासिन्यै नमः स्वाहा (८) ॐ श्रीं पद्माननायै नमः स्वाहा
(९) ॐ श्रीं कमलपत्राक्ष्यै नमः स्वाहा (१०) ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा
(११) ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा (१२) ॐ श्रीं सुरपूजितायै नमः स्वाहा।

१०-अष्टसिद्धि हवन-मंत्र

(१) ॐ श्रीं अणिम्ने नमः स्वाहा (२) ॐ श्रीं महिम्ने नमः स्वाहा
(३) ॐ श्रीं गरिम्णे नमः स्वाहा (४) ॐ श्रीं लघिम्ने नमः स्वाहा
(5) ॐ श्रीं प्राप्त्यै नमः स्वाहा (६) ॐ श्रीं प्राकाम्यै नमः स्वाहा
(७) ॐ श्रीं इशितायै नमः स्वाहा (८) ॐ श्रीं वशितायै नमः स्वाहा

११-नवनिधि हवन-मंत्र

(१) ॐ श्रीं इंन्द्रनिध्यै नमः स्वाहा (२) ॐ श्रीं नन्द निध्यै नमः स्वाहा
(३) ॐ श्रीं नीलनिध्यै नमः स्वाहा (४) ॐ श्रीं मकर निध्यै नमः स्वाहा
(5) ॐ श्रीं कच्छप निध्यै नमः स्वाहा (६) ॐ श्रीं पद्मनिध्यै नमः स्वाहा
(७) ॐ श्रीं महापद्मनिध्यै नमः स्वाहा (८) ॐ श्रीं ज्ञाननिध्यै नमः स्वाहा
(९) ॐ श्रीं शंख निध्यै नमः स्वाहा

१२-अष्ट लक्ष्मी हवन मंत्र

(१) ॐ श्रीं आद्य लक्ष्म्यै नमः स्वाहा (२) ॐ श्रीं विद्यालक्ष्म्यै नमः स्वाहा
(३) ॐ श्रीं सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः स्वाहा (४) ॐ श्रीं अमृत लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
(5) ॐ श्रीं वैभव लक्ष्म्यै नमः स्वाहा (६) ॐ श्रीं सत्य लक्ष्म्यै नमः स्वाहा
(७) ॐ श्रीं भोग लक्ष्म्यै नमः स्वाहा (८) ॐ श्रीं योग लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवम्-अध्याय

षोडशमातृका-सप्तघृतमातृका चतुषष्ठियोगिंनी स्थापनादि व हवन

१- षोडश मातृका पीठ चित्र (१)

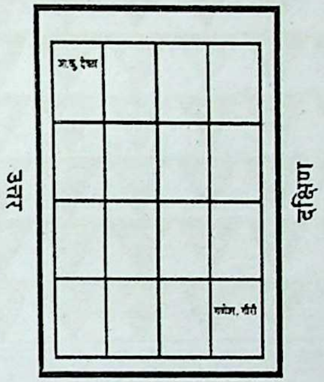

२- सप्तघृतमातृका पीठ चित्र (२)

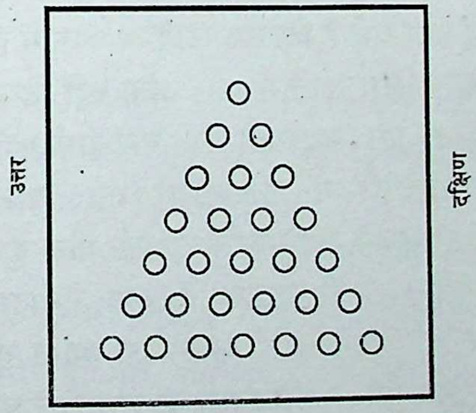

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३- चतुः षष्टियोगिनी चित्र (३)

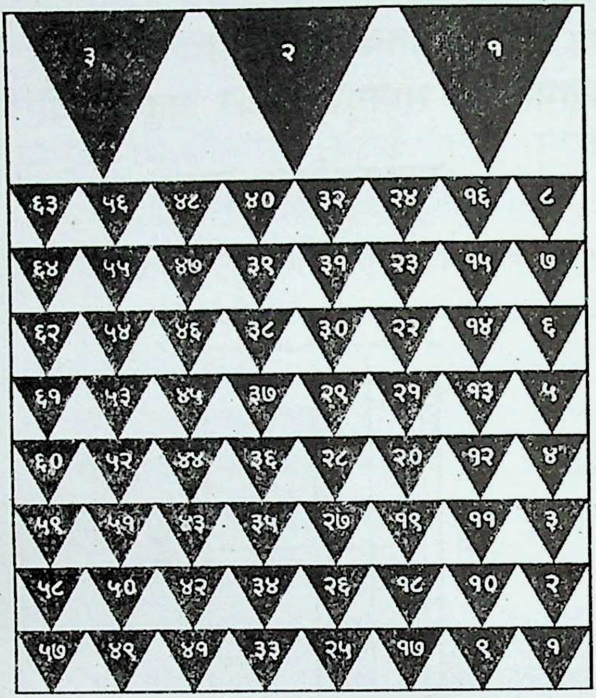

चतुःषष्टियोगिनीचक्र के निर्माण में जिन त्रिभुजों में अंकों की संख्या लिखी गयी है, उस स्थान पर अक्षत को लाल रंग से रंगकर भरें। अन्य त्रिभुजों में अक्षत को पीले रंग से रंगकर भरें। यहाँ अंक लिखने का तात्पर्य मात्र यही है कि उस खाने के अंक में ही योगिनी का पूजन करना चाहिए। जिस खाने में कोई अंक नहीं दिया गया है, वह खाना रिक्त ही रहेगा। उस स्थान की पूजा नहीं होगी।

समस्त शाक्तयज्ञों में षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका चतुःषष्ठियोगिनी, स्थलमातृकादि शक्तियों की पीठ-पूजाएँ होती हैं। ये देवियाँ दुर्गा (शक्ति) की ही सहायक हैं। अतः देवीदुर्गा, चामुण्डा, महाकाली, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता आदि के वृहद् हवन करते समय या शतचण्डी, सहस्रचण्डी व शतकोटिचण्डी यज्ञों में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इनकी स्थापनापूजा तथा इनका हवन अवश्य करना होता है। ऐसे बड़े यज्ञों में गौरीगणेश, नवग्रह, इंद्रपीठ, सर्वतोभद्र, लिंगतोभद्र, रुद्रपीठ, श्रीविष्णु पीठ, आदि सभी पूजित होते हैं और इन पीठों के देवताओं के हवन भी होते हैं।

दुर्गादेवी की सूक्ष्म पूजाओं एवं हवनयज्ञों में गौरी-गणेश पूजनोपरान्त केवल दुर्गादेवी की पीठ पूजा या मूर्ति पूजा करके केवल दुर्गासप्तशती के आधार पर भी पंडितजन हवन करा दिया करते हैं।

हिन्दू-सनातन धर्म में सूक्ष्मतम अग्यारी के माध्यम से एक लोंग के जोड़े को चढ़ाकर भी हवन मान्य हो जाता है, तो बड़े यज्ञ कुण्ड में दुर्गा सप्तशती के आधार किया गया विस्तृत हवन भी मान्य होता है। माँ सूक्ष्म व विस्तृत-सभी पूजाओं से सन्तुष्ट हो जाती है। अग्यारी से होने वाला सूक्ष्म हवन आपातकाल में प्रारंभ हुआ है। यह शास्त्रीय नहीं है। लोकाचार है।

इसी लिए इस ग्रंथ में षोडशमातृका, सप्तघृत मातृका, चतुःषष्ठि योगिनी आदि के इस अध्याय को दुर्गादेवी के हवन वाले अध्याय से अलग किया गया है।

४- षोडशमातृकास्थापनादि

५- आवाहन-स्थापन

१- ॐ गणानां त्वा गणपतिः हवामहे प्प्रियाणं त्वा प्प्रियपतिः हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिः हवामहेऽवसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्भधम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

२- ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्प्रयन्त्स्वः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

३- ॐ हिरण्यरूपा ऽउषसो व्विरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथः सूर्य्यश्श्च।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरोहतं व्वरुण मित्र्र गर्तं ततश्श्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्र्रोऽसि व्वरुणोऽसि।।

ॐ पद्मायै नमः, पद्मावाहयामि स्थापयामि।

४- ॐ निवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां व्विश्श्वा रूपाभिचष्ट्टे शचीभिः। देव ऽइव सविता सत्यधर्म्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्।।

ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि।

५- ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्श्च व्वायुश्श्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।

ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि।

६- ॐ सविता त्त्वां सवाना सुवतामग्निर्ग्गृहपतीना सोमो व्वनस्प्पतीनाम्। बृहस्प्पतिर्व्वाच ऽइन्द्रो ज्ज्येष्ठ्याय रुद्द्रः पशुब्भ्यो मित्र्रः सत्त्यो वरुणो धर्म्मपतीनाम्।।

ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

७- ॐ विज्ज्यन्धनु÷ कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ उत। अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।

ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि।

८- ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्र्रश्श्चिचश्श्चा कृणोति समनावगत्य। इषुधिः सङ्काः पृतनाश्श्च पर्त्वा÷ पृष्ठ्ठे निनद्धो जयति प्प्रसूतः।।

ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि।

९- ॐ इन्द्र ऽआसां नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोम÷ देवसेनानामभिभञ्जतीनां ययन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।

ॐ देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१०-ॐ पितृभ्य÷ स्वधायिभ्य÷ स्वधा नम÷ पितामहेभ्य÷ स्वधायिभ्य÷ स्वधा नमः प्प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्य÷ स्वधा नम÷ । अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।।

ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

११-ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा। दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा।

ॐ स्वाहायै नमः। स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

१२-ॐ आपो ऽअस्मान्मातर÷ शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्व÷ पुनन्तु। व्विश्श्वः हि रिप्रं पवहन्ति देवीरुदिदाव्भ्यः शुचिरा पूत ऽएमि। दीमातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा॰ शग्ग्मां परिद्धे भद्द्रं व्वर्ण पुष्यन्।।

ॐ मातृभ्यो नमः, मातृः आवाहयामि स्थापयामि।

१३-ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिंश्च मे व्विभु च मे प्रभु च मे पूर्ण्णं च मे पूर्ण्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।

१४-ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्प्रजासु। यस्मान्न ऽऋते किञ्च न कर्म्म विक्रयते तन्मे मन÷ शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।

ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

१५-ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्श्विनात्मानमङ्गैः समधात्त्सरस्वती। इन्द्रस्य रूप ं शतमानमायुश्च्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतं दधानाः।।

ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१६-ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहातिवेदः।
सनःपर्षदतिदुर्गाणि विश्वा नावेवसिन्धुंदुरितात्यग्निः।।
ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

१७-ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।
चक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहाव्वाचेस्वाहा मनसे स्वाहा।।
ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

६- प्राण प्रतिष्ठा

ॐ मनोजुतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञः समिमं दधातु। व्विश्श्वे देवास ऽइह मादयन्तामो प्रतिष्ठ्ठ।।

गौर्याद्याः कुलदेवतान्तमातरो गणपतिसहिताः सुप्रतिष्ठिताः भवन्तु।

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूजयस्तु षोडश।।

७- षोडशोपचार पूजा

ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः। मंत्र लगाकर षोडशोपचार पूजा श्रीसूक्त से ही करें।

८- षोडशमातृका हवन मंत्र

(१) ॐ गं गणेशाय नमः स्वाहा (२) ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः स्वाहा (३) ॐ विष्णुप्रियायैपद्मायै नमः स्वाहा (४) ॐ इंद्रपत्नैशच्यै नमः स्वाहा (५) ॐ बुद्धिप्रबोधिनीदेव्यै मेधायै नमः स्वाहा (६) ॐ वेदगर्भायज्ञपत्नै सावित्र्यै नमः स्वाहा (७) ॐ सर्वास्त्रधारिणीदेव्यै विजयायैं नमः स्वाहा (८) ॐ देवविजयदायिनी देव्यै जयायै नमः स्वाहा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(९) ॐ मयूरवाहिनीदेव्यै देवसेनायै नमः स्वाहा (१०) ॐ पितृणां कव्यप्रदायिनीदेव्यै स्वधायै नमः स्वाहा। (११) ॐ देव हव्यप्रदायिनीदेव्यै अग्निपत्नै स्वाहायै नमः स्वाहा। (१२) ॐ सकलालोकपूजितामातृभ्यो नमः स्वाहा। (१३) ॐ सर्वलोकहितकारीणीलोकमातृभ्यो नमः स्वाहा। (१४) ॐ हर्षोत्फुल्लकरीदेव्यै धृत्यै नमः स्वाहा (१५) ॐ सर्व पुष्टिकरीदैव्यै पुष्ट्यै नमः स्वाहा। (१६) ॐ सर्वसन्तोषकारिणीदेव्यै तुष्ट्यै नमः स्वाहा। (१७) ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः स्वाहा।

९ - सप्तघृतमातृका स्थापनादि

ॐ व्वसोः पवित्त्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्त्रमसि सहस्रधारम्। द वस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सप्वा।।

यजमान उपरोक्त वैदिकमंत्र पढ़कर गुड़ के चूरे से सातों विन्दुमय मातृकाओं को एक में मिलाने की प्रक्रिया करें।

(निम्न मंत्रों से यजमान से अक्षत् छोड़कर प्रत्येक का आवाहन कराएँ)

१० - आवाहन-स्थापन (वैदि मंत्रों द्वारा)

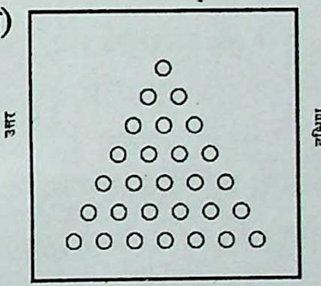

(१) ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्त्यमशीमही। पशूना रूपमन्नस्य यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।
ॐ श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

(२) ॐ श्रीश्च्च ते लक्ष्मीश्च्च पत्न्यावहोरात्त्रे पाश्र्व्वे नक्षत्त्राणि रूपमश्श्विनौ व्यात्तम्। इष्ष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्व्वलोकं मऽइषाण।।
ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

(३) ॐ भद्रं कर्ण्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्त्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्ट्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायु÷।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

(४) ॐ मेधां मे व्वरुणौददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च्च व्वायुश्श्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।।

ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि।

(५) ॐ प्राणाय स्वाहा ऽअपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।

ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

(६) ॐ आयं गौः पृश्निरक्क्रमीदसदन्मातरं पुरः पितरं च प्प्रयन्त्स्वः।।

ॐ प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

(७) ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञं व्वष्टु धियावसुः।।

ॐ सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

११- प्राण-प्रतिष्ठा -

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञः समिमं दधातु। विश्वे देवा स ऽइह मादयन्तामो प्रतिष्ठ।।

१२- षोडशोपचार पूजा

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती आवाहयामि स्थापयामि नमस्करोमि।

आसन - तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्या हिरण्यं विन्देयं गावश्वं पुरुषानहम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती आसनं समर्पयामि ।

पाद्य - अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मां देवी जुषताम्।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य-कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमन - चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टां उदाराम्।
ता पद्मनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती आचमनीयं समर्पयामि ।

स्नान - आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती स्नानं समर्पयामि ।

वस्त्र- ॐ उपेतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मिन् राष्ट्रे कीर्तिं ऋद्धिं ददातु मे।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र - ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम्।
अभूतिं असमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृणात्।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती उपवस्त्रं समर्पयामि।

गंध - ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती गंधं समर्पयामि।

सोभाग्य-सिंदूर- ॐ मनसः कामं आकूतिं वाचः सत्यमशीमही।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती सौ० सिन्दूरं समर्पयामि।

पुष्प - कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दमः।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती पुष्पमालां समर्पयामि।

धूप - ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत बस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती धूपं समर्पयामि।

दीपक - ॐ आद्रा पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्म मालिनीम्।
चद्रां हिरणमयीं लक्ष्मी जातवेदो मऽआवह।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती दीपं समर्पयामि।

नैवेद्य - (धेनुमुद्रा लगाकर अमृतीकृत करें)
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती नैवेद्यं समर्पयामि।

दक्षिणा - तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्यो अस्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।

ॐ श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थना -

यदङ्गत्वेन भो देव्यः! पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन सर्वदा।।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया।।
त्वं श्रीस्त्वंलक्ष्मी त्वं धीस्त्वं मेधा परमेश्वरी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वाहाप्रज्ञास्तथा तुष्टिस्त्वं वाणीशुभ्रा तथा।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरन्तवीर्या विश्वस्यबीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।
अनया पूजया वसोधारादेवताः प्रियन्ताम् न मम्।।

१३- सप्तघृतमातृका हवन मंत्र

(१) ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा। (२) ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा। (३) ॐ धृत्यै नमः स्वाहा। (४) ॐ मेधायै नमः स्वाहा। (५) ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा। (६) ॐ प्रज्ञायै नमः स्वाहा। (७) ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा।

१४- चतुःषष्ठि योगिनी-स्थापनादि

पहले चौषठ योगिनियों के नाम मंत्र में आवाह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि लगाकर पीठ पर स्थापना करें। फिर प्रत्येक नाम-मंत्र के साथ पूजयामि तर्पयामि नमः कहकर गंधादि से पूजन करें। यथा-

ॐ गजाननाये नमः आ० स्था० नम०।।१।। ॐ सिंहमुख्ये नमः आ० स्था० नम०।।२।। ॐ गृध्रास्यायै नमः आ० स्था० नम०।।३।। ॐ काकतुण्डिकायै नमः:आ० स्था० नम० ।।4।। ॐ उष्टग्रीवायै नमः आ० स्था० नम०।।५।। ॐ हयग्रीवायै नमः आ० स्था० नम०।।६।। ॐ वाराह्यै नमः आ० स्था० नम०।।७।। ॐ शरभाननायै नमः आ० स्था० नम०।।८।। ॐ उलूकिकायै नमः आ० स्था० नम०।।९।। ॐ शिवाननायै नमः आ० स्था० नम०।।१०।। ॐ मयूरायै नमः आ० स्था० नम०।।११।। ॐ विकटाननायै नमः आ० स्था० नम०।।१२।। अष्टवक्त्रायै नमः आ० स्था० नम०।।१३।। ॐ कोटराक्ष्यै नमः आ० स्था० नम०।।१४।। ॐ कुब्जायै नमः आ० स्था० नम०।।१५।। ॐ विकटलोचनायै नमः आ० स्था० नम०।।१६।। ॐ शुष्कोदर्यै नमः आ० स्था० नम०।।१७।। ॐ ललज्जिह्वायै नमः आ० स्था० नम०।।१८।। ॐ श्वदंष्टायै नमः आ० स्था० नम०।।१९।। ॐ वानराननायै नमः आ० स्था० नम०।।२०।। ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः आ०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्था० नम०।।२१।। ॐ केकराक्ष्यै नमः आ० स्था० नमं०।।२२।। ॐ बृहत्तुण्डायै नमः आ० स्था० नम०।।२३।। ॐ सुरप्रियायै नमः आ० स्था० नम०।।२४।। ॐ कपालहस्तायै नमः आ० स्था० नम०।।२५।। ॐ रक्ताक्ष्यै नमः आ० स्था० नम०।।२६।। ॐ शुष्क्यै नमः आ० स्था० नम०।।२७।। ॐ श्यैन्यै नमः आ० स्था० नम०।।२८।। कपोतिकायै नमः आ० स्था० नम०।।२९।। ॐ पाशहस्तायै नमः आ० स्था० नम०।।३०।। ॐ दण्डहस्तायै नमः आ० स्था० नम०।।३१।। ॐ प्रचण्डायै नमः आ० स्था० नम०।।३२।। ॐ चण्डविक्रमायै नमः आ० स्था० नम०।।३३।। ॐ शिशुघ्न्यै नमः आ० स्था० नम०।।३४।। ॐ पापहन्त्र्यै नमः आ० स्था० नम०।।३५।। ॐ काल्यै नमः आ० स्था० नम०।।३६।। ॐ रुधिरपायिन्यै नमः आ० स्था० नम०।।३७।। ॐ वसाधयायै नमः आ० स्था० नम०।।३८।। ॐ गर्भभक्षायै नमः आ० स्था० नम०।।३९।। ॐ शवहस्तायै नमः आ० स्था० नम०।।४०।। ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः आ० स्था० नम०।।४१।। ॐ स्थूलकेश्यै नमः आ० स्था० नम०।।४२।। ॐ बृहत् कुक्ष्यै नमः आ० स्था० नम०।।४३।। ॐ सर्पास्यायै नमः आ० स्था० नम०।।४४।। ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः आ० स्था० नम०।।४५।। दन्तशूककरायै नमः आ० स्था० नम०।।४६।। ॐ क्रौञ्च्यै नमः आ० स्था० नम०।।४७।। ॐ मृगशीर्षायै नमः आ० स्था० नम०।।४८।। ॐ वृषवाहिन्यै नमः आ० स्था० नम०।।४९।। ॐ व्यात्तास्यायै नमः आ० स्था० नम०।।५०।। ॐ धूमविश्वासायै नमः आ० स्था० नम०।।५१।। ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः आ० स्था० नम०।।५२।। ॐ तापिन्यै नमः आ० स्था० नम०।।५३।। ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः आ० स्था० नम०।।५४।। ॐ कोटर्यै नमः आ० स्था० नम०।।५५।। ॐ स्थूलनासिकायै नमः आ० स्था० नम०।।५६।। ॐ विद्युत्प्रभायै नमः आ० स्था० नम०।।५७।। ॐ बलाकास्यायै नमः आ० स्था० नम०।।५८।। ॐ मार्जार्यै नमः आ० स्था० नम०।।५९।। ॐ कटपूतनायै नमः आ० स्था० नम०।।६०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अट्टाट्टहासायै नमः आ० स्था० नम०।।६१।। ॐ कामाक्ष्यै नमः आ० स्था० नम०।।६२।। ॐ मृगाक्ष्यै नमः आ० स्था० नम०।।६३।। ॐ मृगलोचनायै नमः आ० स्था० नम०।।६४।।

१५- प्राणप्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञः समिमं दधातु। विश्वे देवा स ऽइह मादयन्तामो प्रतिष्ठ।।

(प्राणप्रतिष्ठोपरान्त इन्हीं ६४ नाम-मंत्रों के साथ पूजयामि तर्पयामि लगाकर आक्षत-चंदनादि से पूजन करें।)

१६- षोडशोपचार पूजा

चतु:षष्ठियोगिनी पूजन का मूल मंत्र -

ॐ दिव्यादि चतुषःष्ठियोगिनीम्यो नमः है। अतं में इस मूल मंत्र से चौषठ योगिनियों की पूजा करनी चाहिए।

१७- चतु:षष्ठि योगिनी हवन - मंत्र

घृत-शाकल्य आदि से साधक चौषठ योगिनियों का निम्न मंत्रों से हवन करें-

ॐ गजाननायै नमः स्वाहा।।१।। ॐ सिंहमुख्ये नमः स्वाहा।।२।। ॐ गृध्रास्यायै नमः स्वाहा।।३।। ॐ काकतुण्डिकायै नमःस्वाहा।।4।। ॐ उष्टग्रीवायै नमः स्वाहा।।५।। ॐ हयग्रीवायै नमःस्वाहा।।६।।

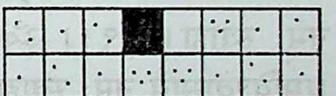

ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा।।७।। ॐ शरभाननायै नमः स्वाहा।।८।। ॐ उलूकिकायै नमः स्वाहा।।९।। ॐ शिवाननायै नमः स्वाहा।।१०।। ॐ मयूरायै नमः स्वाहा।।११।। ॐ विकटाननायै नमः स्वाहा।।१२।। अष्टवक्त्रायै नमः स्वाहा।।१३।। ॐ कोटराक्ष्यै नमः स्वाहा।।१४।। ॐ कुब्जायै नमः स्वाहा।।१५।। ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विकटलोचनायै नमः स्वाहा।।१६।। ॐ शुष्कोदर्यै नमः स्वाहा।।१७।। ॐ ललज्जिह्वायै नमः स्वाहा।।१८।। ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः स्वाहा।।१९।। ॐ वानराननायै नमः स्वाहा।।२०।। ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः स्वाहा।।२१।। ॐ केकराक्ष्यै नमः स्वाहा।।२२।। ॐ बृहत्तुण्डायै नमः स्वाहा।।२३।। ॐ सुरप्रियायै नमः स्वाहा।।२४।। ॐ कपालहस्तायै नमः स्वाहा।।२५।। ॐ रक्ताक्ष्यै नमः स्वाहा।।२६।। ॐ शुष्क्यै नमः स्वाहा।।२७।। ॐ श्येन्यै नमः स्वाहा।।२८।। ॐ कपोतिकायै नमः स्वाहा।।२९।। ॐ पाशहस्तायै नमः स्वाहा।।३०।। ॐ दण्डहस्तायै नमः स्वाहा।।३१।। ॐ प्रचण्डायै नमः स्वाहा।।३२।। ॐ चण्डविक्रमायै नमः स्वाहा।।३३।। ॐ शिशुघ्न्यै नमः स्वाहा।।३४।। ॐ पापहन्त्र्यै नमः स्वाहा।।३५।। ॐ काल्यै नमः स्वाहा।।३६।। ॐ रुधिरपायिन्यै नमः स्वाहा।।३७।। ॐ वसाधयायै नमः स्वाहा।।३८।। ॐ गर्भभक्षायै नमः स्वाहा।।३९।। ॐ शवहस्तायै नमः स्वाहा।।४०।। ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः स्वाहा।।४१।। ॐ स्थूलकेश्यै नमः स्वाहा।।४२।। ॐ बृहत् कुक्ष्यै नमः स्वाहा।।४३।। ॐ सर्पास्यायै नमः स्वाहा।।४४।। ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः स्वाहा।।४५।। दन्तशूककरायै नमः स्वाहा।।४६।। ॐ क्रौञ्च्यै नमः स्वाहा।।४७।। ॐ मृगशीर्षायै नमः स्वाहा।।४८।। ॐ वृषवाहिन्यै नमः स्वाहा।।४९।। ॐ व्यात्तास्यायै नमः स्वाहा।।५०।। ॐ धूमविश्वासायै नमः स्वाहा।।५१।। ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः स्वाहा।।५२।। ॐ तापिन्यै नमः स्वाहा।।५३।। ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः स्वाहा।।५४।। ॐ कोटर्यै नमः स्वाहा।।५५।। ॐ स्थूलनासिकायै नमः।।५६।। ॐ विद्युत्प्रभायै नमः स्वाहा।।५७।। ॐ बलाकास्यायै नमः स्वाहा।।५८।। ॐ मार्जार्यै नमः स्वाहा।।५९।। ॐ कटपूतनायै नमः स्वाहा।।६०।। ॐ अट्टाट्टहासायै नमः स्वाहा।।६१।। ॐ कामाक्ष्यै नमः स्वाहा।।६२।। ॐ मृगाक्ष्यै नमः स्वाहा।।६३।। ॐ मृगलोचनायै नमः स्वाहा।।६४।।卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१८- स्थलमातृका स्थापना

(१) ॐ ब्रह्मयै नमः आवह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि।
(२) ॐ माहेश्वरयै नमः आवह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि।
(३) ॐ कौमारयै नमः आवह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि।
(४) ॐ वैष्णव्यै नमः आवह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि।
(५) ॐ वाराह्यै नमः आवह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि।
(६) ॐ इंद्राण्यै नमः आवह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि।
(७) ॐ चामुण्डायै नमः आवह्यामि स्थापयामि नमस्करोमि।

१९- प्राणप्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञः समिमं दधातु। विश्वेदेवा स ऽइह मादयन्तामो प्रतिष्ठ।।

२०- षोडशोपचार पूजा

इसी क्रम से इनकी प्रत्येक के साथ पूजियामि तर्पयामि नमस्करोमि लगाकर गंधादि से पूजा करें। अथवा

मूल मंत्र - **ॐ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।**
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः।।

इस मंत्र से षोडशोपचार पूजा करें।

२१- स्थल मातृका हवन-मंत्र

(१) ॐ ब्राहम्यै नमः स्वाहा (२) ॐ माहेश्वर्यै नमः स्वाहा (३) ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा (४) ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा (५) ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा (६) ॐ इंद्राण्यै नमः स्वाहा (७) ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा

तृणमातृकापूजन -

ॐ तृणमातृभ्यो नमः आ० स्था० नम० तथा ॐ तोरणमातृभ्यो नमः आ० स्था० नम० का उच्चारण करके स्थापनादि कर्म करें तत्पश्चात् इन्हीं मंत्रों से गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से तृण और तोरणमातृकाओं का पूजन कराएँ तथा इन्हीं मंत्रों से आहुति दें। 卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशम्-अध्याय

श्रीदुर्गा सप्तशती द्वारा सम्पूर्ण हवन

१- श्रीदुर्गा देवी पीठ-चित्र

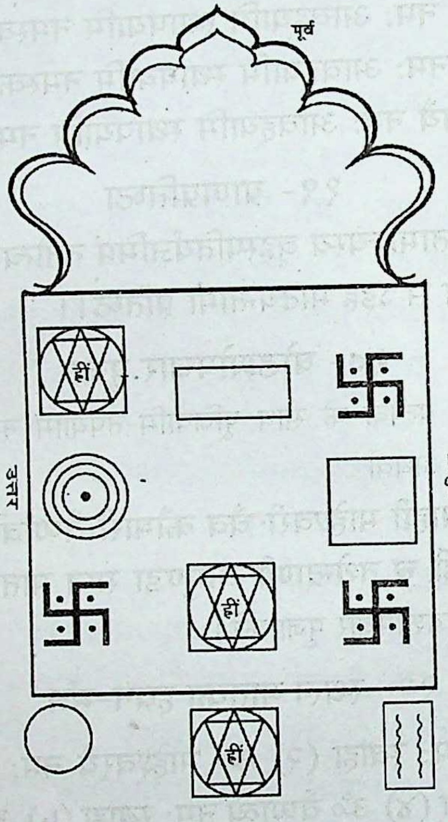

२- श्रीदुर्गा देवी ध्यान

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदाऽसिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गा त्रिनेत्रां भजे।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालाभ्रामां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाण त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्ती त्रिनेत्राम्।
सिहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्ती
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धकामैः।
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताऽब्जैर्दधती घनान्त-विलसन्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम्।।

३- श्रीदुर्गादेवी स्थापनादि

आवाहन-स्थापन - ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोमआवह।। आगच्छेह महादेवि! सर्वसम्पत्प्रदायिनि।। यावद्पूजा समाप्येत तावत्त्वं सुस्थिरो भव।। ॐ श्रीं दुर्गादेव्यै नमः आवाहितोभव नमः, संस्थापितो भव मनः, सन्निधापन भव नमः, सन्निरोधन भव नमः, सम्मुखीकृत भव नमः (आवाहन की पाँच मुद्राओं से देवी का आवाहनादि करें)

४- प्राण-प्रतिष्ठा

ॐ मनोजुतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्यतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञः समिमं दधातु। व्विश्श्वे देवास ऽइह मादयन्तामो प्रतिष्ठ्ठ।।

५- षोडशोपचार-पूजा

(१) आसन-समर्पण - ॐ तां म आवाह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। दुर्गेदेवि सुरेशानि ज्ञानामार्गप्रदे शिवे। आसनं मणिभूषाढ्यं गृहाण सेरश्वरि।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः दिव्यांसनं समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) पादम - ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। ॐ कात्यायनि महादुर्गे चामुण्डे शङ्करप्रिये। पाद्यं गृहाण देवेशि रुद्रकालि नमोऽस्तुते। भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

(३) अर्घ्य - ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम्।।जगत्पूज्ये त्रिलोकेशि सर्वदानवनाशिनी। अर्घ्यं गृहाण देवेशि-स्वागतं स्वागतं शुभे। श्रीदुर्गादेव्यै नमः, हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

(४) मधुपर्क - ॐ मधुवाताऽ ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। दधिमधुघृतसमायुक्तं दिव्यपात्र समन्वितम्। मधुपर्कं गृहाणत्वं शुभदा भवशोभने।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि। मधुपर्कान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

(५) आचमन - ॐचन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमि शरणमहंप्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणोमि।। पूरितं स्वर्णपात्रे च गाङ्गेयं निर्मलं जलम्। ददाम्याचमनं तुभ्यं प्रसीद महेश्वरि।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

(६) स्नान - ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपमानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः। ज्ञानमूर्ति भद्रकालि शिवेसर्वार्थसाधिके। स्नानं गृहाणदेवेशि तीर्थोदकविभूषितम्।। श्रीदुर्गादेव्यैः नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

(७) पुनराचमनीय - ॐ उच्छिश्ष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयम् गृह्यताम्। स्नानवस्त्रोपवीतान्ते-आचमनीयं समर्पयामि।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(८) सुगन्धिततैल्येन अनुलेपन - ॐ अ ं शुनातेऽअ ं शुः पृच्यतां परुषापरुः। गन्धस्तेसोममवतु मदायरसोऽअच्युतः। स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि महानघे। सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम्।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः स्नानार्थे सुगन्धिततैल्यं समर्पयामि।।

(९) दुग्धस्नान - ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधीः। पयस्वतीः प्रतिशः सन्तुमहाम।। कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं देह शुद्धिर्थं त्वया पय सर्पितम्।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। पुनः शुद्धोदकस्नानम्।।

(१०) दधिस्नान - ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्त्प्रण आयू ं षितारिषत्। पयस्तस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।। दध्यानीतं मयादेवि स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः। दधिस्नानं समर्पयामि।पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पियामि।

(११) घृतस्नान - ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसांवसा पावानः पिवतान्तारिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो व्विदिश उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा। नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्। घृतं तुभ्यं समर्पयामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः, घृतस्नानं समर्पयामि। पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पियामि।

(१२) मधुस्नान - ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ं रजः मधुद्यौरस्तुनः पिता। नंदनकानन समुद्भूतं सुस्वादुमधुरं मधु।। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः मधुस्नानं समर्पयामि। पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पियामि।

(१३) शर्करास्नान - ॐ अपा ं रसमुद्वयस ं सर्येसन्त ं समाहितम्। अपा ं रसस्ययो रसस्तं व्वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्व जुष्टं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्।। इक्षुसारसंयुक्ता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिकादिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्री दुर्गादेव्यै नमः शर्करास्नानं समर्पयामि। पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पियामि।।

(१४) पञ्चामृतस्नान - ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियान्ति सस्त्रोतसः।। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः पञ्चामृतस्नान समर्पयामि। पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पियामि।

(१५) उदवर्तन-विलेपन - ॐ अ शुनातेऽअ शुः पृच्च्यतांपरुषा परुः। गन्धस्ते सोमयवतु मदाय रसोऽअच्युतः।। नानासुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।। उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। उद्वर्तनस्नानम् समर्पयामि। पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पियामि।

(१६) शुद्धोदकस्नान - ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विना। श्येतः श्वेताक्षोरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

(१७) युग्मवस्त्र समर्पण - ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। पट्टकूलयुगं देवि कञ्चुकेन समन्वितम्। परिधेहि कृपां कृत्वां दुर्गे दुर्गतिनाशिनि।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः, उपवस्त्रसहितं वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि।

(१८) यज्ञोपवीत - ॐ क्षुत्पिपासामलां जेष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुदमेगृहात्।। स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं विश्वकर्मा निर्मितंपुरा। उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरि।। श्रीदुर्गा देव्यै नमः स्वर्णोपवीतं समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१९) गंध-चन्दन अर्पण - ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। श्रीखण्डागरुकस्तूरी रोचनाभि सुसंयुतम्। गृहाण गन्धं देवेशि सर्वकामफलप्रदे। श्रीदुर्गादेव्यै नमः चन्दनं समर्पयामि।

(२०) अक्षत - ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्वभानवो विप्रा नविष्ठ्या मतीयोजान्विन्द्रते हरी। अक्षतान्निर्मलान शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्। गृहाणेमान्महादेवि देहि मे निर्मला धियम्। श्रीदुर्गादेव्यै नमः अक्षतान् समर्पियामि।

(२१) सिन्दूर - सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसमसन्निभम्। अर्पित ते मया देवि प्रसीद परमेश्वरि। श्रीदुर्गादेव्यै नमः सिन्दूरम् समर्पयामि।।

(२२) कज्जल - चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम्। कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि। श्रीदुर्गादेव्यै नमः कज्जलं समर्पियामि।

बिल्वपत्र - ॐ आर्द्रां पुष्करिणी पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो - आवह।। अमृतोद्भवश्रीवृक्षे महादेवप्रियः सदा। बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि। श्रीदुर्गादेव्यै नमः विल्वपत्रं समर्पियामि।

(२३) पुष्पमाला - ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवी मातः श्रियं वासय मे कुले।। पद्मशंखजपापुष्पादि शतपत्रैविनिर्मिताम्। पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरि।। श्रीदुर्गा देव्यै नमः पुष्पमालां समर्पियामि।

(२४) पुष्प - ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः।। नाना पुष्पविचित्राढ्यां पुष्पांजलि सुशोभनाम्। प्रयच्छामि सुपुष्पाणि गृहाणत्वं सुरेश्वरि।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पियामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२५) अङ्ग-पूजा (रोली-चंदन-अक्षत पुष्पादि लेकर) - **ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि नमः। ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि नमः। ॐ मङ्गलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि नमः। ॐ कात्यायन्यै नमः उरुद्वयं पूजयामि नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं पूजयामि नमः। ॐ कमलवासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि नमः। ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि नमः। ॐ क्षमायै नमः हृदयं पूजयामि नमः। ॐ कौमार्यै नमः स्तनौ पूजयामि नमः। ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजयामि नमः। ॐ महागौर्यै नमः दक्षिणबाहुं पूजयामि नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः वामबाहुं पूजयामि नमः। ॐ रमायै नमः स्कन्धौ पूजयामि नमः। ॐ स्कन्दमात्रे नमः कण्ठं पूजयामि नमः। ॐ महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि नमः। ॐ सिंहवाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः शिरं पूजयामि नमः। ॐ कामाख्यायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि नमः।।**

(२६) धूप - **ॐ यः शुचि प्रयतो भृत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च मनसा सततं जपेत। गूगुलगन्धसंयुक्तमगरु आदि समायुतम्। दशाङ्गं गृहाण धपत्वं दुर्गादेवि नमोऽस्तुते।। ॐ दुर्गा देव्यै नमः धूपमाघ्रापयामि नमः।**

(२७) दीप - **आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः, दीपं दर्शयामि।**

(२८) नैवेद्य (धेनुमुद्रा प्रर्दश्य) - **आर्द्रां पुष्करिणी यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसै षड्भिः समन्वितम्। नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्ति मे ह्यचलां कुरु। भगवती-श्रीदुर्गादेव्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि।। ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, मध्ये-मध्ये पानीयं उत्तरापोषणं हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनम्। आचमनार्थ जलं समर्पयामि।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२९) ऋतुफल - **ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।। नानाफलानि दिव्यानि ऋतुकालोद्भवानि च। प्रकृतिरस परिपूर्णं गृहाण सुरेश्वरी। श्री दुर्गादेव्यै नमः ऋतुफलम् समर्पयामि।**

(३०) ताम्बूलवीटिका - **तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासिताम्। वीटिकां मुखवासार्थं सर्पयामि सुरेश्वरि।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः मुखवासार्थे एलालवङ्गादिभिर्युतं पूगीफलताम्बूलं समर्पयामि।**

(३१) दक्षिणाद्रव्य - **यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।। पुजाफलसमृद्धयर्थ स्वर्णमुद्रां सुरेश्वरी। समर्पितं तवाग्रे मे पूर्णान् कुरु मनोरथान्।। श्रीदुर्गादेव्यै नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।**

(३२) आरतीकर्म - **ॐ इद ँ हविः प्रजननं मेऽअस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयंसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतोऽअस्मासु धत्त। आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्र यि धामभिः। दिवः सदा ँ सि बृहती व्वितिष्ठसऽआत्त्वेषं व्वर्त्तते तमः।।**

(३३) मन्त्र-पुष्पाञ्जलि - **ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्तिदेवाः।**

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य सायिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति। साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति। तदप्येष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या ऽवसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमि जनयन् देवऽ एकः।

सेवन्तिकाबकुलचम्पकपाटलाऽब्जैः पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः। बिल्वप्रवालतुलसीदलमञ्जरीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद।। नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

मया पुष्पाञ्जलिः दत्ता गृहाण परमेश्वरि।। (पुष्पांजलि समर्पित करें)

(३४) प्रदक्षिणा - यानि कानि न पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

६- क्षमा प्रार्थना -

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।1।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।2।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।3।।
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।4।।
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु।।5।।
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।6।।
त्रिपुरसुंदरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।7।।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।।8।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९- श्रीदुर्गासप्तशती-हवन मंत्र

(श्री दुर्गोपनिषद् कल्पद्रुमसम्मत आहुति-विधान सहित दुर्गा हवन)

[प्रत्येक मंत्र से पूर्व ॐ और ह्रीं लगाकर मंत्रोचार करें; क्योंकि ह्री देवी का प्रणव है। अतः प्रत्येक श्लोक मंत्र के साथ ह्रीं लगाएँ तो अतिश्रेष्ठ माना जाता है; लेकिन यहाँ परम्परागत ॐ ही लगाया गया है और अंत में निम्नवत् स्वाहा लगाएँ।]

प्रथमाऽध्यायः

[प्रथम अध्याय के सभी मंत्र-श्लोकों की आहुतियाँ पुरुष घृत से और स्त्री आदि जन निर्धारित शाकल्य से दें। विशिष्ट आहुतियों के पदार्थ (मंत्रों) श्लोकों के नीचे लिखे गये हैं।]

विनियोगः - ॐ प्रथम चरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरुपम्, श्रीमहाकाली-प्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रहवने विनियोगः।

ध्यानम् -

ॐ खड्गं चक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।
ॐ ह्रीं नमश्चण्डिकायै स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं ऐं मार्कण्डेय उवाच स्वाहा।।२।।

ॐ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम स्वाहा ।।३।।

ॐ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः स्वाहा ।।४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले स्वाहा ।।५।।

ॐ तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा स्वाहा ।।६।।

ॐ तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः ।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः स्वाहा ।।७।।

ॐ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः स्वाहा ।।८।।

ॐ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः ।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः स्वाहा ।।९।।

ॐ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् स्वाहा ।।१०।।

ॐ स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः ।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् स्वाहा ।।११।।

ॐ तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे स्वाहा ।।१२।।

ॐ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः ।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् स्वाहा ।।१३।।

ॐ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः स्वाहा ।।१४।।

ॐ मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते ।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः स्वाहा ।।१५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् स्वाहा ।।१६।।

ॐ संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः स्वाहा ।।१७।।

ॐ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः स्वाहा ।।१८।।

ॐ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् स्वाहा ।।१९।।

ॐ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् स्वाहा ।।२०।।

ॐ वैश्य उवाच स्वाहा ।।२१।।

ॐ समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले स्वाहा ।।२२।।

ॐ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् स्वाहा ।।२३ ।।

ॐ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् स्वाहा ।।२४।।

ॐ प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् स्वाहा ।।२५।।

ॐ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः स्वाहा ।।२६।।

ॐ राजोवाच स्वाहा ।।२७।।

ॐ यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः स्वाहा ।।२८।।

ॐ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् स्वाहा ।।२९।।

ॐ वैश्य उवाच स्वाहा ।।३०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः स्वाहा ।।३१।।

ॐ किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः स्वाहा ।।३२।।

ॐ पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते स्वाहा ।।३३।।

ॐ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते स्वाहा ।।३४।।

ॐ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् स्वाहा ।।३५।।

ॐ मार्कण्डेय उवाच स्वाहा ।।३६।।

ॐ ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ स्वाहा ।।३७।।

ॐ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् स्वाहा ।।३८।।

ॐ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ स्वाहा।।३९।।

ॐ राजोवाच स्वाहा ।।४०।।

ॐ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् स्वाहा ।।४१।।

ॐ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि स्वाहा।।४२।।

ॐ जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः स्वाहा।।४३।।

ॐ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितो स्वाहा।।४४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ दृष्टदोशेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि स्वाहा।।४५।।
ॐ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता स्वाहा।।४६।।

ॐ ऋषिरुवाच स्वाहा।।४७।।

ॐ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे स्वाहा।।४८।।
ॐ विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे स्वाहा।।४९।।
ॐ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम् स्वाहा।।५०।।
ॐ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् स्वाहा।।५१।।
ॐ मनुष्याणां च यत्तेशां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु स्वाहा।।५२।।
ॐ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति स्वाहा।।५३।।
ॐ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः स्वाहा।।५४।।
ॐ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः स्वाहा।।५५।।
ॐ महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा स्वाहा।।५६।।
ॐ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् स्वाहा।। ५७।।

(शर्करा की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी स्वाहा।।५८।।

ॐ संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी स्वाहा।।५९।।

ॐ राजोवाच स्वाहा।।६०।।

ॐ भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् स्वाहा।।६१।।

ॐ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा स्वाहा।।६२।।

ॐ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर स्वाहा।।६३।।

ॐ ऋषिरुवाच स्वाहा।।६४।।

ॐ नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् स्वाहा।।६५।।

ॐ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा स्वाहा।।६६।।

ॐ उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते स्वाहा।।६७।।

ॐ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ स्वाहा।।६८।।
(कमलगट्ठा की आहुति)

ॐ विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितौ ब्रह्मा प्रजापतिः स्वाहा।।६९।।

ॐ दृष्ट्वा तावसुरो चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः स्वाहा।।७०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् स्वाहा।।७१।।

ॐ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः स्वाहा।।७२।।

ॐ ब्रह्मोवाच स्वाहा।।७३।।

ॐ त्वंस्वाहा त्वंस्वधा त्वंहि वषट्कारः स्वरात्मिका स्वाहा।।७४।।

ॐ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः स्वाहा।।७५।।

ॐ त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् स्वाहा।।७६।।

ॐ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने स्वाहा।।७७।।

ॐ तथा संहतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः स्वाहा।।७८।।

ॐ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी स्वाहा।।७९।।

ॐ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा स्वाहा।।८०।।

ॐ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेवच।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा स्वाहा।।८१।।

ॐ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी स्वाहा।।८२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके स्वाहा।।८३।।

ॐ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।
यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् स्वाहा।।८४।।

ॐ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च स्वाहा।।८५।।

ॐ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारर्देवि संस्तुता स्वाहा।।८६।।

ॐ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु स्वाहा।।८७।।

ॐ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ स्वाहा।।८८।।

ॐ ऋषिरुवाच स्वाहा।।८९।।

ॐ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा स्वाहा।।९०।।

ॐ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः स्वाहा।।९१।।

ॐ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः स्वाहा।।९२।।

ॐ एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ स्वाहा।।९३।।

ॐ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः स्वाहा।।९४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ स्वाहा।।९५।।

ॐ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो- व्रियतामिति केशवम् स्वाहा।।९६।।

ॐ श्रीभगवानुवाच स्वाहा।।९७।।

ॐ भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।।९८।।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम स्वाहा।।९९

ॐ ऋषिरुवाच स्वाहा।।१००।।

ॐ वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्।।१०१।।

(कर्पूर की आहुति)

ॐ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता स्वाहा।।१०१।।

(कमल पुष्प या कमलगट्ठा की आहुति)

ॐ ऋषिरुवाच स्वाहा।।१०३।।

ॐ तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः स्वाहा।।१०४।।

(मधु, केला, गुगंल, पान की आहुति)

ॐ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्यादेव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते स्वाहा ।।ऐंॐ।।१०५।।

सुवा में घृत गुगल रखकर

ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै।
वाग्बीजाधिष्ठात्री महाकाल्यै नमः स्वाहा।।१०६।।

(मधु में सिक्त करके पुष्प की आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॐ तत् सत्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वितीयोऽध्यायः

विनियोग - **ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।**

ध्यानम् -

ॐ अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरां।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे स्वाहा ।।२।।

ॐ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः स्वाहा।।३।।

ॐ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ स्वाहा ।।४।।

ॐ यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् स्वाहा ।।५।।

ॐ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति स्वाहा ।।६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना स्वाहा ।।७।।

ॐ एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् स्वाहा ।।८।।

ॐ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ स्वाहा ।।९।।

ॐ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च स्वाहा ।।१०।।

ॐ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत स्वाहा ।।११।।

ॐ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् स्वाहा ।।१२।।

ॐ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा स्वाहा ।।१३।।

ॐ यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा स्वाहा ।।१४।।

ॐ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः स्वाहा ।।१५।।

ॐ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका स्वाहा ।।१६।।

ॐ तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा स्वाहा ।।१७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा स्वाहा ।।१८।।

ॐ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिशार्दिताः स्वाहा ।।१९।।

ॐ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः स्वाहा।।२०।।

ॐ शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी स्वाहा ।।२१।।

ॐ वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् स्वाहा ।।२२।।

ॐ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् स्वाहा ।।२३।।

ॐ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् स्वाहा ।।२४।।

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च स्वाहा ।।२५।।

ॐ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् स्वाहा।।२६।।

ॐ अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् स्वाहा ।।२७।।

ॐ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् स्वाहा ।।२८।।

(कर्पूर की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंह रत्नानि विविधानि च स्वाहा।।२९।।

ॐ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् स्वाहा ।।३०।।

ॐ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा स्वाहा ।।३१।।

ॐ सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः स्वाहा ।।३२।।

ॐ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे स्वाहा ।।३३।।

ॐ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् स्वाहा ।।३४।।

ॐ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः स्वाहा ।।३५।।

ॐ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः स्वाहा ।।३६।।

ॐ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा स्वाहा ।।३७।।

ॐ पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिः स्वनेन ताम् स्वाहा।।३८।।

ॐ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् स्वाहा ।।३९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः स्वाहा ।।४०।।

ॐ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः स्वाहा।।४१।।

ॐ अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशदभिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः स्वाहा।।४२।।

ॐ अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः स्वाहा।।४३।।

ॐ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः स्वाहा।।४४।।

(नीबू की आहुति)

ॐ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः स्वाहा।।४५।।

ॐ युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा स्वाहा।।४६।।

ॐ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा स्वाहा।।४७।।

ॐ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे स्वाहा।।४८।।

ॐ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका स्वाहा।।४९।।

ॐ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः स्वाहा।।५०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी स्वाहा।।५१।।

ॐ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः स्वाहा।
ॐ निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका स्वाहा।।५२।।

ॐ त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः स्वाहा।।५३।।

ॐ नाशयन्तोऽसरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे स्वाहा।।५४।।

ॐ मृदङ्गाश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः स्वाहा।।५५।।

ॐ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् स्वाहा।। ५६।।

ॐ आमुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे स्वाहा।।५७।।

ॐ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः स्वाहा।।५८।।

(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ केचिन्निपतिता भूमो भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे स्वाहा।।५९।।

(पीली सरसों की आहुति दें)

ॐ श्येना नुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नगीवास्तथापरे स्वाहा।।६०।।

ॐ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः स्वाहा।।६१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः स्वाहा।।६२।।

ॐ कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः स्वाहा।।६३।।

ॐ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः स्वाहा।।६४।।

ॐ पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः स्वाहा।।६५।।

ॐ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् स्वाहा।।६६।।

(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् स्वाहा।।६७।।

(राई या सरसों की आहुति)

ॐ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति स्वाहा।।६८।।

ॐ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुत्तुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि स्वाहा।।ॐ।। ६९।।

(पुष्प वा विल्व पत्राहुति)

सुव्रा में घृत-गुग्गुल रखकर- **ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै श्री विजयाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।७०।।** कहकर आहुति दें।

जय-जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये।
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॐ तत् सत्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तृतीयोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्।।

'ॐ' ऋषिरुवाच स्वाहा ।।१।।

ॐ निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सैनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुथाम्बिकाम् स्वाहा।।२।।

ॐ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः स्वाहा।।३।।

ॐ तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् स्वाहा ।।४।।

ॐ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः स्वाहा ।।५।।

ॐ सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवी खड्गचर्मधरोऽसुरः स्वाहा ।।६।।

ॐ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् स्वाहा ।।७।।

ॐ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः स्वाहा ।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् स्वाहा।।९।।

ॐ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः स्वाहा।।१०।।

ॐ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारुढश्चामरस्त्रिदशार्दनः स्वाहा।।११।।

ॐ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभितां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् स्वाहा।।१२।।

ॐ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि सच्छिनत् स्वाहा।।१३।।

ॐ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा स्वाहा।।१४।।

ॐ युद्ध्यमानौ ततस्तो तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः स्वाहा।।१५।।

ॐ ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् स्वाहा।।१६।।

ॐ उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः स्वाहा।।१७।।

ॐ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् स्वाहा।।१८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी स्वाहा।।१९।।

ॐ बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् स्वाहा।।२०।।

(नीबू की आहुति)

ॐ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् स्वाहा।।२१।।

ॐ कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् स्वाहा।।२२।।

ॐ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले स्वाहा।।२३।।

ॐ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंह हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका स्वाहा।।२४।।

ॐ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
श‍ृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च स्वाहा।।२५।।

ॐ वेगभ्रमणाविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः स्वाहा।।२६।।

ॐ धुतश‍ृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः स्वाहा।।२७।।

ॐ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् स्वाहा।।२८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे स्वाहा।।२९।।

ॐ ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत स्वाहा।।३०।।

ॐ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः स्वाहा।।३१।।

ॐ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत स्वाहा।।३२।।

ॐ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् स्वाहा।।३३।।

ॐ ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना स्वाहा।।३४।।

(गुड़, दुग्ध या शहद की आहुति)

ॐ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान स्वाहा।।३५।।

ॐ सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् स्वाहा।।३६।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।३७।।

ॐ गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः स्वाहा।।३८।।

(मधु की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।३९।।

ॐ एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् स्वाहा।।४०।।

ॐ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः स्वाहा।।४१।।

ॐ अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः स्वाहा।।४२।।

(गोल घिया या गोल लौकी की आहुति)

ॐ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः स्वाहा।।४३।।

ॐ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः स्वाहा।।४४।।

(पान-सुपारी-लंवग सहित आहुति)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्ति कायै सायुधायै
सवाहनायै दुर्गादैव्ये नमः स्वाहा।। ४५।।

(कदलीफल की आहुति)

जय-जय श्रीमर्णडेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः।।३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्थोऽध्यायः

ध्यानम् -

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

इस अध्याय में मंत्र नं० १ से मंत्र नं० २७ तक यवागू (हलुआ) या खीर की आहुति दें। बीच-बीच में अन्य मंत्रों के सम्मुख लिखी गयी आहुति भी देते रहें।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः स्वाहा।।२।।

ॐ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः स्वाहा।।३।।

(श्लोक नं० ३ पर कदली फल की आहुति)

ॐ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु स्वाहा।।४।।

ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् स्वाहा।।५।।

ॐ किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु स्वाहा।।६।।

ॐ हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या स्वाहा।।७।।

(विल्वफल की आहुति)

ॐ यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु- रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च स्वाहा।।८।।

(श्वेत चंदन की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि स्वाहा ।।९।।
ॐ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री स्वाहा ।।१०।।
ॐ मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा स्वाहा ।।११।।

(कर्पूर की आहुति)

ॐ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण स्वाहा ।।१२।।
ॐ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन स्वाहा ।।१३।।
ॐ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य स्वाहा ।।१४।।
ॐ ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना स्वाहा ।।१५।।
ॐ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन स्वाहा ।।१६।।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता स्वाहा ।।१७।
ॐ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि स्वाहा ।।१८।।
ॐ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी स्वाहा ।।१९।।
ॐ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् स्वाहा ।।२०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् स्वाहा ।।२१।।
ॐ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भवनत्रयेऽपि स्वाहा ।।२२।।
ॐ त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते स्वाहा ।।२३।।

(शरीफा (सीताफल) की आहुति)

(निम्न श्लोक २४, २५, २६, २७ का केवल पाठ करें, आहुति न दें)

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च स्वाहा ।।२४।।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि स्वाहा ।।२५।।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् स्वाहा।।२६।।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः स्वाहा ।।२७।।

(अंत में चार वार ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा कहकर घी की आहुति दें)

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा ।।२८।।

(केवल घी की आहुति)

ॐ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनै स्वाहा।।२९।।

(गंध-पुष्प की आहुति)

ॐ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् स्वाहा ।।३०।।

(गुगुल धूप की आहुति)

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।३१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्।।३२।।

ॐ ह्रीं देवा ऊचुः स्वाहा ।।३३।।

ॐ भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते स्वाहा ।।३४।।

ॐ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि स्वाहा ।।३५।।

ॐ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्य स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने स्वाहा ।।३६।।

ॐ तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके स्वाहा।३७।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा ।।३८।।

ॐ इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप स्वाहा ।।३९।।

ॐ इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
दवी-देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी स्वाहा ।।४०।।

ॐ पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः स्वाहा।।४१।।

(तिल व मधु की आहुति)

ॐ रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते स्वाहा।। ह्रीं ॐ।।४२।।

(तिल की आहुति)

ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै
ॐ ह्रीं श्रीं त्रिवर्णात्मिकायै त्रिशक्त्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।४३।।

(स्रुवा में रखकर घृत-पायस-यवागू (हलुआ) की आहुति दें)

जय-जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॐ तत् सत्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पञ्चमोऽध्यायः

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुम् छन्दः, भीमां शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः।

ध्यानम् -

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् स्वाहा ।।२।।

ॐ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च स्वाहा।।३।।

ॐ तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः स्वाहा ।।४।।

ॐ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् स्वाहा ।।५।।

ॐ तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः स्वाहा ।।६।।

ॐ इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः स्वाहा ।।७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रीं देवा ऊचुः स्वाहा ।।८।।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् स्वाहा ।।९।।

(हलुआ की आहुति)

ॐ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः स्वाहा ।।१०।।

(आँवले क आहुति)

ॐ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
ॐ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः स्वाहा ।।११।।

(भोजपत्र की आहुति)

ॐ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः स्वाहा ।।१२।।

ॐ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः स्वाहा ।।१३।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।१४।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।१५।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।१६।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्याभिधीयते। नमस्तस्यै स्वाहा ।।१७।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।१८।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।१९।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।२०।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।२१।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।२२।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।२३।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।२४।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।२५।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।२६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।२७।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।२८।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।२९।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।३०।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।३१।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।३२।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।३३।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।३४।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।३५।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।३६।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।३७।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।३८।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।३९।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।४०।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।४१।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।४२।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।४३।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।नमस्तस्यै स्वाहा ।।४४।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।४५।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।४६।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।४७।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।४८।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।४९।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।५०।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।५१।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।५२।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।५३।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।५४।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।५५।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।५६।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।५७।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।५८।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।५९।।

ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।६०।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।६१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।६२।।
ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।६३।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।६४।।
ॐ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।६५।।
ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।६६।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।६७।।
ॐ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।६८।।
ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।६९।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।७०।।
ॐ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।७१।।
ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।७२।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।७३।।
ॐ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै स्वाहा ।।७४।।
ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।७५।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।७६।।
ॐ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः स्वाहा।।७७।।
ॐ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्। ॐ नमस्तस्यै स्वाहा।।७८।।
ॐ नमस्तस्यै स्वाहा ।।७९।। ॐ नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा।।८०।।
ॐ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः स्वाहा।।८१।।
ॐ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः स्वाहा।।८२।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।८३।।

ॐ एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन स्वाहा।।८४।।
ॐ साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा स्वाहा।।८५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः स्वाहा।।८६।।

ॐ शरीरकोशाद्यत्तस्या पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते स्वाहा।।८७।।

ॐ तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया स्वाहा।।८८।।

ॐ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयो स्वाहा।।८९।।

ॐ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् स्वाहा।।९०।।

ॐ नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर स्वाहा।।९१।।

ॐ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति स्वाहा।।९२।।

ॐ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे स्वाहा।।९३।।

ॐ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः स्वाहा।।९४।।

ॐ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् स्वाहा।।९५।।

ॐ निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् स्वाहा।।९६।।

(कमल पुष्प या कमलगट्ठा की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः स्वाहा।।९७।।

ॐ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे स्वाहा।।९८।।

ॐ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी स्वाहा।।९९।।

ॐ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते स्वाहा।।१००।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१०१।।

ॐ निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् स्वाहा।।१०२।।

ॐ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु स्वाहा।।१०३।।

ॐ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा स्वाहा ।।१०४।।

ॐ दूत उवाच स्वाहा।।१०५।।

ॐ देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः स्वाहा।।१०६।।

ॐ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् स्वाहा।।१०७।।

ॐ मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् स्वाहा।।१०८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हत्वा देवेन्द्रवाहनम् स्वाहा।।१०९।।

ॐ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् स्वाहा।।११०।।

ॐ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने स्वाहा।।१११।।

ॐ स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् स्वाहा।।११२।।

ॐ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः स्वाहा।।११३।।

ॐ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज स्वाहा।।११४।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।११५।।

ॐ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् स्वाहा।।११६।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।११७।।

ॐ सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः स्वाहा।।११८।।

ॐ किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा स्वाहा।।११९।।

ॐ यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति स्वाहा।।१२०।।

(कज्जल की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वां महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु स्वाहा।।१२१।।
(हिंगोट फल की आहुति)

ॐ दूत उवाच स्वाहा।।१२२।।

ॐ अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः स्वाहा।।१२३।।

ॐ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका स्वाहा।।१२४।।

ॐ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् स्वाहा।।१२५।।

ॐ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि स्वाहा।।१२६।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।१२७।।

ॐ एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा स्वाहा।।१२८।।

ॐ स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् स्वाहा।।ॐ।।१२९।।
(ईख की आहुति)

ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै
विष्णुमायादि चतुर्विंशति देव्यै सरस्वत्यै नमः स्वाहा।।१३०।।
(पान-सुपारी-लवंग कर्पूर सहित कदली फल की आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमहात्म्ये देव्या
दूतसवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः।।५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षष्ठोऽध्यायः

ध्यानम् -

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् स्वाहा ।।२।।

ॐ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् स्वाहा।।३।।

ॐ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् स्वाहा ।।४।।
(गुग्गुल की आहुति)

ॐ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा स्वाहा ।।५।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा ।।६।।

ॐ तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ स्वाहा ।।७।।

ॐ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः स्वाहा ।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् स्वाहा ।।९।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा ।।१०।।

ॐ दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् स्वाहा ।।११।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१२।।

ॐ इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः स्वाहा ।।१३।।
(विजौरा नीबू की आहुति)

ॐ अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्त ा शक्तिपरश्वधैः स्वाहा।।१४।।

ॐ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः स्वाहा।।१५।।

ॐ कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् स्वाहा।।१६।।

ॐ केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् स्वाहा।।१७।।

ॐ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः स्वाहा।।१८।।
(केसर की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना स्वाहा।।१९।।

(राई या सरसों की आहुति)

ॐ श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः स्वाहा।।२०।।

(सुपारी, लोहवान, कमलगट्ठा की आहुति)

ॐ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ स्वाहा।।२१।।

ॐ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु स्वाहा।।२२।।

ॐ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् स्वाहा।।२३।।

(भोजपत्र की आहुति)

ॐ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम्
स्वाहा।।ॐ।।२४।।

(केनर पुष्प-ईख की आहुति)

ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै शक्त्यै नमः स्वाहा।।२५।। (पेठे की आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्यै शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॐ तत् सत्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सप्तमोऽध्यायः

चण्डमुण्डवध

ध्यानम्

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः स्वाहा ।।२।।
ॐ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने स्वाहा।।३।।
ॐ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः स्वाहा ।।४।।

(कस्तूरी की आहुति)

ॐ ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषी वर्णमभूत्तदा स्वाहा ।।५।।
ॐ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी स्वाहा ।।६।।
ॐ विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा स्वाहा ।।७।।
ॐ अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा स्वाहा ।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् स्वाहा ।।९।।
ॐ पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान्।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् स्वाहा ।।१०।।
ॐ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यति भैरवम् स्वाहा ।।११।।
ॐ एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् स्वाहा।।१२।।
ॐ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि स्वाहा ।।१३।।
ॐ बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा स्वाहा।।१४।।
ॐ आसिना निहताः केचित्खट्वाङ्गताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा स्वाहा।।१५।।
ॐ क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् स्वाहा।।१६।।
ॐ शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः स्वाहा।।१७।।
ॐ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् स्वाहा।।१८।।
ॐ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
कालीकरालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला स्वाहा।।१९।।
ॐ उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डमधावत।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिकाच्छिनत् स्वाहा।।२०।।

(कदलीफल की आहुति)

ॐ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपाातितम्।

तमप्यपातयद्भूमो सा खड्गाभिहतं रुषा स्वाहा।।२१।।

ॐ हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्

मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् स्वाहा।।२२।।

ॐ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।

प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् स्वाहा।।२३।।

(बड़े नीबू की आहूति)

ॐ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।

युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि स्वाहा।।२४।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।२५।।

ॐ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।

उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः स्वाहा।।२६।।

(कमलगट्ठा की आहुति)

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।

चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि स्वाहा।।ॐ।।२७।।

(चिरोंजी की आहुति)

ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै चामुण्डादेव्यै नमः स्वाहा।।२८।। (यह आहुति पंचमेवा, चिरौंजी, बादाम, मिश्री आदि से दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्यै

चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॐ तत् सत्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टमोऽध्यायः

रक्तबीज-वध

ध्यानम्

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखै रहमित्येव विभावये भवानीम्।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः स्वाहा ।।२।।

ॐ ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह स्वाहा।।३।।

ॐ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः स्वाहा ।।४।।

ॐ कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया स्वाहा ।।५।।

ॐ कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम स्वाहा ।।६।।

ॐ इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः स्वाहा ।।७।।

ॐ आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् स्वाहा ।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् स्वाहा ।।९।।

ॐ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना स्वाहा ।।१०।।

ॐ तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः स्वाहा ।।११।।

ॐ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः स्वाहा।।१२।।

ॐ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः स्वाहा ।।१३।।

ॐ यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ स्वाहा।।१४।।

ॐ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते स्वाहा।।१५।।

ॐ माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा स्वाहा।।१६।।

ॐ कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी स्वाहा।।१७।।

ॐ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ स्वाहा।।१८।।

ॐ यज्ञ वाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् स्वाहा।।१९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः स्वाहा।।२०।।

ॐ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा स्वाहा।।२१।।

ॐ ततः परिवृतास्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् स्वाहा।।२२।।

ॐ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी स्वाहा।।२३।।

ॐ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः स्वाहा।।२४।।

ॐ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः स्वाहा।।२५।।

ॐ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ स्वाहा।।२६।।

ॐ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः स्वाहा।।२७।।

ॐ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता स्वाहा।।२८।।

ॐ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता स्वाहा।।२९।।

ॐ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः स्वाहा।।३०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः स्वाहा।।३१।।

ॐ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा स्वाहा।।३२।।

ॐ कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति स्वाहा।।३३।।

ॐ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना स्वाहा।।३४।।

ॐ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः स्वाहा।।३५।।

(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः स्वाहा।।३६।।

ॐ नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा स्वाहा।।३७।।

(घृत-सिन्दूर लिप्त जाँयफल की आहुति)

ॐ चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा स्वाहा।।३८।।

ॐ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं -महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः स्वाहा।।३९।।

(सरासों की आहुति)

ॐ पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान्।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः स्वाहा।।४०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः स्वाहा।।४१।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् स्वाहा।।४२।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः स्वाहा।।४३।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः स्वाहा।।४४।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् स्वाहा।।४५।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः स्वाहा।।४६।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् स्वाहा।।४७।।

ॐ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः स्वाहा।।४८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् स्वाहा।।४९।।

ॐ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः स्वाहा।।५०।।

ॐ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः स्वाहा।।५१।।

ॐ तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् स्वाहा।।५२।।

ॐ तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच काली चामुण्डे विस्तीर्णं बदनं कुरु स्वाहा।।५३।।

ॐ मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्।
रक्तबिन्दो प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना स्वाहा।।५४।।

(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्।
एवमेश क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति स्वाहा।।५५।।

ॐ भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजधान तम् स्वाहा।।५६।।

(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गद्या तत्र चण्डिकाम् स्वाहा।।५७।।

(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् स्वाहा।।५८।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः स्वाहा।।५९।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः स्वाहा।।६०।।
(ईक्षुरस या ईक्षुदण्ड की आहुति)

ॐ जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः स्वाहा।।६१।।
(घृत मिश्रित लाल चन्दन की आहुति)

ॐ नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप स्वाहा।।६२।।
(बिजौरा नीबू को लाल चन्दन में भिगोकर आहुति)

ॐ तेषा मातृगणो जातो ननर्तासङ्मदोद्धतः स्वाहा।।६३।।

ॐ सांङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै अष्ट मातृसहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै नमः स्वाहा।।।६४।।
(रक्तचन्दन घृत-मधु सहित आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्यै
रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवमोऽध्यायः

निशुम्भ वध

ध्यानम्

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।

ॐ ह्रीं राजोवाच स्वाहा।।१।।

ॐ विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रित स्वाहा ।।२।।

(बिजौरा नीबू की आहुति)

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा ।।४।।

ॐ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे स्वाहा ।।५।।

ॐ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया स्वाहा ।।६।।

ॐ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः स्वाहा ।।७।।

ॐ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः स्वाहा ।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः।
शरवर्षमतीवोग्र मेघयोरिव वर्षतोः स्वाहा ।।९।।
ॐ चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्व शरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ स्वाहा ।।१०।।
ॐ निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् स्वाहा ।।११।।
ॐ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् स्वाहा।।१२।।
ॐ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् स्वाहा ।।१३।।
ॐ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयतं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् स्वाहा।।१४।।
ॐ आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता स्वाहा।।१५।।
ॐ ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले स्वाहा।।१६।।

(सुपारी की आहुति)

ॐ तस्मिन्निपतिते भूभौ निशुम्भै मीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् स्वाहा।।१७।।
ॐ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः स्वाहा।।१८।।
ॐ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् स्वाहा।।१९।।
ॐ पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना स्वाहा।।२०।।

(केशर की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश स्वाहा।।२१।।
ॐ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः स्वाहा।।२२।।
ॐ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ स्वाहा।।२३।।
ॐ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः स्वाहा।।२४।।
ॐ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया स्वाहा।।२५।।
ॐ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते स्वाहा।।२६।।
ॐ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताच्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः स्वाहा।।२७।।
ॐ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह स्वाहा।।२८।।
ॐ ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा स्वाहा।।२९।।
ॐ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् स्वाहा।।३०।।
ॐ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् स्वाहा।।३१।।
ॐ ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः स्वाहा।।३२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे स्वाहा।।३३।।
ॐ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका स्वाहा।।३४।।
ॐ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् स्वाहा।।३५।।

(बिजौरा नीबू की आहुति)

ॐ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि स्वाहा।।३६।।

(इंद्र जौ एवं गुग्गुल की आहुति)

ॐ ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् स्वाहा।।३७।।
ॐ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः स्वाहा।।३८।।
ॐ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि स्वाहा।।३९।।
ॐ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे स्वाहा।।४०।।
ॐ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे कालीशिदूतीमृगाधिपैः स्वाहा।।ॐ।।४१।।

(पान-सुपारी, बेलगिरी की आहुति)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै
भैरव्यै देव्यै नमः स्वाहा।।।४२।।

(बिजौरा नीबू और जावित्री की आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्यै
निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः।।९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशमोऽध्यायः

शुम्भ-वध

ध्यानम्

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः स्वाहा ।।२।।

(केसर-कस्तूरी की आहुति)

बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनी स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा ।।४।।

ॐ एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः स्वाहा ।।५।।
ॐ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम्।
तस्या देव्यास्तनो जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका स्वाहा ।।६।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा ।।७।।

ॐ अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव स्वाहा ।।८।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा ।।९।।

ॐ ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् स्वाहा ।।१०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम् स्वाहा ।।११।।
ॐ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः स्वाहा।।१२।।
ॐ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः स्वाहा ।।१३।।
ॐ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः स्वाहा।।१४।।
ॐ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् स्वाहा।।१५।।
ॐ ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः स्वाहा।।१६।।
ॐ तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् स्वाहा।।१७।।
ॐ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः स्वाहा।।१८।।
ॐ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् स्वाहा।।१९।।
ॐ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् स्वाहा।।२०।।
ॐ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः स्वाहा।।२१।।
ॐ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका स्वाहा।।२२।।
ॐ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् स्वाहा।।२३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले स्वाहा।।२४।।

ॐ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया स्वाहा।।२५।।

ॐ तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि स्वाहा।।२६।।

(पके केले की आहुति)

ॐ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् स्वाहा।।२७।।

(भोजपत्र की आहुति)

ॐ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः स्वाहा।।२८।।

ॐ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते स्वाहा।।२९।।

ॐ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः स्वाहा।।३०।।

ॐ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुःपुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः स्वाहा।।३१।।

ॐ जज्वलश्चाग्नयःशान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः।।ॐ।।३२।।

(इन्द्र जौ, कमल गट्ठा, वट पत्र में रखकर आहुति दें)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै
सिंहासनाधिष्ठात्र्यै शूलधारिणी देव्यै नमः स्वाहा।।३३।।

(कस्तूरी की आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्यै
शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः।।१०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकादशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

(एकादशवे अध्याय में प्रथम से २८ वे मंत्र तक खीर तथा यवागू (हलुआ) की आहुति दें)

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट लाभाद् विकाशिवक्त्राब्ज विकाशिताशाः स्वाहा ।।२।।

ॐ देवि प्रपन्नातिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य स्वाहा।।३।।

ॐ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये स्वाहा ।।४।।

ॐ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः स्वाहा ।।५।।

(केवल पाँचवे मंत्र में बिजौरा नीबू की आहुति)

ॐ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्ति स्वाहा ।।६।।

ॐ सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः स्वाहा ।।७।।

ॐ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा ।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा ।।९।।

ॐ सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा ।।१०।।

ॐ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा ।।११।।

ॐ शरणागत दीनार्त परित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणी नमोऽस्तु ते स्वाहा।।१२।।

ॐ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणी रूप धारिणी।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा ।।१३।।

ॐ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।१४।।

ॐ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।१५।।

ॐ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग गृहीतपरमायुधे।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नामोऽस्तु ते स्वाहा।।१६।।

ॐ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृत वसुंधरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।१७।।

ॐ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽतु ते स्वाहा।।१८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।१९।।

ॐ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।२०।।

ॐ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।२१।।

ॐ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।२२।।

ॐ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।२३।।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।२४।।

ॐ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।२५।।

ॐ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते स्वाहा।।२६।।

ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव स्वाहा।।२७।।

ॐ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् स्वाहा।।२८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति स्वाहा।।२९।।

(गिलोय की आहुति)

ॐ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या स्वाहा।।३०।।

ॐ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् स्वाहा।।३१।।

ॐ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् स्वाहा।।३२।।

ॐ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः स्वाहा।।३३।।

ॐ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान स्वाहा।।३४।।

ॐ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव स्वाहा।।३५।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।३६।।

ॐ वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् स्वाहा।।३७।।

ॐ ह्रीं देवा ऊचुः स्वाहा।।३८।।

ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् स्वाहा।।३९।।

(कालीमिर्च की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।४०।।

ॐ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ स्वाहा।।४१।।

(सरसों की आहुति)

ॐ नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी स्वाहा।।४२।।

ॐ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् स्वाहा।।४३।।

ॐ भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः स्वाहा।।४४।।

(अनार या अनार पुष्प की आहुति)

ॐ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् स्वाहा।।४५।।

(मंजीठ की आहुति)

ॐ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा स्वाहा।।४६।।

(नारंगी की आहुति)

ॐ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः स्वाहा।।४७।।

(कमलगट्ठा की आहुति)

ॐ ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः स्वाहा।।४८।।

(पालक की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् स्वाहा।।४९।।

(पालक की आहुति)

ॐ दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले स्वाहा।।५०।।

ॐ रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः स्वाहा।।५१।।

ॐ भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति स्वाहा।।५२।।

ॐ तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् स्वाहा।।५३।।

ॐ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति स्वाहा।।५४।।

(काली मिर्च की आहुति)

ॐ तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम्।।ॐ।।५५।।

(सरसों की आहुति)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै
सायुधायै सवाहनायै नाराण्यै देव्यै नमः स्वाहा।।५६।।

(खीर-घृत की आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः।।११।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वादशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।१।।

ॐ एभि स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् स्वाहा ।।२।।

(अगरु की आहुति)

ॐ मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः स्वाहा।।३।।

ॐ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् स्वाहा ।।४।।

ॐ न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् स्वाहा ।।५।।

ॐ शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति स्वाहा ।।६।।

ॐ तस्मान्ममैतन्माहात्म्ये पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदां भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् स्वाहा ।।७।।

ॐ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम् स्वाहा ।।८।।

ॐ यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् स्वाहा ।।९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च स्वाहा ।।१०।।

(पेड़ा या पेठा की आहुति)

ॐ जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् स्वाहा ।।११।।

ॐ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः स्वाहा।।१२।।

ॐ सर्बाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः स्वाहा ।।१३।।

(छोटी इलायची की आहुतिं)

ॐ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् स्वाहा।।१४।।

ॐ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् स्वाहा।।१५।।

ॐ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शन।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शुणुयान्मम् स्वाहा।।१६।।

ॐ उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते स्वाहा।।१७।।

(भोजपत्र की आहुति)

ॐ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् स्वाहा।।१८।।

ॐ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् स्वाहा।।१९।।

ॐ सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमः स्वाहा।।२०।।

(लौंग, बिजौरा नीबू की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या स्वाहा।।२१।।

ॐ प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति स्वाहा।।२२।।

ॐ रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् स्वाहा।।२३।।

ॐ तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः स्वाहा।।२४।।

ॐ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः स्वाहा।।२५।।

ॐ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः स्वाहा।।२६।।

ॐ राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे स्वाहा।।२७।।

ॐ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु धोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा स्वाहा।।२८।।

ॐ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा स्वाहा।।२९।।

ॐ दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम् स्वाहा।।३०।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।३१।।

ॐ इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा स्वाहा।।३२।।

ॐ पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा स्वाहा।।३३।।

(सर्वोषधि की आहुति)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि स्वाहा।।३४।।

ॐ जमद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः स्वाहा।।३५।।

ॐ एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् स्वाहा।।३६।।

ॐ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति स्वाहा।।३७।।

ॐ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया स्वाहा।।३८।।

ॐ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी स्वाहा।।३९।।

(अनार की आहुति)

ॐ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते स्वाहा।।४०।।

ॐ स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गति शुभाम्।।ॐ।।४१।।

(कमल पुष्प की आहुति)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै
बालायै त्रिपुरसुन्दर्यै नमः स्वाहा।।४२।।

(अगर, केशर-कस्तूरी-पुष्प की आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्यै
फलस्तुतिनाम द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रयोदशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच स्वाहा।।१।।

ॐ एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् स्वाहा ।।२।।
ॐ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः स्वाहा।।३।।
ॐ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् स्वाहा ।।४।।
ॐ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा स्वाहा ।।५।।

ॐ ह्रीं मार्कण्डेय उवाच स्वाहा ।।६।।

ॐ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः स्वाहा ।।७।।
ॐ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च स्वाहा ।।८।।
ॐ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः स्वाहा ।।९।।
ॐ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् स्वाहा ।।१०।।
ॐ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ स्वाहा ।।११।।
ॐ ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः स्वाहा।।१२।।

(गुडहल के पुष्प की आहुति)

ॐ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका स्वाहा ।।१३।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।१४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् स्वाहा।।१५।।

ॐ ह्रीं मार्कण्डेय उवाच स्वाहा।।१६।।

ॐ ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् स्वाहा।।१७।।

(काली मिर्च की आहुति)

ॐ सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् स्वाहा।।१८।।

ॐ ह्रीं देव्युवाच स्वाहा।।१९।।

ॐ स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् स्वाहा।।२०।।
ॐ हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति स्वाहा।।२१।।
ॐ मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः स्वाहा।।२२।।
ॐ सावार्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि मविष्यतिः स्वाहा।।२३।।
ॐ वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः स्वाहा।।२४।।
ॐ तं प्रयच्छामि ससिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति स्वाहा।।२५।।

ॐ ह्रीं मार्कण्डेय उवाच स्वाहा।।२६।।

ॐ इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् स्वाहा।।२७।।
ॐ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः स्वाहा।।२८।।
ॐ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः स्वाहा।। क्लीं ॐ।।२९।।

(पान-सुपारी की आहुति)

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै
श्रीयै त्रिपुरसुन्दर्यै वैष्णवै देव्यै नमः स्वाहा।।३०।।

(श्वेत तिल-केशर-कपूर की आहुति दें)

जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्यै
सुरथ-वैश्ययोर्वरपदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॐ तत् सत्।।१३।।

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६- श्री दुर्गाजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव जी।।१।। जय अम्बे०
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना चन्द्रवदन नीको।।२।। जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै।।३।। जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःखहारी।।४।। जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती।।५।। जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती।।६।। जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीनकरे।।७।। जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।८।। जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैंरों।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।।९।। जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पति करता।।१०।। जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी।।११।। जय अम्बे०
कंचनं थाल विराजत अगर कपूर वाती।
श्री मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती।।१२।। जय अम्बे०
श्री अम्बेजी की आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावै।।१३।। जय अम्बे०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकादश अध्याय

हवनोपरान्त अनिवार्य कर्म-विधान

[इस अध्याय में प्रत्येक प्रकार के हवन के बाद किये जाने वाले कर्मों का विधान दिया गया है। प्रत्येक देवी-देवता के हवन में मंत्र-आहुतियों के पश्चात् जो कर्म अनिवार्य रूप से किये जाते हैं; यहाँ उनका क्रम पूर्वक विवेचन है। अतः इस ग्रंथ का यह अध्याय यज्ञान्त-कर्मों के विषय में है।]

१- दशदिक्पाल-बलिदान

[दधि-मांस (दही और उड़द के बड़े) सहित दस दौने (ढाक-पत्र-सम्पुट) सिंदूर आदि डालकर दीपों के साथ तैयार करें और यज्ञवेदी की दसों दिशाओं में समर्पित करें।] मंत्र निम्न प्रकार बोलें -

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा, दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा, प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यैदिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा अधो दिशेस्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा।।

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि। भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः! स्वां स्वां दिशं रक्षता बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः, वरदाःभवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादयो-दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।। यजमान जल लेकर पृथ्वी पर छोड़ दे।

२- नवग्रहबलिदानम्

[दधि-मांस (दही और उड़द के पिण्ड) तथा दीप सहित नौ ढाक के पत्तों पर बलि तैयार करके नवग्रहों को दें। बलि में सिन्दूर लगा दें।]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो वयन्तो पिप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्य सपिरवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादिपञ्चलोकपालेभ्यः एतान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो भो सूर्यादिनवग्रहाः ! साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादिपञ्चलोकपालाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत।

यजमान हाथ में जल लेकर यह वाक्य कहे- **अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्।।** जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

३- क्षेत्रपालबलिदानम्

होता आचार्य भूमि में क्षेत्रपाल देवताओं की महाबलि (सदीप दधिमासादि एक महापात्र में लेकर) निम्न दो वाक्यों का उच्चरण करके यजमान से प्रदान कराएँ-

ॐ सर्वभूतेभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः।

यजमान के दाहिने हाथ में जल और अक्षत देकर होता निम्न पौराणिक श्लोकों को का उच्चारण करें -

ॐ अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च परिगृह्णन्तु मे बलिम्।।१।।

ईशानोत्तरयोर्मध्ये श्रेत्रपालो महाबलः।
भीमनामा महादंष्ट्रः स च गृह्णातु मे बलिम्।।२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ये केचित्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः।।३।।

होता निम्न मन्त्र वाक्यों का उच्चारण करके सपरिवार वेतालादि, क्षेत्रपालादि समस्त भूतों–परिवारों के लिए यजमान से बलि को समर्पित कराएँ–

ॐ नहि स्पर्शमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

वेतालादिपरिवारयुतक्षेत्रपालादिसर्वभूतेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूतप्रेतपिशाचराक्षसशाकिनीडाकिनीसहितेभ्य इमं बलिं समपर्यामि।

भो!भो! क्षेत्रपालादयः अमुं बलिं गृह्णीत मम यजमानस्य आयुकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवत। अनेन सार्वभौतिकबलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम्।

ॐ बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः।।१।।

असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवा।।२।।

जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।।३।।

जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखवहाः।।४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र।।५।।

होता आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करे- **ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहा पविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहास ँ हानायस्वाहोपस्थिताय स्वाहा ऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।।** यजमान के सिर पर से नाई बलि को घुमाकर नैर्ऋत्यकोण में पड़नेवाले चौराहे पर रखवा दे, फिर पीछे मुड़कर न देखें। यज्ञ स्थल पर वापस आकर अपने हाथ और पैरों को जल से धो लेना चाहिए।

४- पूर्णाहुतिः

[लाल वस्त्र में लपेटे हुए गोले या नारियल को स्त्रुवा पर रखकर यजमान को खड़ा करवाके निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूर्णाहुति प्रदान कराएँ]

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ२।। उदारदुपा ँ शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां मृतस्य नाभिः।।१।। वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्।।२।। चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां२।। आविवेश।।३।। त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्र एक ँ सूर्य एकं जजान वेनादेवक ँ स्वधया निष्टतक्षुः।।४।। एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धाराअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्।।५।। सम्यक् स्त्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः।।६।। सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।७।। अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोअग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः।।८।। कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते।।९।। अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।।१०।। धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिधे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्।।११।। पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।१२।। सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन स्वाहा।।१३।। मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविः ँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।१४।। पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो स्वाहा।।१५।। ॐ इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम।

५- वसोर्धाराहोम

होता निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यज्ञकर्ता से वसोर्धारा कर्म कराएँ -

दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा नानालङ्कारभूषिताः।
वसोर्द्धारा महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुद्धस्फटिकसंकाशा दिव्यायुधकरावृताः।
एकभोगाः साक्षसूत्राः वसोर्द्धारा नता वयम्।।

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।।१।। शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्चा शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य स्वाहा।।२।। ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् मितश्च संमितश्च सभराः।।३।। ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्चधरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारयः ।।४।। ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरेअमित्रश्च गणः।।५।। ईदृक्षास एतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन। मितासश्च संमितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्।।६।। स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।।७।। इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्। एवमिमं यजमानं दैविश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु।।८।। इमर्ठ० स्तनमूर्जस्वन्तं धायापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्समुद्रिय सदनमाविशस्व।।९।। घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्य स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।१०।। वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।ॐ इदमग्नये वैश्वानराय न मम।

६- यज्ञोपरान्त यज्ञदेवताप्रदक्षिणा

होता निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से यज्ञदेवता की प्रदक्षिणा कराएँ -

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।। यानि कानि च पापानिजन्मान्तर कृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

७- त्र्यायुषकरणम्

होता हवनकुण्ड से स्रुवे के द्वारा भस्म लेकर यजमान के मस्तकादि अंगों में निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके धारण कराएँ -

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः-ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्-ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्-दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्-हृदि।

तदनन्तर आचमन तथा प्रणीता-जल से मस्तक पर मार्जन कर हाथ में पहनी हुई कुश-पवित्री को अग्निकुंड में छोड़ दें।

८- पूर्णपात्रदानम्

संकल्पः- यज्ञकर्ता दक्षिणहस्ते पुष्प-जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय संकल्पं कुर्यात्-कृतस्य अमुखदेवता मखकर्मणः कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं - अथवा- वृषनिष्क्रयसहितं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। यह कहकर यजमान हाथ के जल को भूमि में छोड़ दे और **ब्रह्मा नामक आचार्य ॐ स्वस्ति।** कहकर दक्षिणा सहित पूर्णपात्र ग्रहण कर ले।

९- बर्हिहोम

(कुशकण्डिका विसर्जन)

ईशानकोण में या अग्नि कोण के पीछे प्रणीतापात्र को उलटकर प्रणीता की उपनयन कुशाओं द्वारा होतादि, यजमान के मस्तक पर कर्मपात्र से जल छिड़के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और यह मंत्र कहे- '**ॐ आपः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृणवन्तु भेषजम्।।**' (वेदी के चारों ओर बिछी हुई कुशाओं को आचार्य एकत्रित कर उसमें घृत लगाए और यजमान को खड़ा करवाकर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर उन कुशाओं को अग्नि में छोड़वा दे।)

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित।
मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा।।

१०- यजमानस्य अभभृतस्नान (यज्ञान्त स्नान)

किसी बड़े पात्र में प्रधानकलश और पुण्याहवाचन (कर्मपात्र) के कलश से जल लेकर होता यजमान के वामभाग में उसकी धर्मपत्नी को बैठाकर निम्न मन्त्रों का उच्चारण कर यजमान के सिर पर दूर्वा और पञ्चपल्लव के द्वारा जल छिड़कें। इसी को यज्ञान्त-स्नान कहते हैं।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।।१।। जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः।।२।। आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।।३।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।४।। तस्मा अ रंग माम व यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।५।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।६।। यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।७।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।८।। आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णयम्। भवा वाजस्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संग थे।।९।। पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।१०।। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।।११।।

११- ब्राह्मणभोजनसंकल्प

यजमान दक्षिणहस्ते पुष्प-जलऽक्षत- द्रव्यं चादाय संकल्पं कुर्यात्-कृतस्य अमुक देवी वा देवता मखकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं अन्न-जलदानार्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। इति भूमौ जलं क्षिपेत्। (ब्राह्मणों को भोजन कराकर; वस्त्र, पात्र, दक्षिणादि दान में दें।)

१२- पीठदेवता विसर्जन-कर्म

ब्रह्मा, होता आदि सभी आचार्य मिलकर निम्न मन्त्रों और श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से पीठों पर स्थापित देवताओं पर अक्षत छिड़कवाकर विसर्जन कराएँ- **ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवस्यन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा।।१।। ॐ यज्ञ गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा।।२।। ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहान्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देव ँ सवितारं गच्छ स्वहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहा ऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दा ँ सि गच्छ स्वाहा द्या वा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा। मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमौ गच्छ तु स्वज्योंतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा।।३।।**

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा-होतादि आचार्यगण निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से सभी पीठों के देवताओं का जिसर्जन कराएँ -

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ ! स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र शिवादयो देवास्तत्र गच्छ गणेश्वर!।। (प्रथम पीठ)

इसी प्रकार सभी पीठों के देवताओं का नाम लेकर क्रमशः पीठ-विसर्जन करें। आचार्यगण इस वाक्य का उच्चारण यजमान से कराएँ-

अनेन यथाशक्तिकृतेन अमुक देवता यज्ञ कर्मणा श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।।

उपरोक्त वाक्य का उच्चारण कर इस कर्म को ईश्वर को अर्पित कर यजमान निम्न वाक्य का तीन बार उच्चारण करें-

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुण्डसिद्धि-हस्तादिमानम्

ह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१६
अं.	२४	३४	४१	४८	५३	५८	६३	६७	७२	७५	९६
य.	०	०	५	०	५	६	४	७	०	७	०
यू.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चतुरस्रकुण्डस्वरूपम्

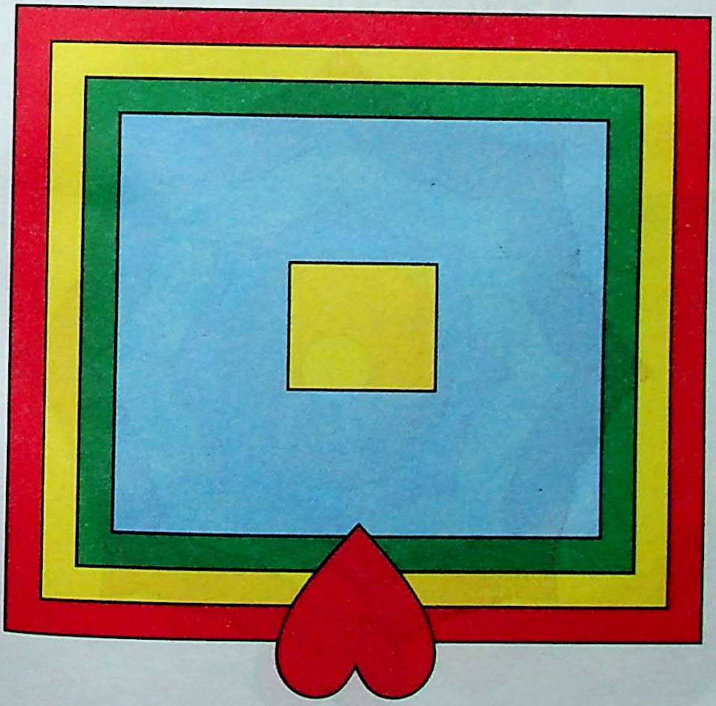

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पद्मकुण्डस्वरूपम् - १

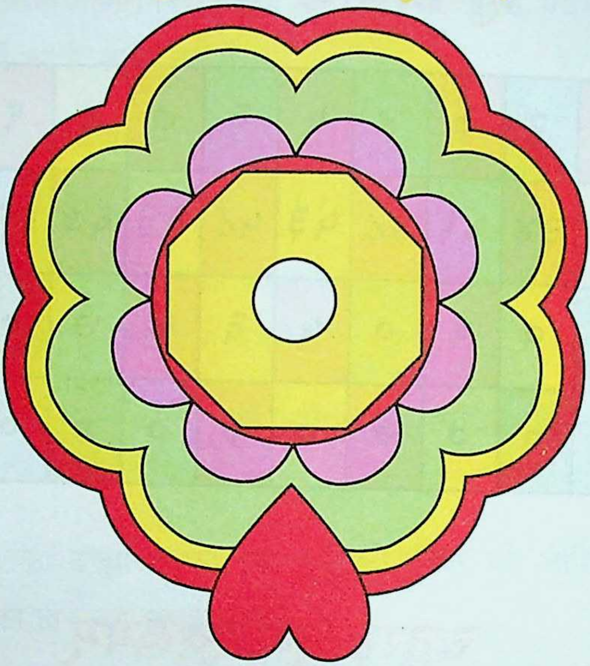

पद्मकुण्डस्वरूपम् - २

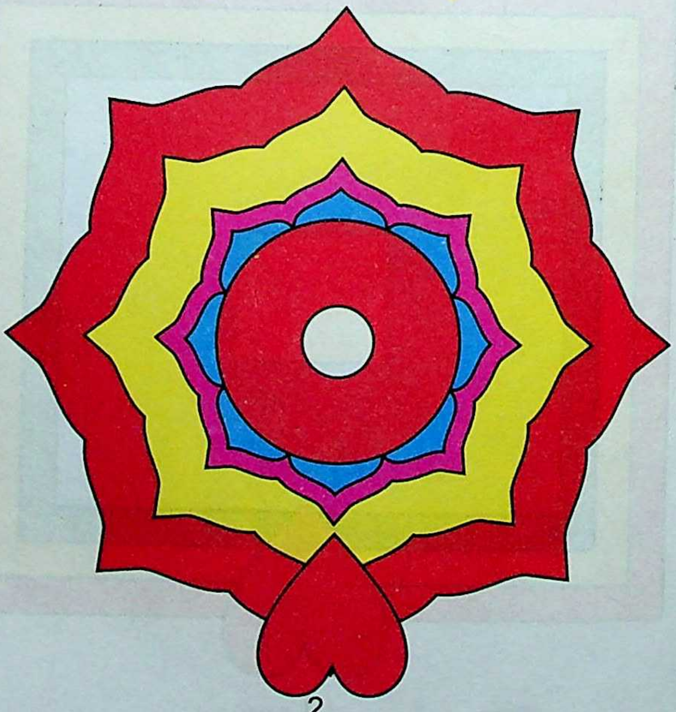

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योनिकुण्डस्वरूपम्

अर्द्धचन्द्रकुण्डस्वरूपम्

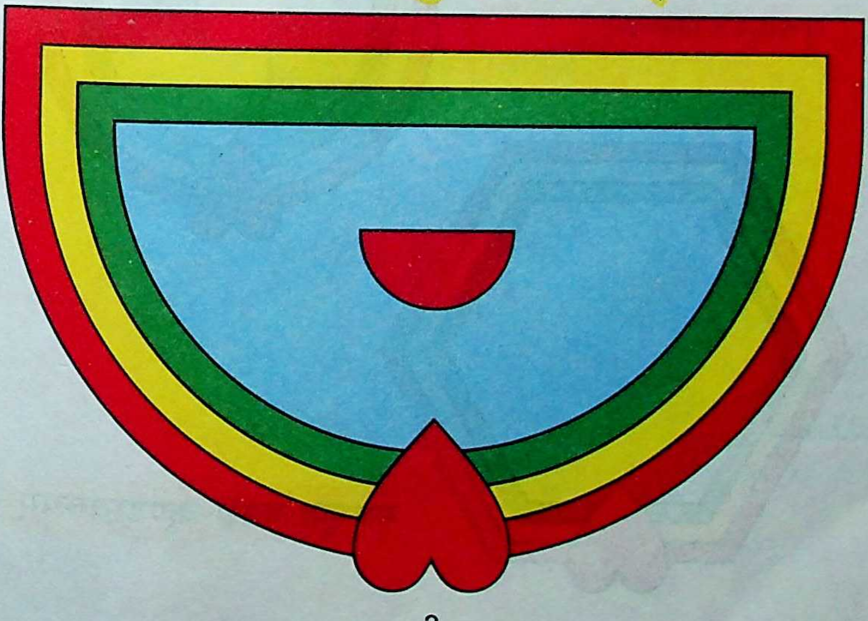

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

30/11/2024 for Scanning

विषम-षडस्र-कुण्डस्वरूपम्

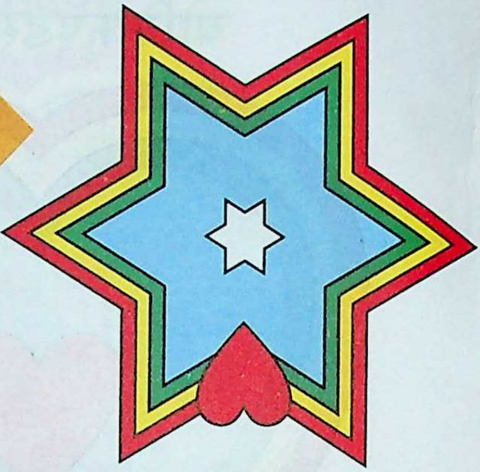

त्रिकोणकुण्डस्वरूपम्

वृत्तकुण्डस्वरूपम्

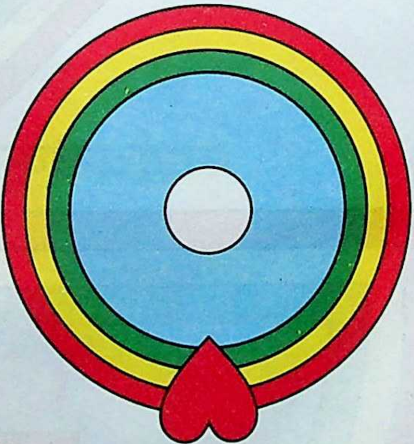

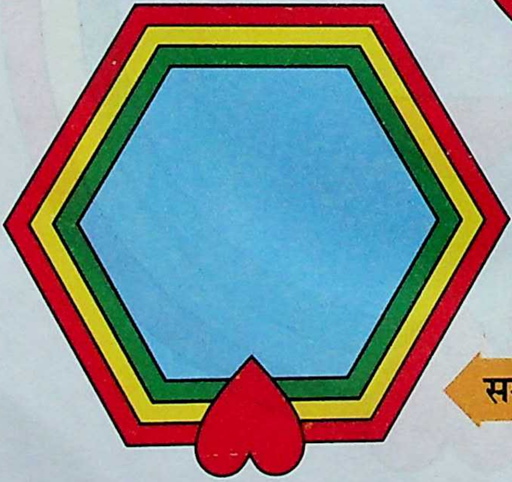

समभुज-षडस्र-कुण्डस्वरूपम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विष्णु-विमल पब्लिकेशंस

वृन्दावन के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

(पुस्तकों का विशाल शोरूम)

परिक्रमा मार्ग, आनंद वाटिका मोड पर, रमणरेती, वृन्दावन (मथुरा)

फोन : 09458512100, 9756362761

'भजगोविन्दम्' रचना हिन्दू सनातन धर्म में मान्य तत्त्व के विषय में लिखी गयी है।
मूल्य 25/-, पृष्ठ 156
आकर्षक पेपर बैक संस्करण

'गीतगोविन्दम्' पुस्तक श्रीमद्भागवत् कथाओं में गाये जाने वाले गीतों का संग्रह है
मूल्य 25/-, पृष्ठ 72
आकर्षक पेपर बैक संस्करण

'मृत्यु पार के रहस्य' ग्रंथ मृत्यु के स्वरूप को समझाने वाली अद्वितीय पुस्तक है।
मूल्य 40/-, पृष्ठ 152
आकर्षक पेपर बैक संस्करण

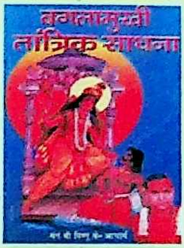

'बगलामुखी तांत्रिक साधना' बगला तंत्र की सुप्रसिद्ध रचना है।
मूल्य 20/-, पृष्ठ 112
आकर्षक पेपर बैक संस्करण

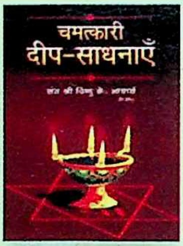

'चमत्कारी दीप साधनाएँ' मनुष्यों को समस्त वांछित भोगों को प्रदान कराने वाली दीप साधनाओं की पुस्तक है।
मूल्य 100/-, पृष्ठ 128
आकर्षक मजबूत जिल्द

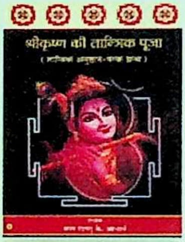

'श्रीकृष्ण की तांत्रिक पूजा' विष्णु के. आचार्य की श्रीकृष्ण तंत्र पर प्रथम पुस्तक है।
मूल्य 250/- पृष्ठ 250
पट्ठे की आकर्षक जिल्द

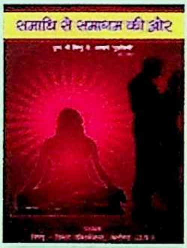

यह जीवन में काम (सेक्स) की प्रमाणिकता को सिद्ध करने वाली कालजयी रचना है।
मूल्य 250/- (पेपर बैक), 300/- (सजिल्द)
पृष्ठ 176, दोनों संस्करण उपलब्ध

'भागवत कथा में पीठ-पूजा-विधान' पुस्तक भागवत सप्ताह में होने वाले समस्त पूजा विधान पर लिखी गयी पुस्तक है।
मूल्य 160/- मोटा टाइप
(पेपर बैक) संस्करण, पृष्ठ 160

'मधुर वचन हीरों से अनमोल' डा० विष्णु के० अचार्य द्वारा रचित जीवन उपयोगी ग्रंथ है।
मूल्य 60/-, पृष्ठ 160 (पेपर बैक)

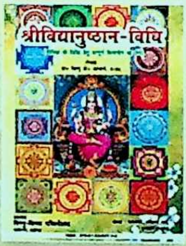

'श्री विद्या' की सिद्धि के लिए लिखी गयी यह सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसमें धन प्राप्ति के अनेक, सरल उपाय भी लिखे गये हैं।
मूल्य 160/-, पृष्ठ 160
(आकर्षक पेपर बैक)

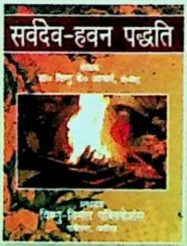

'सर्वदेव हवन पद्धति' वैदिक व सनातन पद्धति से होने वाले सभी देवी देवताओं के यज्ञ-विधान पर लिखी गयी है।
मोटा टाइप है।
मूल्य 160/-, पृष्ठ 160
(पेपर बैक संस्करण)

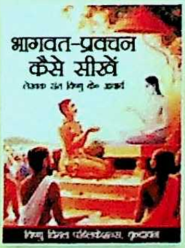

यह पुस्तक भागवत कथा-प्रवचन सीखने हेतु अच्छी पुस्तक है।
मूल्य 160/-, पृष्ठ 160
(पेपर बैक आकर्षक संस्करण)

हमारे यहाँ गीता प्रेस, गोरखपुर एवं अन्य सभी प्रकाशकों की धार्मिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
बड़ी संख्या में दान हेतु तथा वितरण के लिए न्यूनतम मूल्य पर पुस्तकें उपलब्ध हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh